विचार दृष्टि

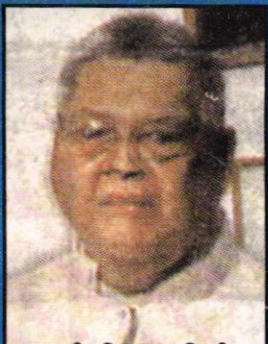
बदरी विशाल पित्ती

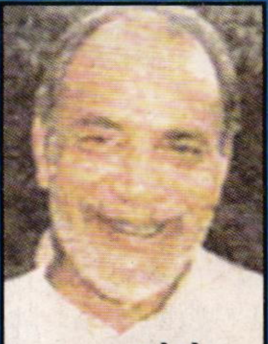
रामकृष्ण हेगड़े

वर्ष : 6 | अंक : 19 | अप्रैल-जून 2004 | 15 रुपए

सुरैया

चुनाव की चुनौतियाँ

मुद्दों की तलाश : अयोध्या विवाद

14वीं लोकसभा : किसे वोट दें

निराला का क्रांतिकारी तेवर

नया भारत : नया सवेरा

जातीय नैया की पतवार चुनाव पर सवार

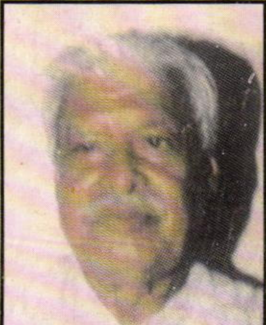
'लमगोड़ा' जी

Solutions Point

SOLUTIONS IN:

- Computer Assembling
- Maintenance
- Laptop Repair
- AMC
- Netowrking
- Web & Graphics Designing
- Software Development

SOLUTIONS POINT
Making IT easy

SAMSUNG DIGITall
Everyone's Invited™

intel®
TDK®
mantra Online
SONY®
TOSHIBA
PIONEER®
COMPAQ
IBM
intel inside pentium® 4 PROCESSOR
Canon®
hp HEWLETT PACKARD

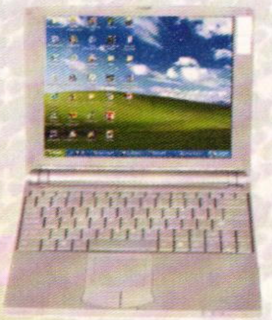

Franchise enquiry solicited from all over India

Contact: Mr Sudhir Ranjan

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92
Tel/Fax : 011-22059410, 22530652
Mobile : 9811281443, 9899237803
E-mail : Solutionspoint@hotmail.com

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-6 अप्रैल-जून, 2004 अंक-19

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

प्रबंधसंपादक: सुधीर रंजन

सहा.संपादक: मनोज कुमार

संपादनसहायक : अंजलि

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्दसंयोजन: सोलूसंस प्वायंट

(अमित कुमार, अनुज कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

मोबाईल : 9811281443,9899238703

फैक्स: (011)22530652

E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख:

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 28897962

कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676

अहमदाबाद: वीरेंद्र सिंह ठाकुर☎22870167

प्रतिनिधि:

लखनऊ: प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,

ग्वालियर: डॉ. महेन्द्र भटनागर

सतना: डॉ. राम सिया सिंह पटेल

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य: एक प्रति 15 रुपये

द्विवार्षिक: 100 रुपये

आजीवन सदस्य: 1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $3, द्विवार्षिक:US $20,

आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीयपन्ना/2

संपादकीय/3

विचार प्रवाह :

मुद्दों की तलाश: अयोध्या विवाद /5
डॉ मणिशंकर प्रसाद

दृष्टि :

प्रेस की सीमाएं /7
डॉ. रवीन्द्र कुमार वर्मा

साहित्य:

दरार -कहानी-कृष्ण कुमार राय /9

पगली -कहानी-सुधा गुप्ता /12

काव्य कुंज:

गोविन्द शर्मा, डॉ.मधु धवन, /15
राम संजीवन शर्मा, डॉ. देवेन्द्र आर्य,
डॉ. भगवत शरण अग्रवाल

ग़ज़ल शिल्प ज्ञान

नासिर अली 'नदीम' /17

चुनाव 2004 :

राजनेता, चुनाव और मतदाता /19
सिद्धेश्वर

नया भारत: नया सवेरा /21
डॉ. देवेन्द्र आर्य

आडवाणी की भारत उदय यात्रा /23

14वीं लोकसभा: किसे वोट दें /26
यू. सी. अग्रवाल

जातीय नैया की पतवार चुनाव पर सवार/28
उदित राज

अभिनेता से नेता बनने की चाहत /31

तीसरे विकल्प की ऐतिहासिक परंपरा /32
मस्तरामकपूर

शख्सियत:

निराला का क्रांतिकारी तेवर
डॉ. चंद्रिका ठाकुर /34

सेहत-सलाह:

कैंसर को रोकना संभव /37

महिलाओं के कंडोम /37

समीक्षा:

'तरंगिणी' के तट पर /38
प्रो. दीनानाथ 'शरण'

आओ, दीवारों के घेरों........ /39
डॉ. ऋषभदेव शर्मा

समाज:

सदा सुखी रहो- डॉ. मधु धवन /42

गतिविधियाँ:

मंच द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के लिए
रचनाएँ आमंत्रित /44

आदमीकीतलाशमेंरेणुकीकथाएँ/46

सम्मान:

साहित्य अकादमी पुरस्कार सम्मान /49

संस्मरण :

सत्यदेवनारायणक़लमसेसाहित्यकार/52

श्रद्धांजलि:

नाटककार बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा' /53
सिद्धेश्वर

प्रखर राजनेता हेगड़े का निधन /54

समाजवादीनेताबदरीविशालकादेहावसान/54

खामोश हुई सुरैया की आवाज /54

चुनाव 2004

लोकसभा

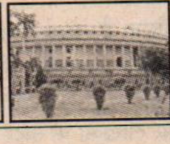

समान

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो० धर्मेंद्र नाथ 'अमन'❑डॉ० एल. एन. शर्मा

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

टिप्पणी से रचना जीवंत

'विचार दृष्टि' *का अंक-18 यथासमय प्राप्त हो गया था। हार्दिक धन्यवाद। उक्त अंक में प्रकाशित मेरी स्केच-कथा के आरंभ में आप द्वारा लिखी गई महत्वपूर्ण टिप्पणी ने रचना को और जीवंत बना दिया है, उसके लिए मैं आभारी हूँ।*

-कृष्ण कुमार राय, वाराणसी

आलेख सारगर्भित

पूर्व की भांति इस बार का भी अंक काफी सुरूचिपूर्ण व रोचक लगा। अंक 18 को आपने बच्चों पर केंद्रित कर अच्छा कार्य किया है। आवरण पृष्ठ भी नयनाभिराम है। इसके साथ ही बच्चों के विकास में बाल साहित्य..., बाल अधिकार, ऐसे सिखाइए अपने बच्चों को आलेख सारगर्भित हैं। राजनीतिक नजरिया के अंतर्गत-लोकतंत्र का बदलता स्वरूप एवं भारतीय राजनीति पर नैतिक संकट आलेख सामयिक व विचारोत्तेजक लगा। अन्य सामग्रियां भी ठीक है। पत्रिका आगे बढ़े यही शुभकामना है।

नरेन्द्र कुमार सिंह, बेगुसराय

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें--

पाठकीयपन्ना, 'विचारदृष्टि' यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

रंगारंग पत्रिका

विचार के विभिन्न रंगों में रंगा-रंगारंग पत्रिका ने मन मोह लिया। पत्रिका नामी गिरामी पत्रिकाओं से आगे निकलती चली जा रही है। यदि इसके विकास की यही तीव्र गति रही और आप जैसे सिद्ध विचारक, समाज-सुधारक तथा साहित्यिक विचारधारा वाले ऊर्जावान पुरुष का संकल्प मिलता रहा तो निस्संदेह यह सिर्फ अपने देश के ही मानचित्र पर नहीं, विदेशों में भी अपने मान-मर्यादा का झंडा खड़ा कर सकती है।

-सतीश प्रसाद सिन्हा, पटना

वैचारिक क्रांति से समाज परिवर्तन

देश का भविष्य बच्चों को कहा जाता है। बच्चों में बौद्धिक क्षमता बढ़ाने एवं उनके स्वस्थ मस्तिष्क में वैचारिक ज्ञान का संचार करने के लिए बाल साहित्य की सार्थकता महत्वपूर्ण है।

साहित्य के स्वर्णिम इतिहास में 'विचार दृष्टि' ने पाँच वर्षों का सफलतापूर्वक सफर तय किया है जिसकी सहभागिता में संपादक महोदय ने लेखकों को विशेष स्थान देकर उन्हें सम्मानित किया है। आज के संदर्भ में यह आवश्यक है कि वैचारिक क्रांति के माध्यम से ही हम समाज में परिवर्तन कर सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं।

-पप्पू कतिया, होशंगाबाद

एक संपूर्ण पत्रिका

सज-धज कर नियमित प्रकाशन इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता है जिससे संपादक-प्रकाशक की सजगता और तत्परता तो झलकती ही है, साथ ही साहित्य और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का भी एहसास होता है। बचपन को बचाने के सवाल पर अंक- 18 के संपादकीय में बच्चों के सर्वांगीण विकास के कारकों पर संपादक सिद्धेश्वर जी ने जिन सारगर्भित तथ्यों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया तथा डॉ. कलानाथ मिश्र की 'बाल अधिकार' शीर्षक कविता प्रकाशित की है वह प्रशंसनीय है। इसके अतिरिक्त छात्रा अंजलि ने कामकाजी दंपत्ति परिवार में उपेक्षित और प्यार के लिए तरसते बच्चों का जिस ढंग से मार्मिक चित्रण किया है उससे एक ओर जहाँ आज के भौतिकता की अँधी दौड़ में अधिक-से-अधिक पैसा अर्जित करने की लालसा झलकती है वहीं दूसरी ओर लेखिका के अंदर का समाज-सेवाभाव अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है।

'मैं हिंदी बोल रही हूँ' शीर्षक कविता में चेन्नै के डॉ. ए बी साई प्रसाद का अवधी, ब्रज, भोजपुरी तथा भक्तिकाल एवं छायावाद के प्रवर्तकों का रोचक ढंग से चित्रण उनके हिंदी-ज्ञान एवं हिंदी-प्रेम को उजागर करता है। इस प्रकार देखा जाए तो 'विचार दृष्टि' एक संपूर्ण पत्रिका है, जो पठनीय तो है ही संग्रहनीय भी है।

-मनु सिंह, पटना

जरा इनकी भी सुनें

हम सभी विदेशी लेखकों को आग्रह करते हैं कि वे भारत के राष्ट्रीय सम्मान के साथ किसी प्रकार का खेल न खेलें।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी

फिर से सत्ता में आने पर 'हर खेत को पानी और हर हाथ को काम' मिलने का पक्का इंतजाम किया जाएगा।

- उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी

जिन लोगों ने आरएसएस की दोहरी सदस्यता के नाम पर 1979 में जनता पार्टी की सरकार गिराने का काम किया था, वही लोग बीजेपी की सरकार एनडीए के नाम पर चला रहे हैं।

-पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर

जिस पार्टी के पास देश में पैदा होने वाला नेतृत्व देने लायक कोई नहीं मिले, उसे चुनाव मैदान में उतरने का क्या अधिकार है।

-रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडीस

बीजेपी और संघ परिवार को सत्ता में रहने पर न कभी भगवान राम याद आते हैं और अयोध्या का राम मंदिर उन्हें तो बस चुनाव आने पर ही भगवान राम याद आते हैं, या फिर मेरी सरकार बनने पर।

-मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव

भाजपा का मुस्लिम प्रेम महज छलावा है क्योंकि उसका मुस्लिम विरोधी एजेंडा बरकरार है।

-सैयद शहाबुद्धीन

सड़क पर रहने वाले लोग भी इसी देश के अंग हैं, इन्हें भी वही अधिकार दिए जाने चाहिए जो देश के आम नागरिकों को दिए जाते हैं।

-फिल्म अभिनेत्री नंदिता दास

मैंने चुनाव आयोग से अपनी 'फीलगुड पार्टी' को 'मुस्कुराती बिल्ली' या 'मुस्कुराते कुत्ते' का चुनाव चिन्ह देने की सिफारिश की। हमने किसी भी ऐसी पार्टी से गठबंधन करने का प्रयास किया जिसकी कोई विचार धारा न हो।

- जसपाल भटट्री

मौजूदा चुनाव की चुनौतियाँ

चौवनवर्षकेभारतीयगणतंत्रमेंचौथीबारकिसीसरकारनेअपनाकार्यकालशेषरहतेहुएभीसमयसेलगभगआठमाहपूर्व लोकसभा भंग करवाकर चुनाव में जाने का फैसला किया है। 13वीं लोकसभा का गठन 13 अक्टूबर 1994 को हुआ था। राष्ट्रपति ने केंद्रिय मंत्रिमंडल की सिफारिश पर 7 फरवरी को लोकसभा भंग करने की अधिसूचना संविधान के अनुच्छेद 85(2) की उपधारा-दो के तहत जारी की और इस प्रकार लोकसभा के 543 सदस्यों के चुनाव के लए मार्ग प्रशस्त हुआ।

यह बात किसी से छिपी नहीं रह गयी है कि पिछले दिनों मध्यप्रदेश, छतीसगढ़ तथा राजस्थान विधानसभा चुनावों में अपनी भारी सफलता, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 8.4 प्रतिशत होने और विदेशी मुद्रा भंडार की रिकार्ड 106 अरब डॉलर तक पहुँचने के चलते भाजपा में आत्मविश्वास बढ़ा और उसने लोकसभा चुनाव का निर्णय आर्थिक 'फील गुड फैक्टर' के नारे के साथ लिया। यह तीसरी बार है जब भाजपा नीत सरकार पाँच वर्षों का अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर कुल चार साल चार महीने सत्ता में रहने पर ही चुनाव में जाने का फैसला किया। इसके पूर्व यह सरकार क्रमश: तेरह महीने और तेरह दिन ही सत्ता का सुख ले पाई थी।

इस संदर्भ में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब राजग सरकार सुचारू ढंग से चल रही थी और भाजपा के अनुसार सरकार ने अच्छी खासी उपलब्धियाँ हासिल कीं तो फिर देश पर अचानक चुनाव आठ माह पूर्व ही क्यों थोप दिया गया? क्या इससे देश की आर्थिक क्षति नहीं हुई? चुनाव कराने के पीछे की राजनीतिक दाँव-पेंच की जितनी समझ राजनीतिकों को है उससे कम जनता को भी नहीं। दरअसल सत्ता अब सेवा के लिए न होकर सुविधाएँ भोगने के लिए हो गई है। आखिर तभी तो 6 फरवरी को लोकसभा भंग होने पर भी सांसदों की गुहार पर उन्हें सारी सुविधाएँ बरकरार रखी गई।

इसके अतिरिक्त आपने देखा नहीं लोकतंत्र के द्वार पर चुनावी दस्तक होते ही मतदाओं को सत्तारूढ़ दल की ओर से रिझाने का तानाबाना शुरू हो गया और आवश्यकता से अधिक ढेरों सारी लोक लुभावन घोषणाएँ की गईं और हर तबके के लोगों को रेवड़ियाँ बाँटी गई। कुछ वस्तुओं के सीमा और उत्पाद शुल्क में कटौती से प्रारंभ केंद्र सरकार ने यह अभियान लगातार जारी रखा। उसने आगामी चुनावों में जीत हासिल करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रखी। इस प्रकार की लोकलुभावन घोषणाएँ करते वक्त उसे इस बात की कोई परवाह नहीं रही कि इससे सरकारी खजाने पर कितना बोझ बढ़ गया। सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि यह सब करने का बोध सरकार को चुनाव नजदीक आने पर ही हुआ। यह इस बात का संकेत देती है कि उन्हें आम आदमी की चिंता तभी सताती है जब चुनाव सिर पर आ जाते हैं। इसे चुनावी राजनीति से प्रेरित नहीं तो और क्या कहा जाएगा? सत्तारूढ़ दल के लोगों की यह समझदारी कि उसकी राहतकारी घोषणाओं और विभिन्न विकास योजनाओं के शिलान्यास से मतदाता उसके प्रति मुग्ध हो जाएँगे तो यह उसकी गलतफहमी है। मतदाता तभी प्रभावित होंगे जब उसे उन योजनाओं का वास्तव में लाभ मिलेगा। इस संदर्भ में सरकार को यह ध्यान रखना चाहिए था कि हर चीज की एक सीमा होती है। आवश्यकता से अधिक लोक-लुभावन और सस्ती लोकप्रियता पानेवाली घोषणाएँ कभी-कभी मतदाताओं पर विपरीत प्रभाव भी डाल सकती हैं, क्योंकि मतदाताओं की दिशा को समझ पाना आसान बात नहीं। मतदाता किस दिन किस करवट लेगा यह कहना सर्वथा मुश्किल होता है। मतदाता अभी खामोश है। राजनीतिज्ञों के तेवर एवं बनते-बिगड़ते समीकरणें पर नजर गड़ाए रखता है और साथ ही उनके कार्यों का लेखा-जोखा भी मन ही मन करते रहता है।

इस संदर्भ में एक और बात काबिलेगौर रहा कि लोकसभा चुनाव के निकट आते ही राजनीतिक उठापटक और जोड़-तोड़ की कवायद शुरू हो गई। सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता के नारे फिर से दिए गए और जिन दलों और नेताओं के विचार पिछले कई दशक से आपस में नहीं मिले वह भी कुर्सी की राजनीति में समान विचार रखने का दावा कर एक जुट हो गए। कल के जो शत्रु थे वे गले मिले और जो मित्र थे वे दूर हो गए। अपने पूर्व में प्रयुक्त किए हुए वाक्यों से पीछा छुड़ाकर गिरगिट को भी इन दलों व नेताओं ने मात कर दिया। सारे फासले मिट गए। सारे शिकवे दूर हो गए। हाल ही में राजग से छिटका द्रमुक काँग्रेस का दामन थाम लिया। यह काँग्रेस ही थी, जिसने जैन समिति की रिपोर्ट में राजीव गाँधी की हत्या की साजिश की सूई द्रमुक की ओर घुमाने पर आई० के० गुजराल की सरकार को चलता कर दिया था। शरद पवार ने काँग्रेस से निकलकर राष्ट्रीय काँग्रेस पार्टी सिर्फ इसलिए बनाई थी, क्योंकि उन्हें प्रधानमंत्री पद पर विदेशी मूल की सोनिया गाँधी स्वीकार्य नहीं थीं। लेकिन चुनाव की आहट मिलते ही उन्होंने सोनिया का पल्लू यह कहते हुए थाम लिया कि उन्हें सांप्रदायिकता से लड़ना है। इसी प्रकार भाजपा सरकार को गिरानेवाली तामिलनाडु की अम्मा जयललिता ने कुर्सी पाने के लिए पुन: भाजपा से गलवाहीं कर ली।

दरअसल सांप्रदायिकता एक ऐसा मुद्दा है जिसे राजनीतिक पार्टियाँ मनचाहे तरीके से अपनी सुविधानुसार उठाती हैं और छोड़ देती हैं। सांप्रदायिकता से लड़ने के बहाने विरोधी राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव के पूर्व और चुनाव बाद एकजुट होना और कुछ नहीं सिद्धांतहीन राजनीति की पराकाष्ठा ही है। गठबंधन राजनीति के इस दौर में प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने सिद्धांतों और विचारों को तिलांजलि दे दी है। इस देश की जनता इस बात से पूर्णत: अवगत हो चुकी है कि चुनाव बाद राजनीतिक दलों की निष्ठाएँ, सिद्धांत और उनके आदर्श सिर के बल खड़े होते रहे हैं। भारत जैसे बहुलतावादी राष्ट्र में विभिन्न दलों की विचारधाराएँ और उनकी प्राथमिकताएँ स्वाभाविक है। राज्य में सरकारों के गठन में स्थानीय हितों और जरूरतों का हावी होना अलग बात है किंतु केंद्र सरकार के गठन के साथ पूरे राष्ट्र का हित जुड़ा है। इसके रास्ते क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद और जातीय समीकरणों से होकर नहीं गुजरते और यदि गुजरते हैं तो वे देश के हित में घातक सिद्ध होते हैं। लामबंदी के इस दौर में यदि वैचारिक प्रतिवद्धता, आचरण की शुद्धता, घोषणाओं के क्रियान्वयन के लिए संकल्प की दृढ़तायुक्त गठजोड़ से यदि जनता कुछ अपेक्षा करती है तो उसे घोर निराशा इसलिए होगी कि यहाँ तो अभिमन्यु वध और अश्वस्थामा हतो दोनों प्रकार की नीति एक ही खेमे द्वारा अपनायी जा रही है। सिद्धांतहीनता

की इस स्थिति में कहा नहीं जा सकता कि कल कौन कहाँ था, आज कहाँ है और कल कहाँ होगा। यह सोचकर ही जनता उलझन में पड़ेगी। वैसे सच कहा जाए तो पूरे विश्व में ही सिद्धांत और राजनीति में कोई तारतम्य नहीं है, किंतु भारत में बड़ी बुरी स्थिति है, क्योंकि राजनीति का सार तत्व सत्ता ही बनकर रह गई है। इस देश के राजनीतिक कार्यों में यहाँ राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं ने विकारयुक्त रक्त प्रवाहित कर दिया है, जिसके कारण स्वास्थ्य परक कोशिकाएँ विलुप्त हो गए हैं। राजनेताओं और शासकों ने देश के आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक इन सभी अंगों को प्रदूषित कर दिए हैं जिसके चलते लोकतंत्र के समझ चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

इस संबंध में धारदार कलम की मृणाल पाण्डे का यह मानना सही है कि देश की राजनीतिक पार्टियाँ वैचारिकता को नाजायज शिशु की तरह बराबर चहबच्चे में फेंककर मौकापरस्त गठजोड़ साधती देखी गयी हैं। ऐसे स्वार्थपरक गठजोड़ों की आपाधापी ने उस जनता को बार-बार निराश किया है, जो विकास और नई पहलों के लिए कुर्बानी देने को तैयार थी। इसी के चलते माफिया गुटों के खूनी संघर्षों और सांप्रदायिक-जातीय तनावों द्वारा समाज व परिवारों को निगलने लगती है। देश के कई राज्यों में स्त्रियों एवं कमजोर वर्गों के खिलाफ जो हिंसक प्रवृतियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं उसकी भी यही वजह है। इसी का प्रतिफल है कि जनता की प्रतिबद्धताएँ अथवा उसके रूझान पहले की तरह अब नहीं बल्कि राजनेताओं के लिए मौसम की तरह अनिश्चित तथा उनकी पकड़ से बाहर है। नफरत की उत्कट चरम समाधि पर पहुँचकर जनता के लावे कब फट पड़ेंगे कहना मुश्किल है। राजनीति की इसी स्थिति को देखते हुए संभवत: अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा था कि 'यदि कभी उन्मुक्त लोगों या सरकार का पूरी तरह पतन होगा तो वह इनके पद पाने की बेताबी और उसके लिए की जानेवाली जद्दोजहद से होगी। दरअसल इनकी कोशिश बिना कोई श्रम किए पद और रूतबा पाने की रहती है'। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध रचनाकार विलियम शेक्सपियर ने भी एक बार कहा था कि 'एक राजनीतिज्ञ ऐसा व्यक्ति होता है जो भगवान को भी मात दे। राजनेता बनने के लिए किसी नियम या स्थायी अथवा परिवर्तन शर्तों की जरूरत नहीं पड़ती या किसी डिग्री की अनिवार्यता की भी दरकार नहीं होती'।

किसी भी लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रियाओं और राजनेताओं की आलोचना इसलिए होती है, क्योंकि सरकार या तंत्र का वे सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप होते हैं। जहाँ तक भारतीय राजनीति का सवाल है इसमें आज कानून बनानेवाले की जगह कानून तोड़नेवाले प्रवेश कर गए हैं। आखिर तभी तो दिसंबर 2003 में चार राज्यों में संपन्न विधानसभा चुनावों में प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने ऐसे प्रत्याशी चुनावी जंग में खड़े किए जिनके विरूद्ध आपराधिक मामले लंबित थे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मध्य प्रदेश में 153 आपराधिक प्रवृति के खड़े उम्मीदवारों में 43 ने विजय पायी। राजस्थान के विधानसभा के चुनाव मैदान में उतरे 103 अपराधी प्रवृति के प्रत्याशियों में 23 ने जीत हासिल की । छतीसगढ़ में अपराधी प्रवृति के 73उम्मीदवारों में से 11 ने विजय प्राप्त की। इसी प्रकार दिल्ली में 70 में से 25 बाहुबलियों ने विधान सभा में प्रवेश किया।

इस बार के चुनाव में लिंग्दोह फैक्टर की भी कमी खलेगी क्योंकि पिछले छह साल से हर बार चुनावों के समय नेताओं के सिर पर लिंग्दोह किसी भूत की तरह मँडराते रहते थे। पिछले दिनों राजनीति को लाइलाज कैंसर और भारतीय राजनेताओं को 'अशिक्षित' , 'अशिष्ट' और 'ठग' कहकर उन्होंने खुब तालियाँ बटोरी थी। इसके पूर्व चुनाव आयुक्त शेषन ने भी कहा था कि 'मैं हर सुबह राजनीतिक नेताओं का नाश्ता करता हूँ।' समाजवादी नेता राजनारायण ने भी राजनीति को लोकतंत्र के चेहरे पर 'भगंदर' की पदवी देकर भरपूर हंगामा पैदा किया था। भले ही इन टिप्पणियों का राजनीति में सिर्फ 'चटखारा मूल्य' हो मगर ऐसी टिप्पणियों की लोकप्रियता से इनकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वर्तमान भारतीय राजनीति के गर्त और पतन ने आमजन के मन में बहुत ही खराब छवि बनाए रखी है। दंगों घोटालों, भ्रष्टाचार, आतंकवाद क्षेत्रवाद, आपराधिक प्रवृति और काले धन से बजबजाती आज की राजनीति में 'फीलगुड' और 'फीलबैड' के बीच दुविधा और असमंजस में घिरे मतदाता लोकसभा के इस चुनाव में अपनी सूझबूझ का परिचय दें इसके लिए देश के सजग, प्रबुद्ध एवं विचारवान लोंगों को जनमत तैयार करने में अपनी भूमिका निभानी है। ऐसे वक्त में राजनीतिक संचार-प्रक्रिया की भूमिका जनता अथवा मतदाता के मन में छिपी भावनाओं को सक्रिय कर देती है क्योंकि चुनाव के वक्त मीडिया सबसे अधिक संवेदनशील होता है। अपनी निश्पक्षता और तटस्थता के बावजूद पत्रकार, स्तंभकार, चिंतक-विचारक आदि अपने अधिकार को, अपने प्रिय विचार या दल की ओर झुका देते हैं। विश्वास है कि इस बार के चुनाव की देशहित तथा लोकतंत्र के हित में एक बहुत बड़ी अहमियत है। इस ख्याल से मीडिया की भूमिका निर्णायक हो सकती है। प्रबुद्धजन भी अपने राष्ट्रीय कर्तव्य निभाकर लोकतंत्र के पाँचवें प्रहरी के रूप में अपने को सिद्ध कर सकते हैं क्योंकि किसी भी विशाल समाज में लोग व्यक्तिगत रूप से सार्वजनिक जीवन को प्रभावित नहीं कर सकते किंतु दूसरों से मिलकर यह संभव हो सकता है। ऐसे चुनाव के वक्त अच्छे जनप्रतिनिधि को संसद में भेजने के उद्देश्य से अभियान चलाने के लिए समान विचारों और हितों के पक्षधरों को एक साथ मिलना समय का तकाजा है। कारण कि एक ओर जहाँ राजनीतिक पार्टियों की खुली स्पर्धा प्रतिनिधिक लोकतंत्र का अभिन्न अंग है वहीं दूसरी ओर इस लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली की सबसे बड़ी कमजोरी भी है। शासकीय पद की प्राप्ति के लिए खुली स्पर्धा का प्रभाव समाज और राजनीति के लिए विभाजनकारी सिद्ध होता है। स्पर्धा में हिस्सा लेनेवालों का इसमें सबकुछ दांव पर लगा रहता है। इसलिए लोकतंत्र की सुरक्षा तभी संभव है यदि चुनाव में हारनेवाले दलों और उनके समर्थकों को हार की कीमत ऐसी न चुकानी पड़े जो उनके बूते से बाहर हो। वस्तुत: उनमें यह विश्वास कायम रहना चाहिए कि वे अगले चुनाव में अधिक सफलता पा सकेंगे। इस बात का आश्वासन भी उनको रहना चाहिए कि पराजित होने के बाद भी संगठन करने, आंदोलन करने तथा शासन की आलोचना करने के उनके अधिकार यथावत कायम रहेंगे।

मुद्दों की तलाश : अयोध्या विवाद

डॉ० मणि शंकर प्रसाद

अयोध्या विवाद के संबंध में उठाए गए किसी भी प्रश्न का संगत और सार्थक उत्तर किसी के पास नहीं है। हकीकत तो यह है कि अयोध्या विवाद से जुड़े किसी भी पक्ष को इसके समाधान की न तो कोई जल्दबाजी है और न ही आवश्यकता। दिल्ली की सत्ता पर काबिज केंद्र सरकार को अयोध्या विवाद के समाधान में कोई दिलचस्पी नहीं है, और हो भी क्यों ? यह उसके लिए खतरे की घंटी भी बन सकती है। केंद्र सरकार के सबसे बड़े भागीदार भाजपा के लिए यही हितकर है कि द्रौपदी के चीर की तरह यह विवाद जितना लंबा खींचे, उतना ही बेहतर। अयोध्या विवाद भाजपा तथा उसके सहयोगी दलों और संगठनों के लिए उस नशीली दवा की तरह है जिसे हिंदुओं को पिलाकर धर्मांधता की नींद में सुलाया जा सके और उन्हें भावात्मक आवेग में डुबोकर उनके वोटों को थोक भाव से झटक लिया जाए। कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दलों को भी अयोध्या विवाद के तात्कालिक समाधान में कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि वे इसे भाजपा के विरुद्ध एक हथियार के रूप में प्रयोग कर मुस्लिम मतदाताओं की सहानुभूति और समर्थन के हकदार हो सकते हैं। यही कारण है कि गुजरात के विधान सभा चुनाव में अपनायी गयी 'नरम हिंदूवाद' की नीति को तिलांजलि देकर कांग्रेस ने नए तेवर अपनाने की सार्वजनिक घोषणा भी कर डाली है। कांग्रेस के अलावा 'सेकुलरिज्म' का जामा पहने अन्य पार्टियों की प्रतिक्रियाएँ और नीतियाँ समय और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं। कई ऐसी पार्टियाँ हैं जो 'हिंदू विरोध' को ही धर्मनिरपेक्षता की संज्ञा देती हैं, जबकि भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है सर्वधर्म सम्भाव। हिंदू और मुस्लिम समुदाय के कुछ तथाकथित नेता, जिनकी नेतागिरी की रोटी अयोध्या विवाद के चुल्हे पर सिंकती है, वे कदापि नहीं चाहेंगे कि 'चट मंगनी पट ब्याह' के तर्ज पर विवाद का समाधान हो जाए। अयोध्या में बाबरी मस्जिद को लेकर भाजपा ने काफी बबाल मचाया था और जब मस्जिद ढह गयी तो उत्तर प्रदेश में तत्कालीन विधानसभा चुनाव में भाजपा परास्त हो गयी। यह इस बात का संकेत है कि ऐसे विवादों का अंतिम निबटारा चुनावी दृष्टि से पार्टी के हक में नहीं होता है।

जहाँ तक न्यायालय का प्रश्न है यह कहना अनुचित नहीं होगा कि न्यायालय ऊहापोह की स्थिति में है। यह मामला सीधा सपाट वैधानिक मामला नहीं है। सच कहा जाए तो यह मूल रूप से राजनीतिक विवाद है, जिसमें न्यायालय की संलिप्तता के विलंबन का आधार बनाया जा रहा है। क्या इस बात की गारंटी है कि न्यायालय के फैसले को सर्वमान्यता प्राप्त होगी? हिंदू और मुस्लिम के कुछ तथाकथित नेताओं ने अपने विरोधी तेवर उजागर कर वे न्यायालय के फैसले की अवमानना के संकेत भी दे चुके हैं। एक चिंताजनक बात तो यह है कि कुछ हिंदू संतों एवं महंथों तथा मुस्लिम इमामों और उलेमाओं ने इस विवाद के जरिए राजनीति के गलियारे में अपनी पहचान बनाने की कोशिश की है। कुल मिलाकर स्थिति निराशाजनक है, नकारात्मक है।

आगामी लोकसभा चुनाव में मुख्य रूप से भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने होगी। अन्य पार्टियाँ सहयोगी दलों के रूप में ही अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ेंगी। भाजपा के एजेंडे में अयोध्या में राम मदिर का निर्माण प्राथमिकताओं की सूची में सबसे ऊपर है, जिसकी अभिव्यक्ति भाजपा नेता सार्वजनिक रूप से बार-बार करते रहे हैं। स्वयं प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्यक्रमों में इस बात को कहा है, भले ही बाद में वे अपने भाषणों के इन अंशों की व्याख्या बदलते रहे हों। भाजपा के कुछ वरिष्ठ मित्रों ने दो टूक शब्दों में मुझसे कहा कि भारत के बहुसंख्यक हिंदू समुदाय की इच्छा है कि अयोध्या में मदिर बने तो उनकी इच्छा को सम्मान और मान्यता मिलनी चाहिए। साथ ही साथ उन्होंने एक प्रश्न भी टाँक दिया। उन्होंने मुझसे सीधा सवाल किया - 'क्या इस प्रकार के विवादों को पाकिस्तान तथा अन्य इस्लामी देशों में तरजीह दी जाएगी? क्या वहाँ अल्पसंख्यकों को अपने मनोनुकूल स्थलों पर अपने धार्मिक ढाँचे निर्माण करने की अनुमति मिलेगी ?' मैं मानता हूँ कि पाक कट्टरपंथी इस्लामी देश है, जबकि भारत एक उदारवादी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। वहाँ शासन पर सैनिकतंत्र का कब्जा है, जबकि सामाजिक व्यवस्था पर कट्टरपंथियों का वर्चस्व है। पाकिस्तान ने भारत के साथ ही आजादी पायी थी और छप्पन वर्षों के बाद भी वहाँ की अर्थ व्यवस्था जर्जर स्थिति में है, सामाजिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त है। आकंठ विदेशी कर्ज में डूबा हुआ पाकिस्तान अमेरिका के रहमो-करम का मोहताज है। धार्मिक कट्टरपंथी ने उसे क्या दिया है, यह जग जाहिर है। क्या भारत भी उसी रास्ते पर चलकर बदहाली में पहुँच जाए? देश को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के आधार पर विभाजित करने का अर्थ है 'द्वि राष्ट्र' सिद्धांत को पुनर्जीवित करना तथा देश के विकास को अवरूद्ध करना।

अयोध्या विवाद का जल्द से जल्द निबटारा देश की एकता और सदभावना के लिए नितांत आवश्यक है। कुछ मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने यह सिफारिश की है कि बाबरी मस्जिद को त्यागने की कुर्बानी के बदले मुसलमानों को विशेष आरक्षण या, इस प्रकार की विशेष सुविधाएँ दी जानी चाहिए। मेरी दृष्टि से यह बचकाना सुझाव है। बाबरी मस्जिद

से मुसलमानों की विशेष सुविधाओं को जोड़ना उचित नहीं है। इससे अन्य प्रकार की पेचीदगियाँ उत्पन्न होने की संभावना है। अयोध्या विवाद का निबटारा राष्ट्रीय हित में किया जाना चाहिए न कि किसी संप्रदाय विशेष के हित में। आज भूमंडलीकरण के दौर में तकनीकी विज्ञान के माध्यम से विश्व निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रहा है, उच्च सूचना प्रौद्योगिकी के कारण 'विश्व ग्राम' की अवधारणा को कार्यरूप देने का प्रयास किया जा रहा है। उस दौर में मंदिर-मस्जिद का विवाद हमारी लघुता का परिचायक माना जाएगा।

अयोध्या विवाद का स्थायी निवारण सही संदर्भ में हो और सम्यक रूप में यह तमाम देशभक्त नागरिकों की इच्छा है, अपेक्षा है। इस विवाद के समाधान के लिए उन धार्मिक मान्यताओं पर गौर करना चाहिए जिन्हें आधार बनाकर यह वितंडा खड़ी की गयी है। जिस राम के नाम पर हम मन्दिर निर्माण की बात करते हैं, उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम की संज्ञा दी गयी और उन्होंने जीवन दर्शन के रूप में अनेक मर्यादाओं की स्थापना की। क्या विवाद, विद्वेष, तनाव और संघर्ष के दायरे में विवादित स्थल पर राम मंदिर का निर्माण मर्यादा पुरुषोत्तम राम की मर्यादाओं और मान्यताओं के अनुरूप होगा? संपूर्ण जीवों में समरसता और उनके हितों का संरक्षण एवं संवर्द्धन ही रामत्व की सही अभिव्यक्ति है। गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम के चरित्र का बखान करते हुए लिखा है-

'नीति प्रीति परमारथस्वारथ।
कोऊ न राम सम जान जथारथ।'

यदि हम सही अर्थ में राम के भक्त हैं, उनकी महिमा और मर्यादाओं के प्रति आस्थावान हैं तो हमें विवादित स्थल पर मंदिर बनाने की हठधर्मिता को त्याग देना चाहिए तथा अन्यत्र मंदिर बनाने का संकल्प लेना चाहिए। कुछ मुस्लिम इमामों से मेरी बात हुई है और उन्होंने बगैर कोई लाग-लपेट के कहा कि विवादित स्थल पर मस्जिद बनाने की मांग इस्लाम के उसूलों के खिलाफ है।

अयोध्या विवाद को चुनावी मुद्दा बनाने वाली पार्टियों को इसके स्थायी समाधान में दिलचस्पी नहीं होगी, किन्तु यह भी सच्चाई है कि भारत के अधिकांश लोग हिंदू और मुसलमान, इसके अविलंब निबटारा के लिए इच्छुक हैं और चिंतित भी। क्या कुछ मुट्ठी भर राजनीतिज्ञों एवं इस विवाद से अपनी नेतागिरी की रोटी सेंकनेवालों के लिए आम जनता की राय की उपेक्षा की जाए?

इस संबंध में मेरी स्पष्ट मान्यता है कि विवादित स्थल पर न तो मस्जिद के पुनर्निमाण की बात की जाए और न ही मंदिर निर्माण की । मेरा विश्वास है कि बदली हुई परिस्थितियों में ऐसा संभव नहीं है। राष्ट्र हित एवं सर्वधर्म सम्भाव की भावना के अनुरूप इस स्थल पर 'सर्व धर्म मंडप' जैसे ढाँचे के निर्माण के विकल्प पर गंभीरता से चिंतन करने की जरूरत है। यह मंडप सभी धर्मों का प्रतीक समझा जाएगा, जहाँ सभी धर्मों के प्रतीक चिन्ह स्थापित किए जाएँ या रखे जाएँ और सभी धर्मावलंबियों को इसमें प्रवेश और दर्शन की छूट होनी चाहिए। मैं मानता हूँ कि मेरा यह सुझाव सभी के गले में आसानी से उतरनेवाला नहीं है, परन्तु गंभीर चिंतन तो किया ही जा सकता है। निश्चित रूप से समाज सेवियों, बुद्धिजीवियों तथा मीडिया की अहम और अग्रणी भूमिका होगी। सार्थक, सकारात्मक और संगठित जनमत ही इस विवाद का पटाक्षेप कर सकता है। तटस्थता इसका समाधान नहीं है। हमें दिनकर की पंक्ति को याद रखना चाहिए, 'जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध'।

संपर्क : प्रोफेसर कॉलनी, धनेश्वर घाट
बिहार शरीफ-803101 (नालंदा)

जरूरत है अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्था जगाने की- डॉ एपीजे कलाम

राष्ट्रपति भवन में 'विजन 2005' संगोष्ठी

विगतदिनोंराष्ट्रपतिभवनमें'विजन2005 'परआयोजितसंगोष्ठीकोसंबोधितकरतेहुएराष्ट्रपतिडॉ.एपीजेअब्दुल कलाम ने कहा कि हिंसा व आतंकवाद का मूल कारण असंतुलित विकास है। जब नैतिक विकास के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों विकास होगा तभी संतुलित विकास की अवधारणा सफल होगी। डॉ. कलाम ने पुनः कहा कि अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्था जगाने की जरूरत है। अहिंसा के प्रशिक्षण से हीं इसे सफल बनाया जा सकता है। इस अवसर पर मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' तथा मुनि अक्षय कुमार भी उपस्थित थे।

प्रेस की सीमाएं

✍ - डॉ० रवीन्द्र कुमार वर्मा

आज सूचना-प्रौद्योगिकी आंदोलन के बावजूद हमारे जीवन में समाचार पत्रों की महिमा कम नहीं हुई है। ये आज भी सर्वथा सुलभ एवं व्यापक रूप से ग्राह्य हैं। ये जनमत निर्माण, समर्थन निर्माण तथा जन अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रमुख साधन है। बल्कि कहा जाय कि संविधान द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार मूल रूप से इन्हीं पर आश्रित हैं तो अतिशयोक्ति न होगी। ये प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं में नींव की भूमिका निभाते हैं। फलतः इन्हें निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं निर्भीक होना चाहिए क्योंकि ये सार्वजनिक मुद्दों एवं विचारों के निर्माता होते हैं। निष्पक्ष का अर्थ, उन्हें किसी समूह विशेष या दल विशेष का मुखपत्र नहीं होना चाहिए और उनका लक्ष्य जनकल्याण एवं राष्ट्रहित होना चाहिए। स्वतंत्रता से तात्पर्य, सरकारी या किसी सार्वजनिक प्राधिकरण के हस्तक्षेप से मुक्त होना है। निर्भीक होने का अर्थ है, किसी प्रकार के दबाव से मुक्त होकर ईमानदारी से सच्ची खबरें छापना। सच्ची खबरें राष्ट्रहित या जनहित के विरूद्ध नहीं हों, इसका भी ध्यान रखना। इनका उल्लंघन होने से जनता वस्तुनिष्ठ निर्णय नहीं ले पाती।

ऐसी परिस्थिति में समाचार पत्रों की स्वतंत्रता की अहमियत और अधिक बढ़ जाती है। परन्तु प्रेस की स्वतंत्रता अपरीमित या असीमित न हो, इस पर ध्यान दिया जाना आवश्यक हो जाता है। समाचार पत्रों के उदय काल से ही सरकार द्वारा समय-समय पर वैधानिक सीमाएं निर्धारित की गई हैं। ये सीमाएं कभी तो राजनीतिक कारणों से और कभी तो जनहित से प्रेरित हुई हैं। इसके अतिरिक्त प्रेस प्रबंधन एवं संपादन व्यवस्था द्वारा भी कतिपय प्राथमिकताओं और वंचनाओं को अंगीकार किया जाता है। कभी वाणिज्य के दृष्टिकोण से भी समाचार पत्रों की गुणवता प्रभावित होती है। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत लेख इन्हीं दो प्रकार की सीमाओं का विवेचन कर रहा है ताकि प्रजातंत्र एवं जन कल्याण को ही अपना लक्ष्य बनाए रखने के लिए समाचार पत्रों को प्रेरित किया जा सके।

वैधानिक सीमाएं:

स्वतंत्रता के पूर्व : 1780 में भारत का पहला समाचार पत्र 'द बंगाल गजट' सेरामपुर से प्रकाशित हुआ। तत्कालीन औपनिवेशिक सरकार ने इस अकेले समाचार पत्र के लिए भी नियम एवं बंधन लगाए थे। कालान्तर में 1799 में तत्कालीन गवर्नर जनरल ने कानून बनाया कि समाचार पत्र पर मुद्रक, प्रकाशक तथा संपादक नाम छापा जाना जरूरी होगा तथा समाचार सामग्री छापने से पूर्व सचिव की अनुमति लेनी आवश्यक होगी। कुछ दिनों बाद प्रेस के लिए लाइसेंस लेने का भी प्रावधान कर दिया गया । इसी क्रम में 1835 से 1857 तक 'प्रेस सेंसरशिप', 'मेटकॉफ एक्ट' 1835 और 'लॉर्ड केनिंग एक्ट' 1857 आदि पारित किये गये। इस प्रकार समाचार पत्रों पर सरकारी नियंत्रण उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

ब्रितानी सम्राट् द्वारा भारतीय शासन का अधिग्रहण किये जाने के पश्चात्, शासन व्यवस्था को अनुशासित रखने के लिए किये गये उपायों में भारतीय दण्ड संहिता आई० पी० सी० 1860 का निर्माण किया गया जिसने प्रेस पर सरकारी नियंत्रण का स्वरूप ही बदल दिया। उदाहरण स्वरूप मानहानि, देशद्रोह आदि आपराधिक परिभाषाओं ने प्रेस को अपने घेरे में ले लिया। पुनः 1867 'द प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स' द्वारा प्रेस पर सरकारी नियंत्रण कसा गया। 1876 में 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' पारित कर स्वतंत्रता आन्दोलन को कुचलने के लिए ब्रितानी अफसरों को छापा मारने, प्रेस सीज करने तथा प्रकाशक-संपादक को दण्डित करने का अधिकार दिया गया।

स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियाँ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थीं और प्रेस उसमें अहम भूमिका निभा रहा था। इसलिए 1908 से 1935 तक प्रेस पर अंकुश बढ़ाने के लिए एक के बाद एक कानून बनाए गये जिसमें 'न्यूज पेपर्स इनसाईटमेंट टू ऑफेन्स' एक्ट 1908', 'इंडियन प्रेस एक्ट 1910' तथा 'प्रेस एमर्जेन्सी पावर्स आर्डिनेंस 1931' प्रमुख हैं जिसके द्वारा देश द्रोह भड़काने, हत्या के लिए उकसाने तथा सरकारी आदेश की अवहेलना के लिए उकसाने आदि के आरोप पर मजिस्ट्रेट को प्रेस सीज करने तथा प्रबंधन - संपादक आदि को दण्डित करने के अधिकार दिये गये। इस प्रकार प्रेस औपनिवेशिक सरकार के दमन का भुक्तभोगी रहा।

स्वातंत्र्योत्तर :

आजादी मिलने के बाद देशी सरकारों ने संविधान की परिधि में रहकर इन कानूनी कठोरताओं को कम किया। इस दिशा में पहला कदम 'प्रेस एमर्जेन्सी पावर्स एक्ट 1935' को 'द प्रेस ऑबजेक्शनेबुल मैटर एक्ट' 1951 में तबदील कर दिया गया। इसके बाद 1962 तक इस दिशा में भारतीय सरकार ने कोई खास कदम नहीं उठाया । हालांकि पूर्वाग्रह से ग्रसित समाचार पत्रों पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने आपराधिक कानूनों में संशोधन द्वारा ही काम चलाया । चीनी आक्रमण के आलोक में 'डिफेंस ऑफ इंडिया आर्डिनेन्स 1962' लागू किया गया ताकि असैनिक सुरक्षा और सैनिक कार्रवाई से संबंधित खबरों पर नियंत्रण रखा जा सके।

प्रेस की बेहतरी तथा उन्हें जनकल्याणोन्मुख बनाये रखने के लिए खास उपाय किये जाने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। फलस्वरूप 1965 में प्रेस कॉंसिल एक्ट बनाया गया और 1966 तक प्रेस कॉंसिल ऑफ इंडिया का गठन कर लिया गया । चार-पाँच वर्षों तक कार्यरत रहने के बावजूद आयोग ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

1971 में भारत-पाक युद्ध के मद्दे नजर 'डिफेंस ऑफ इण्डिया एक्ट' के द्वारा प्रेस पर सेंसररिज्म की सीमा बढ़ा दी गई। 1974 के छात्र आन्दोलन के दौरान उस पर नियंत्रण कायम करने के लिए 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई। छात्र आंदोलन को कुचलने के लिए तत्कालीन सरकार ने प्रिवेंशन ऑफ पब्लिकेशन ऑफ ऑबजेक्शेनेबुल मैटर एक्ट

1976' पारित किया और प्रेस की स्वतंत्रता पर बज्र गिरा। जनता पार्टी की सरकार 1977 में गठित की गई जिसने नागरिक स्वतंत्रताओं को प्राथमिकता दी। फलस्वरूप 1978 में 'प्रेस कौंसिल के पुनर्गठन में सरकार तथा प्रेस को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया गया तथा अध्यक्ष पद पर अवकाश प्राप्त सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को नियुक्त किये जाने का प्रावधान किया गया । कौंसिल को समाचार पत्रों को जनहित के प्रति गुणवत्ता बनाये रखने तथा उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता सुनिश्चित कराने की जिम्मेवारी सौंपी गई। परन्तु आज तक कौंसिल ने स्वयं को प्रेस संबंधी विवादों एवं शिकायतों के निपटारे तक ही सीमित रखा है। दूसरी ओर संविधान की धारा 19(1) (क) द्वारा प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित तो की गई है, परन्तु वहीं सीमाएं भी निर्धारित कर दी गई हैं।

प्रेस की स्व-रचित सीमाएं:

पिछले पचास वर्षों का अनुभव यह बतलाता है कि प्रेस को प्राप्त स्वतंत्रताओं को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रेस ने अपने कर्त्तव्यों का स्वच्छ रूप से निर्वहन नहीं किया है। यह अपने आंतरिक दोषों से ग्रसित रहा है। उनका यदि वर्गीकरण किया जाय तो इनके निम्न प्रकार हो सकते हैं। (क) संपादकीय (ख) प्रबंधकीय तथा (ग) वित्तीय।

संपादकीय : भारतीय समाचार पत्रों के संपादकों में तीन प्रकार की कमी देखी जाती है- सप्रेशन (किसी खबर को दबाना या कम कवरेज देना),बूमिंग (किसी खबर को उचित से ज्यादा कवरेज देना) तथा सूचना श्रोत को छुपाना (यथा विश्वस्त सूत्र एक अधिकारी/मंत्री आदि)। ये तीनों व्याधियाँ संपादक के विश्वासों एवं पूर्वाग्रहों के कारण व्याप्त होती हैं। यह पूर्वाग्रह अखबार मालिकों की प्रवृत्ति, संपादक के किसी राजनीतिक या सामाजिक मूल्य में विश्वास या संपादक का किसी के प्रति विशेष रूचि के कारण होता है। इससे जनमानस पर एक सर्वाजनिक मुद्दा नहीं बन पाता और खास अखवारों के पाठक खास धारणा बना लेते हैं। सार्वजनिक प्रश्न या हित भ्रमित हो जाता है। जनता वस्तुनिष्ठ निर्णय पर नहीं पहुँच पाती। जानकारी के श्रोतों को छिपाये जाने से खबरों की प्रमाणिकता पर भी असर पड़ता है। कभी-कभी देखा जाता है कि बिना किसी ठोस आधार के किसी के चरित्र पर लांछना लगाया जाता है तथा कभी किसी के व्यक्तित्व के निखारने का प्रयास किया जाता है। दोनों ही सत्य से परे होते हैं। इसके अतिरिक्त 'ओपिनियन पोल' द्वारा किसी तथ्य को सत्यापित करने का भी प्रयास किया जाता है।

यह भी देखा गया है कि संपादकों द्वारा बयान छापने की परिपाटी चल पड़ी है। खबरों को देखने से पता चलता है कि अधिकांश खबरें बयान पर आधारित होती हैं तथा अखबारनवीस की अपनी खोज नगण्य होती है। संपादक भी तथ्य की गहराई तक जाने को प्रेरित नहीं करते हैं। इस प्रकार प्रिंट मिडिया ने स्वयं को कई तरीकों से जनता से दूर कर लिया है तथा अपनी स्वतंत्रता को सीमित कर लिया है।

प्रबंधकीय: किसी भी समाचार पत्र के प्रबंधन का प्रमुख उद्देश्य मुनाफा कमाना होता है। अखबार मालिक अपने संपादकीय तथा पत्रकारों को चटपटी या विस्फोटक खबरें छापने को प्रेरित करते हैं ताकि अखबार का सर्कुलेशन बढ़ सके। उनके समक्ष जनहित का लक्ष्य नहीं होता। इसके अतिरिक्त अखबार मालिक अखबारों का आज-कल क्षेत्रीय प्रकाशनों पर बल दे रहे हैं। एक क्षेत्र विशेष के खबरों को प्राथमिकता देकर उनकी बिक्री बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। फलस्वरूप अखबारों के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के प्रकाशनों में एकरूपता नहीं रह पाती है और समाचारों का स्तरीय होना भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अखबार मालिकों ने पत्रकारों को स्थानीय प्रशासन में पैठ बनाने के लिए प्रेरित किया है। स्थानीय प्रशासन एवं सरकार के मनोनुकूल समाचारों को प्राथमिकता दी जा रही है ताकि विज्ञापन आदि अनवरत प्राप्त होता रहे और मुनाफा में वृद्धि हो।

वित्तीय : मंहगाई बढ़ने से अखबार सामग्री की कीमतें भी बढ़ी हैं परन्तु अखबारों की कीमतें उतनी नहीं बढ़ पायी हैं। कागज की गुणवत्ता में ह्रास हुआ है और विज्ञापनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। फलत: समाचार सामग्री का अभाव पाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त लुभावने स्कीम या ईनाम का प्रलोभन आदि देकर अखबार मालिक अपनी बिक्री प्रोन्नत करते हैं। पाठकों का ध्यान समाचार से ज्यादा इन स्कीमों पर हो गया है अर्थात वे ज्यादा लाभकारी स्कीम वाला अखबार खरीदते हैं।

अंत में, सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि समाचार प्रतिनिधियों को पर्याप्त वेतन नहीं मिल पाता है। स्ट्रींजर या ट्रेनी पत्रकारों को बहुत कम वेतन मिलता है। यहाँ तक देखा गया है कि कई अखबारों में नये पत्रकार एक हजार से भी कम वेतन पर वर्षों से काम करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रकारों के लिए सामाजिक-सुरक्षा के प्रावधान भी पर्याप्त नहीं हैं। फलस्वरूप पत्रकारिता की गुणवत्ता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त प्रेस की सीमाओं के आलोक में ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेस स्वतंत्र, स्वच्छ एवं निर्भिक नहीं रह सकता जबकि उसका ऐसा रहना प्रजातंत्र के लिए अति आवश्यक है। इसलिए प्रेस को स्वयं भी अपनी स्वतंत्रता का समुचित उपयोग करना चाहिए तथा जनहित एवं राष्ट्रहित, उनका प्रथम लक्ष्य होना चाहिए । उन्हें जनता तक प्रमाणिक, सत्य एवं ग्राह्य सूचनाएं ही पहुँचानी चाहिए।

प्रेस कांउसिल ऑफ इण्डिया को समाचार पत्रों की गुणवत्ता, उनकी स्वतंत्रता तथा पत्रकारों के लिए सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था हेतु ठोस योजना बनानी चाहिए और तदनुरूप सरकार को प्रेस की स्वतंत्रता संबंधी ठोस नीति बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। प्रेस के लिए एक सर्वमान्य एवं सर्वव्यापी संहिता निर्धारित कर दी जानी चाहिए तथा पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु एक कोष बना कर सुविधाएं मुहैया की जानी चाहिए। अखबार मालिकों का संपादकीय एवं पत्रकारिता पर से आधिपत्य को कम करने के उपाय करने चाहिए।

संपर्क: प्राध्यापक, स्नातकोत्तर
राजनीतिशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज
हाजीपुर, बिहार

कहानी

दरार

कृष्ण कुमार राय

जीवन का आस त्याग चुके शोभनाथ ने उस दिन अधीर होकर अपने सिरहाने बैठे बड़े बेटे जग्गू यानी जगरदेव के कंधे पर हाथ टिकाते हुए कातर स्वर में कहा था, "बेटा, मैं तुमको ज्यादा पढ़ा-लिखा तो नहीं सका, लेकिन अपने हाथों का हुनर तुम्हें बखूबी सिखला दिया ताकि रोजी-रोटी के लिए कभी किसी के मुहताज न रहो। समय से तुम्हारा घर भी बसा दिया। लगता है अब मेरे जाने की घड़ी करीब आ गई है, लेकिन एक बात की चिंता अब भी मुझे रह-रहकर सता रही है। मैं रामू को अपने जीवन-काल में पार नहीं लगा सका। मैं उसे कर्ज के रूप में तुम्हारे ऊपर छोड़कर जाऊँगा। पिता के इस ऋण को तुम्हें चुकाना होगा बेटा। मुझे भरोसा है कि इस जिम्मेदारी को निभाकर तुम मेरी आत्मा को शांति प्रदान करोगे।"

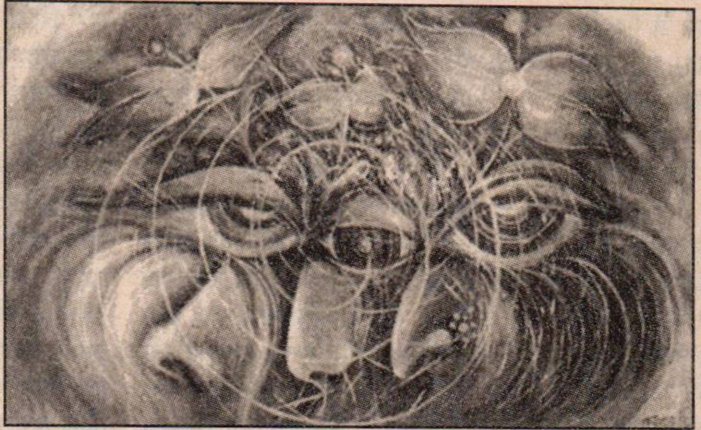

महीनों से बीमार चल रहे पिता की दिनो-दिन बिगड़ती हालत को देखकर वैसे तो जग्गू के मन में भी यह आशंका घर करने लगी थी कि अब जल्दी ही उनका साया सिर से उठने वाला है, किन्तु रामू के लिये उनके मन में पल रही पीड़ा को स्वयं उन्हीं के मुख से सुनकर वह विचलित हो उठा था। उसने पिता को आश्वस्त करते हुए कहा था, 'आप रामू के बारे में नाहक इतने चिंतित हैं बाबू। वह आपका बेटा होने के साथ ही क्या मेरा भी छोटा भाई नहीं है। उसके भविष्य के बारे में मुझे भी उतनी ही चिंता है जितनी आपको। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ बाबू कि मैं इस दायित्व को कर्ज नहीं अपना फर्ज मानकर किसी भी कीमत पर पूरा करूँगा। हमें तो बस आपका आशीर्वाद चाहिये। आप सारी चिंता-फिकर छोड़कर इस समय अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दीजिये।'

और रामू को जगरनाथ की सरपरस्ती में छोड़कर सचमुच शोभनाथ जल्दी ही इस दुनिया से कुच कर गये थे। इस हादसे के बाद जग्गू अपनी एक मात्र संतान, छः वर्षीया बेटी पार्वती के साथ ही बारह वर्षीय छोटे भाई रामू का भी संरक्षक बन गया। अपनी इस नई जिम्मेदारी को उसने कभी बोझ नहीं समझा और उसे निभाने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। लेकिन जब दसवीं की परीक्षा में लगातार दो बार असफल रहने के बाद रामू ने हार मानकर पढ़ाई को तोबा कर दिया तो जग्गू बड़े धर्म-संकट में पड़ गया। सौभाग्य से उसी समय एक सुनहरा मौका सामने नजर आया। जिले की दीवानी कचहरी में कुछ चपरासियों की भरती होने जा रही थी। वहाँ के बड़े बाबू इसी गाँव के रहनेवाले थे जिन्हें जग्गू 'चच्चा' कहकर संबोधित करता था। जब उसने बड़े बाबू से रामू की भरती के बारे में चर्चा की तो वह बोले, 'अरे बेटा जग्गू अब पुराने दिनों वाली बात नहीं रही जब मैंने गाँव के कई लड़कों को कचहरी में नौकरी दिला दी थी। अब तो हालत यह है कि हाकिम-हुक्काम चपरासियों की नियुक्ति के लिए भी पचास-पचास हजार रुपये की मोटी रकम चाहते हैं। सरकारी नौकरी अब जल्दी मिलती कहाँ है बेटा। फिर भी मैं जरूर कोशिश करूँगा। मगर इतना समझ लो कि मेरे बीच में पड़ने और कहने-सुनने के बाद भी पच्चीस हजार से कम में बात बनने वाली नहीं, वरना एक न एक अड़ंगा लगा दिया जाएगा। वैसे आज के दौर में यह कोई बड़ी रकम नहीं। एक बार जो रमुआ कचहरी में घुस गया तो इतनी रकम तो वह साल-दो साल में केवल ऊपरी कमाई से निकाल लेगा। अगर किसी तरह इतने पैसों का जुगाड़ कर सको तो मैं पैरवी करूँ।'

जग्गू बड़े असमंजस में पड़ गया। पढ़ाई के प्रति रामू की उदासीनता और पिता की अंतिम अभिलाषा को ध्यान में रखते हुए वह इस अवसर को हाथ से नहीं निकलने देना चाहता था क्योंकि कोई दूसरा विकल्प फिलहाल सामने नजर नहीं आ रहा था। उसे यह भी अंदेशा था कि बेकार बैठे-बैठे कहीं रामू कुराह न पकड़ ले। घर के खर्चे से काट-कपटकर अब तक जग्गू ने तीन चार हजार रुपये बचा रखे थे, लेकिन इतने से तो कोई काम बनने वाला था नहीं। बहुत सोच-विचार के बाद उसके मन में आया कि क्यों न बीबी के जेवर बेचकर वह शेष रुपयों का जुगाड़ करके बड़े बाबू को दे दे। वह तो अपने ही गाँव के आदमी ठहरे, स्वभाव से भी बड़े नेक हैं, पैसा डूबने का कोई सवाल नहीं। उसने मन ही मन यह भी सोचा कि जब रामू की पक्की नौकरी हो जायेगी, और साथ में ऊपरी कमाई भी होने लगेगी तो बीबी के गहने बाद में भी बनवाये जा सकते हैं। बीबी को सारी परिस्थिति समझाने के बाद उसने भी ना-नुकर नहीं किया और जग्गू ने अगले ही दिन ज़ेवर बेचकर पूरे पच्चीस हजार रुपये ले जाकर बड़े बाबू के हाथ में धर दिए। महीना भर बाद ही बड़े बाबू ने रामनाथ की नियुक्ति का आदेश जग्गू को थमाकर उंपकृत कर दिया। उन्हीं की कृपा से रामू की पहली ही तैनाती मुंसिफ की अदालत में अरदली के रूप में हो गई। फिर क्या पूछना था, घर की गाड़ी धड़ल्ले से चल निकली। खाता-कमाता कुँआरा लड़का देखकर जग्गू के पास रामू की शादी के नित नये प्रस्ताव आने लगे। वैसे तो जग्गू चाहता था कि अभी, कुछ दिन रुककर उसकी शादी की जाए ताकि इस बीच कुछ पैसे भी हाथ में आ जाए। लेकिन उसकी बीबी की ख्वाहिश थी कि जल्दी से घर में देवरानी आ जाए जिससे उसे भी एक मददगार मिल जाए। बिके हुए गहनों की उसे खास चिंता न थी। उसका मानना था। कि गहना-जेवर तो बाद में भी गढ़वाये जा सकते हैं। शादी के लिए रामू की भी मौन स्वीकृति थी। अत: एक दसवीं पास शहर की लड़की से रामू की शादी हो गई। फिर

तो घर की फिजाँ में कुछ दिनों के लिए मानो नई बहार आ गई।

डेढ़-दो साल तक तो दोनों भाइयों का साथ किसी तरह निभता रहा, लेकिन रामू की पत्नी बड़ी खरदिमाग और घमंडी निकली। उसका पति चपरासी था तो क्या हुआ, ऊपरी कमाई तो अच्छी थी। उसका मिजाज न मिलता और हमेशा ऐठ दिखलाती रहती। जग्गू एक कुशल मोटर मेकैनिक होकर भी साधन के अभाव में एक छोटी सी दुपहिया वाहनों के मरम्मत की दुकान पास के कस्बे में चलाकर गुजर-बसर करता था। एक अदने से मिस्तरी और उसकी देहाती बीबी पर रामू की पत्नी हावी होकर रहना चाहती थी, क्योंकि घर के संचालन में अब उसी के पति का अधिक योगदान था। धीरे-धीरे उसके मन में कपट समाने लगा और उसने पति की ऊपरी कमाई के पैसों का बड़ा हिस्सा दबा कर रखना शुरू कर दिया। आये दिन हठ करके वह पति के साथ सैर-सपाटे के लिए या फिर मायके वालों से मिलने के बहाने शहर निकल जाती। अतीत न उसने देखा था और न उसके बारे में कुछ सुनना चाहती थी। वर्तमान उसके साथ था जिसपर वह इतराती थी और उसे भरपूर भोगना चाहती थी।

शादी के दो साल बाद जब रामू की पत्नी एक बेटे की माँ भी बन गई तो उसका दिमाग सातवें आसमान पर जा पहुँचा। कुछ ही दिनों में रामू के बहुत समझाने के बाद भी उसने जिद करके चूल्हा-चौका अलग कर लिया। जिस भाई ने रामू को पुत्र की तरह पाल-पोसकर और बीबी के गहने तक बेचकर इस मुकाम तक पहुँचाया था, उससे आँखें मिलाने में भी अब उसे शर्म महसूस होती, लेकिन बेशर्म बीबी के आगे वह बेबस था। अब वह उसे छोड़ भी तो नहीं सकता था। नतीजा यह हुआ कि दोनों भाइयों के बीच दिनो-दिन दरार बढ़ने लगी। जग्गू की दुकान से होनेवाली आय सीमित थी। हुनरमंद होकर भी वह पैसों के अभाव में किसी अच्छी जगह बड़ा मोटर वर्कशॉप खोलने में असमर्थ था। उधर गाँव के छोटे से पुश्तैनी मकान में दो भाइयों के परिवार को अलग-अलग रहने के लिए पर्याप्त जगह न थी। किसी तरह घुट-घुटकर दिन कट रहे थे। चूँकि मकान मौरूसी था, अत: समर्थ होकर भी रामू अपनी पत्नी के विरोध के चलते उसमें एक पैसा भी नहीं लगा पाता था। उसकी बीबी का सपना तो अपना अलग घर बसाने का था। जग्गू की माली हालत ऐसी न थी कि मकान के विस्तार की बात सोचता। दिनो-दिन उसकी दिक्कतें बढ़ने लगीं। देवरानी-जेठानी के बीच आये दिन एक न एक बात को लेकर तू-तू मैं-मैं भी होने लगी और जल्दी ही स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि उनके बीच बोलचाल भी बंद हो गई। जग्गू की तो नींद हराम हो गई। यह स्थिति देखकर रामू स्वयं भी बेहद दु:खी और अपराध-बोध से ग्रसित रहने लगा, किन्तु हठी और अविवेकी बीबी के आगे उसकी एक न चलती थी।

एक दिन अचानक जग्गू के पास प्रधान जी के भाई का बुलावा आया। ग्राम प्रधान के छोटे भाई विनोद जी विगत पच्चीस वर्षों से दिल्ली में आबाद थे जहाँ उनका काफी बड़ा कारोबार था। एक आलीशान कोठी भी उन्होंने दिल्ली में खड़ी कर ली थी। जिस समय वह गाँव से दिल्ली गये थे, वह इलाका जहाँ आज उनकी कोठी खड़ी थी, एकदम सुनसान और उजाड़-खंड था। उन्हें काफी बड़ी जमीन वहाँ पानी के भाव मिल गई थी। अब उसी स्थान पर दिल्ली की एक विशाल कॉलोनी विकसित हो चुकी थी और जमीन तथा मकानों की कीमतें वहाँ आसमान छूने लगी थी। विनोद जी के पास दिल्ली में दो कारें थी। जिस वर्कशॉप में वह अपनी गाड़ियों की सर्विसिंग कराते थे वहाँ के पुराने मेकैनिक का पिछले दिनों निधन हो गया था। वर्कशॉप के मालिक को एक कुशल मोटर मिस्तरी की तलाश थी। जब विनोद जी को इस बात की जानकारी हुई तो उनका ध्यान तत्काल अपने गाँव के जगरनाथ मिस्तरी की तरफ गया। उन्होंने जग्गू के बाप के हाथ का हुनर भी देखा था और उसका भी। वर्कशॉप के मालिक से उनकी खूब बनती थी। जब उन्होंने मालिक से जग्गू के बारे में चर्चा की तो वह बड़ी उत्सुकता के साथ बोले, 'अरे ठाकुर साहब, आपने तो बड़ी अच्छी खबर सुनाई। उस मिस्तरी को आप फौरन दिल्ली बुलवा लीजिये। मैं उसे अपने वर्कशॉप में रख लूँगा और यदि आदमी होशियार हुआ तो अच्छा वेतन भी दूँगा। वैसे जब आपने खुद उसकी कारीगरी देखी है और उसकी तारीफ भी कर रहे हैं, तो मुझे यकीन है कि आदमी जरूर काम में माहिर होगा।' इसी बीच सहसा विनोद जी का स्वयं अपने गाँव आने का कार्यक्रम बन गया और अगले ही दिन उन्होंने संदेसा भिजवाकर जग्गू को बुलवाया।

जग्गू जब विनोदजी से मिलने पहुँचा तो वह बोले, 'बेटा जग्गू तुम्हारा बाप इतने कुशल मोटर मिस्तरी था, लेकिन जिंदगी भर यहीं गाँव के इर्द-गिर्द छोटा सा सर्विस सेंटर चलाते दुनिया से चला गया। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हाथ में भी वैसा ही हुनर है। क्यों नहीं उसका फायदा उठाते? क्यों कूप-मंडूक की तरह इसी गाँव में पड़े अपनी जिंदगी अकारथ कर रहे हो? मेरे साथ दिल्ली चलो, वहाँ मैं तुम्हारी नौकरी एक बहुत बड़े मोटर वर्कशॉप में पक्की करके आया हूँ। अच्छी तनख्वाह मिलेगी, साल बाद बोनस भी। कुछ दिनों में ही आदमी बन जाओगे। चाहो तो अपनी घरवाली और बिटिया को भी साथ लेते चलो ताकि बार-बार भागकर घर न आना पड़े। मेरी कोठी के अहाते में कुछ कमरे खली पड़े हैं। पानी-बिजली की भी सुविधा है। अभी हाल तुमको मकान ढूँढ़ने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी। धीरे-धीरे जब अपना इंतजाम कर लेना तब वहाँ चले जाना। यह सुनहरा मौका हाथ से निकल गया तो फिर पछताते रह जाओगे और सारी जिंदगी यहीं पड़े बस स्कूटर और मोटर साइकिल का पंक्चर जोड़ते रह जाओगे।'

घर के दु:खद वातावरण से ऊब चुके जग्गू को विनोदजी की बातें मानो देव-वाणी जैसी लगीं। उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलछला आये जो छिपाये न छिप सके। उसकी यह कातर दशा देखकर विनोद जी को लगा कि शायद जग्गू गाँव छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता। उन्होंने बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा, 'तुम्हारी आँखों में यह आँसू क्यों आ गए जग्गू? गाँव नहीं छोड़ना चाहते क्या?

जग्गू भाव-विह्वल हो उठा और विनोद जी का पैर पकड़कर रोने लगा। विनोदजी के बार-बार पूछने पर उसने अपने घर की अंदरूनी दास्तान उन्हें सुनाई और अधीर होकर कहने लगा, 'बाबूजी, इतनी दूर रहकर भी केवल गाँव के नाते आपको मेरे बारे में इतनी चिंता थी, यही सोचकर भावावेश में मेरी आँखों में आँसू आ गए। आपके उपकार के बोझ से तो मैं दब गया हूँ बाबूजी आपका हर आदेश सिर आँखों पर है, उसे न मानने की धृष्टता भला मैं कैसे कर सकता हूँ। यहाँ तो मैंने जिस भाई के लिए

इतना किया वही शादी के बाद से बेगाना हो गया है। लेकिन उसे भी क्यों दोष दूँ बाबूजी, आखिर घर में बहू तो मैं ही ले आया था। घर-परिवार और सूरत-शक्ल तो पहले देखी जा सकती है, लेकिन किसी के अंदर पैठकर एक नजर में स्वभाव का तो पता नहीं लगाया जा सकता। सब अपनी ही किस्मत का फेर है बाबूजी नहीं तो मैं क्यों इस तरह ठगा जाता और ऐसी घर-फोड़नी खोटी बहू क्यों घर में आती।'

विनोद जी ने उसे ढाड़स दिलाते हुए कहा, बेटा, यही जग की रीति है, इसके लिए क्या करोगे। ऐसा तम्हारे ही साथ नहीं हुआ है, यह तो घर-घर की बात है। अब उसकी चिंता छोड़ो और सारी मोह-माया त्यागकर मेरे साथ दिल्ली निकल चलो। जब तुम्हारे भी दिन बहुरेंगे तो वही भाई और उसकी जोरू तुम्हारा तलवा चाटने दौड़े आवेंगे'।

'लेकिन बाबूजी, मै तो एक अदना सा मिस्तरी ठहरा। इतने बड़े आदमी की कोठी के अहाते में भला मै कैसे रहूँगा। आपकी प्रतिष्ठा पर आँच आवेगी।'

'अरे पगला, तू कैसी बातें करता है। तू कोई पराया थोड़े ही है, मेरे गाँव का लड़का ठहरा। मैंने मकान के बाहरी हिस्से में इसी हारे-गाढ़े के लिए तो कुछ कमरे बनवा रखे हैं। तुम तनिक भी संकोच न करो और चलने की तैयारी कर डालो। मैं अगले सोमवार को वापस जा रहा हूँ। तुम तीनों का टिकट भी मैं मँगवा लेता हूँ। अभी तुम कहाँ से इंतजाम करोगे। बस अपने थोड़े से जरूरी सामान साथ ले चलना, बाकी सारी व्यवस्था वहीं हो जायेगी। सोमवार को दिन में एक बजे मैं तुम लोगों को लेने के लिए भैया की जीप भेज दूँगा।'

जग्गू को मानो मुँहमाँगी मुराद मिल गई। उसने घर लौटकर जब रात को सारी बातें रामू को बतलाई तो वह भाइ के पैरों से लिपटकर रोने लगा और भर्राए कंठ से बोला, 'इस तरह गाँव-घर से एकदम नाता तोड़कर परदेस मत जाइए भैया। विनोदजी की कृपा से यदि आपको दिल्ली में अच्छी नौकरी मिल रही है तो इस मौके को हाथ से न निकलने दीजिये। यदि जरूरी समझिए तो भाभी को भी साथ ले जा सकते हैं, लेकिन कम से कम पार्वती को तो मेरे पास छोड़ जाइए। यहीं रहकर पढ़ेगी, इसी बहाने चिट्ठी-पाती और आने-जाने का सिलसिला बना रहेगा।'

थोड़ी दूरी पर कान लगाकर खड़ी दोनों भाइयों की बातें सुन रही रामू की बीबी अपने पति के अनुरोध के समर्थन में एक शब्द भी न बोली, बल्कि अपना सांकेतिक विरोध प्रदर्शित करती हुई मुँह बिचका कर वहाँ से खिसक गई। उधर पार्वती भी किसी कीमत पर अकेले गाँव में रुकने को तैयार न हुई और माँ-बाप के साथ ही दिल्ली जाने पर अड़ गई। अतः उसे रामू के संरक्षण में छोड़कर जाने की बात जहाँ की तहाँ खत्म हो गई।

दो तीन दिन का समय गुजरते देर न लगी और देखते ही देखते सोमवार का दिन आ गया। आज ही अपराह्न तीन बजे की ट्रेन से दिल्ली जाना था। जग्गू इस बीच अपने जरूरी सामान समेट कर जाने की पूरी तैयारी कर चुका था। गाँव से स्टेशन 10-12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। अपने वादे के मुताबिक विनोदजी ने अपने बड़े भाई की जीप जगरदेव और उसके परिवार को लाने के लिए ठीक एक बजे उसके घर भेज दी थी। भाई को बिदा करने के लिए आज रामू ने भी कचहरी से छुटी ले ली थी। अपनी पत्नी के व्यवहार से वह इतना क्षुब्ध था कि भाई के सामने शर्म से उसकी आँखें न उठती थीं। काफी उदास रहते हुए भी उसने भाई का सामान जीप पर लदवाने में पूरा सहयोग किया, लेकिन उसकी बेगैरत बीबी आज भी एकदम किनारा कसे रही। ऐसा लगता था कि उसे जेठ-जेठानी और उनकी बेटी के परदेस-गमन का कोई गम न था। सामान्य शिष्टाचार निभाने के लिए भी वह सामने नहीं आई, जबकि जग्गू को बिदा करने तथा उसके प्रति शुभ-कामनाएँ प्रकट करने वाले ग्राम-बंधुओं के आने-जाने का ताँता घंटों पहले से लगा हुआ था। जब जग्गू का सारा सामान जीप पर लद गया तो रामू ने अत्यन्त भावुक होकर भैया और भाभी के पैर छूते हुए हाथ जोड़कर कहा, 'परदेस जाकर भूल मत जाइयेगा भैया....' वह और भी कुछ कहना चाहता था किन्तु गला अवरुद्ध हो जाने के कारण आगे कुछ भी न बोल सका, लेकिन उसके मन की पीड़ा आँखों से साफ झलक रही थी। जग्गू भी बिदाई के इस अवसर पर इतना भाव-विह्वल हो उठा कि उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उसने रामू को अँकवारते हुए कहा, 'बाबू के न रहने पर मैंने तुम्हें बेटे की तरह पाला था रामू और आज भी मैं तुम्हें अपने कलेजे का टुकड़ा समझता हूँ। परिस्थितियों ने मुझे रोजी-रोटी के लिए आज परदेस की राह पकड़ने को जरूर मजबूर कर दिया है, लेकिन मेरा मन सदैव यहीं वास करता रहेगा। तुम भरोसा रखो रामू, दु:ख-सुख की घड़ी में जब भी मुझे खून की पुकार सुनाई पड़ेगी मैं तत्काल उलटे पैरों भागता हुआ यहाँ आ पहुँचूँगा और तुम बड़े भाई को अपने पास खड़ा पाओगे। मन में बड़ी तमन्ना थी कि आज जाते-जाते अपने प्यारे नन्हें भतीजे को भी कुछ देर कलेजे से लगाकर भरपूर प्यार करता, लेकिन न जाने क्या सोचकर बहू ने मुझे इस क्षणिक सुख से अवसर से भी बंचित रखा। फिर भी मैं उसके प्रति मन में कोई दुर्भावना लेकर नहीं जा रहा हूँ रामू। तुम लोग सदैव सुखी रहो और फूलो-फलो, यही मेरा आशीवार्द है।'

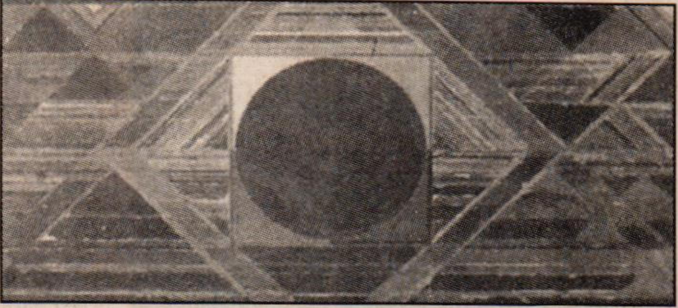

जग्गू बोझिल मन से हौले-हौले आगे बढ़ता हुआ जीप में जा बैठा। गाड़ी ज्योंही चलने को हुई, एक तरफ बेहद उदास खड़ा रामू अपने मनोवेग को रोक न सका और दोनों हथेलियों से अपनी आँखें ढँककर सिसकने लगा। उधर चिंता में डूबा जग्गू जीप में बैठे-बैठे पीछे छूटते अपने गाँव-घर और बिलखते छोटे भाई को खामोश बेचैन निगाहों से एकटक निहारता हुआ मन में सोचता जा रहा था कि एक दुराग्रही और अहंकारी औरत के कारण दो सहोदर भाइयों के बीच पड़ी यह दरार अब कभी भर न पावेगी क्या और अपनों से टूटता यह रिश्ता क्या फिर कभी जुड़ न पावेगा।

संपर्क: एस. 2/51-ए., अर्दली बाजार,
अधिकारी हॉस्टल के समीप,
वाराणसी- 221002 (उ० प्र०)

कहानी

पगली

✍ सुधा गुप्ता

दीदी.....ओ दीदी..... आवाज सुनकर बच्चे कह रहें हैं। मैडम जी आपको पगली बुला रही है। मैने बीच में पढ़ना बंद करके उसे आवाज लगाई-बसंती क्या बात है? इधर आओ-'दीदी चाह पिया दो ना'....'पिया दो ना चाह' एक रुपया तो आ मांगता हुँ मैने उसे दो का सिक्का दिया। तब तक खाना खाने की छुटटी हो चुकी थी।

मैने पगली से पूछा-बसंती तेरी लड़की कहाँ गई? वा मर गई दीदी! 'बहुत नीक लड़की रही मोर' चार बरस की गई रहिन जुवान लड़की रही मोर..... (जुवान से उसका आशय मोटी तंदरुस्त लड़की से रहा होगा।) ऐसन लडकी पूरे सहर भर में न होइन। पगली फफक कर रोने भी लगी थी।

प्राथ. कन्या शाला, प्राथ. बालक शाला और माध्यमिक शाला तीनों एक ही प्रांगण में लगती हैं। करीब चार बरस पहले एक दिन शाला लगने के समय 11:30 पर स्कूल पहुँचते ही बच्चों ने शोर मचाया....मैडम जी, पीछे की कुठरिया में एक पगली घुसी है, बाहर नहीं निकलती।

मैने देखा हाड़ का ढाँचा हुई करवट लिए स्त्रीनुमा आकृति जिसकी छाती को एक नन्ही जान चूस रही है। आवाज लगाने पर स्त्री टस से मस नहीं हुई। पर उसके बच्चे में स्पंदन हो रहा है। वह हाथ पैर हिला रहा है। थोड़ी देर के बाद वह हाड़ी का पिंजर भी हिला, बच्चे को अपनी छाती से अलग कर उठकर बैठ गया। लगता था वह स्त्री सिर्फ हाड़ की रह गई है। माँस किसी शैतान ने नोच खाया है और छोड़ दिया है उसे अधखाया सा तड़पने के लिए।

नारी तो नदिया की लहर की तरह घाट पर आकर बार-बार सिर पटकती है। पर घाट तो पत्थर के हैं....... लहरों के रूदन में अनगिनत मिथक तैरते हैं। जिसे लहर, घाट को पढ़ना चाहती है, समझना चाहती है। किन्तु लहर जब तक संगठित होकर बाढ़ का रूप धारण नहीं कर लेती तब तक, घाट नहीं डूबते' ना ही धँसकते हैं। स्याह पड़ गई उस स्त्री को देखकर वात्सल्य उमड़ता है, भय नहीं' किंतु, माँ को भयभीत डरावना, भयाक्रांत करनेवाला समय क्रूर, हृदयहीन है। लाल बड़ी-बड़ी गोल आँखों से जैसे रक्त निकलने को घबरा रहा है, नुकीली सी डोढ़ी धँसे गालों में पीले पड़े दाँत फैले उलझे काले बाल। तार-तार हुए आँचल से बच्चे को ढाँकती भर्राये स्वर में वह कुछ बच्चे

डरकर भाग गए थे। कुछ कौतूहल से कभी स्त्री को कभी बच्चे को देख रहे थे, थोड़ी देर में वह स्त्री फिर ढुलक गई।

ममता, वात्सल्य, करुणा, दया की खान नारी ऐसी परिस्थिति में मोम की तरह पिघल ही जाती है। 20-25 दिन का शिशु उस स्त्री की छाती से लगा दूध के नाम पर चमड़ी चूस रहा था। मैंने पगली को लंच बॉक्स से खाना दिया, पानी दिया और फिर चाय। भूखी सिकुड़ी अंतड़ियाँ कुछ हरी होने लगीं। रक्तिम आँखों में पानी छलछला आया उसने बिना चूड़ी वाले सूखे से हाथों से धरती को स्पर्श किया और माथे से लगा लिया- मानों कह रही हो। हे धरती माता तूनें जनम दिया है तू ही संभाल.. .....

स्त्री विक्षिप्त थी। पर जब मानसिक संतुलन कुछ ठीक होता वह बतलाती ....'पगली यदि सही भी बोलेगी तो लोग उसे सही नहीं मानेगे आखिर है तो पगली! मेरी जिज्ञासा, मेरी भावुकता पगली को मेरे पास खींच लाती है। पगली कह चलती -"मोर आदमी है दीदी। पर हमको छोड़ दिया है। दूसर रख लिया है। बड्ड़ा लड़का है मोर, एक ठन। हम बिलासपुर के आहिन।" मैने कहा-तुम ससुराल नहीं जाती । वह तेवर दिखाते हुए बोली- मैं नहीं जाता दीदी। ('जब वह खड़ी बोली बोलती तो उसकी व्याकरण यही होती' मैंने चौंककर कहा अरे ! फिर ये बच्चा कहाँ से? वह कुछ बड़बड़ाई फिर शरमाकर मुस्कुराई और आदमी (पति) को गाली देते हुए बोली-" मैं रिश्तेदार की शादी में गई थी वहीं मिला रहा दीदी ओख्र नास होय....... " मैंने विराम देते हुए कहा- अच्छा, अच्छा, अब कहाँ है वह? करत होई आपन दाई महतारी........ और अपनी लड़की को उठाकर शान से मुँह घुमाकर ऐसे चली गई जैसे बहुत बड़ी धन की गठरी उसके हाथ में हो.......

शाम के तीनों शालाएँ बंद हो जाती हैं। मेनगेट का ताला कभी नहीं लगता। तीनों स्कूल की परछी (दालान) खुली रहती हैं। जिसमें छुट्टा जानवर, जानवरनुमा आदमी, जुआड़ी शराबी, पागल, कबाड़ी, कबीले, बंजारे सब शरण लेते रहते हैं। परछी में आदमियों के जन्म-मरण, जानवरों के जन्म-मरण, भी होते रहते हैं। विद्यामंदिर है... आगे के हाल गुरुजन हल करते रहते हैं। पर जब से, पगली आई है तीनों स्कूलों की जैसे वह मालकिन है। कभी स्कूल की छत पर, कभी मैदान में, कभी टूटी कुठरिया में, कभी हैंडपंप पर गाना-गाती। स्कूल के पीछे कुँआ है और स्कूल से कुछ दूर पर है माई नदी। सब पर पगली का पूर्ण अधिकार है। कभी किसी ने कुछ खाने-पीने को दे दिया, किसी होटल से माँगकर खा लिया। लड़की भी पलने लगी, पगली के साथ-साथ। कोई यदि उससे स्कूल से जाने को कहे तो वह कहती है SSSS पार्षद हमार भाई है वो कहिस है यहीं

रहना। सब खिलखिलाकर हँसते हैं। पगली जैसे सबकी खिलखिलाहट में कुछ खोजती, कुछ शोधती शायद जीवन।

पगली मैदान में लड़की को लिटाकर उसे पुचकारती है, नीतू-नीतू SSSS तेरा नाम नीतू है। पर नीतू रो रही है। भूख से ... पगली दो ईंटों का चूल्हा बनाती है कुछ लकड़ियाँ बीनकर लगाती है और यूँ ही फूँकती है, आग जलाती है, पेट की आग बुझाने के लिए। फिर, ताली बजाकर हँसती है खाना बनेगा.... खाना बनेगा... पर नीतू रो रही है लगातार.... पगली उठती है अच्छा मैं नाच दिखाती हूँ, पगली नाच रही है झूम-झूमकर, घूम-घूमकर। लोग तमाशा देख रहे हैं पगली । पगली झूम रही है, लड़की को चुप कराने का प्रयत्न करती चुटकी बजा रही है जैसे कोई झुनझुना दे रही हो। पगली झूमती है, घूमती है, गिर पड़ती है। नीतू को ओढ़ाकर सो गई है या अचेत है किसे पता?

दूसरे दिन पगली मेरे पास आकर बैठती है। मैं बोली अरे! इतनी सारी चूड़ियाँ किसने पहना दीं तुम्हें। मैं काम करता हूँ ना वहीं से लाया हूँ (शायद ही कोई रंग और नमूना बचा हो जो उसकी कलाई पर न चढ़ा हो, ठीक उसकी जिंदगी की तरह बेमेल और भदरंग) चेहरे पर गर्व और गुमान देखकर मैं हैरान रह गई। ब्लाउज भी अच्छा पहनी है- 'सब दिया है साड़ी ब्लाउज।' मैंने कहा- "आज खाना क्या बनाया है?" मैं नहीं बनाता दीदी- 'मैं होटल में खाता हूँ।' उसकी बातों पर सब मजा लेते हैं।

नीतू के चेहरे पर रौनक आने लगी है। पगली उसे कभी झाड़ के नीचे, कभी मैदान में, कभी छत पर छोड़ कर चल देती। मैंने एक दिन देखा- पगली सचमुच सिर पर तसला धरे गारा ढो रही है। कभी-कभी लगता वसंती पगली नहीं है।- स्कूल आकर देखा, नीतू आम के पेड़ के नीचे, पत्तों से कभी हवा से, कभी सूरज से बतिया रही थी अपने पैर का अँगूठा मुँह में देकर। पहली बार जब उसे हँसते देखा ऐसा लगा जैसे मोर की किरण ओस पर पड़ गई हो। मन ने मान लिया कि धरती माँ सचमूच तुम्हारा विशाल मजबूत हृदय है- हर बेसहारे का सहारा।

स्कूल से लौटते समय ऊपर एक मकान की छत से वसंती आवाज लगाती है- ओ दीदी. ... मोर नीतू पड़ी है..... राह चलते लोग सुनते हैं, मेरी द्रवित आँखे मुस्कुराकर हाँ में उत्तर देती कुछ पल ठहर जाती है। ऐसा लगा समय भी थोड़ी देर के लिए रुक गया है।

नीतू को पगली कभी-कभी नहलाती है कभी-कभी खुद भी बिना ब्लाउज के माई नदी में डुबकी लगा आती है। साड़ी का आधा टुकड़ा सिर पर धरकर कहती है मोर माई ... . मोर का जिंदगी है? नीतू की बड़ी-बड़ी आँखें हैं बाल बरसाती बादलों की तरह काले। नंग धड़ंग नीतू औंधी सोई है धरती के बिछौने पर,

पगली के नेह और आसमान को ओढ़कर। शायद सपने भी देखती होगी सुख के 'पगली ने ताबीजनुमा पोटली नीतू के गले में बाँध दी है, किसी की बुरी नजर ना लगे। फिर देखकर खुश होती है जैसे काले धागे में उसने सुख सूर्य को पोटली में गठयाकर नीतू के गले में बाँध दिया हो।

पैतालीस-पचास की वय पार कर चुका एक अधेड़ व्यक्ति पगली से कुछ कह रहा है। पूछने पर पगली कहती है- "मोर बाप आय. .. महतारी तो मर गई... तो मोरिन पास ... का करूँ दीदी, मोहि आज समोसा खबाइन है और मोर नीतू को ब्रेड बिस्कुट दिया है।" फिर पता नहीं क्या सोच कर हँसती है, बैठ जाती है, जीवन की गुत्थी सुलझाती सी उलझे बालों में उगलियाँ फँसाकर'।

स्कूल से मिलने वाला मघ्याह्न भोजन (दलिया) नीतू और पगली भी खाती है। नीतू में उठकर बैठने का साहस आ गया है। वह टुकुर-मुकुर दुनियाँ की रंगीनियाँ देखने लगी है। घुटनों से स्कूल की परछी (दालान) और मैदान की लम्बाई भी नापने लगी है....

'आबरदा के दाता राम' गर्मी तेज पड़ने लगी है। अप्रैल-मई में भी पगली नीतू को धूप में छोड़कर चली जाती है। नीतू अपनी ममता और जीवन की छाँव ढूँढ़ती अब पैंया-पैंया चलकर हैंडपम्प तक आ जाती है। नल के बने घेरे में पानी की ठंडक है- नीतू वहाँ लेट जाती है। बच्चे नल से पानी पीते हैं नीतू भी मुँह लगाकर पानी पीती है। मुस्कुराती है, खिलखिलाने की उम्मीद लिए।

समय के घोड़े को लगाम देनेवाला तेजी से घोड़ा दौड़ा रहा है। नीतू तीन बरस की हो गई है। पगली की आँखों में आज विवशता है, व्याकुलता है, वह दयनीय सी नजरों से अपने कलेजे के टुकड़े को बेचैन देख रही है। नीतू बहुत खाँस रही है, बुखार से पीड़ित है कई दिनों से पगली कहती है- 'मैं अपन नीतू को झड़वाइन है। दीदी। या धीरे-धीरे सूखत जात है। मैंने कहा- अरे! इसे डॉक्टर को दिखाओ, यह बहुत कमजोर हो गई है। पर... पगली बुरी तरह अपना मानसिक संतुलन खो बैठी है। वह दोनों हाथों से बालों को नोचती है पैसा...कहाँ. . पाऊँ... कुछ देर रोने क बाद हँसती है, आसमान की ओर देखकर अपने सुख सूर्य को अपने वश में करने का प्रयत्न करने के लिए चीत्कार करती है। उसे धीरज बँधाने के प्रयास में मुझे बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी। कुछ लोगों ने कहा- "अरे उसकी लड़की का क्या भविष्य है? वो मर ही जाय तो अच्छा। कुछ ने कहा अरे ये ठीक हो जाएगी, इसी स्कूल में पढ़ लिख जाएगी। जाकी रही भावना जैसी।" वह रोती हुई बोली हमार नीतू झड़वाइन से ठीक होइ -"जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।" धीरे-धीरे नीतू ठीक होने लगी। खिलने लगी

उसके चेहरे पर मुस्कान और हँसने लगी पगली बसंती की आँखें।

मेरे मन में अनगिनत प्रश्न कौंधते। क्या सोचती है बसंती? नीतू के भविष्य के ताने-बाने किन रंगों से बुनती है? कितने मजबूत होंगे उसके ताने-बाने? वह अपने सुख सूर्य को किस तरह पकड़ना चाहती है? घुप्प अंधेरी दुखों की खोट में घुसी वह सूरज को कैसे कैद कर पाएगी? 'जीवन गुलाब का बिछौना नहीं है, काँटों से भरा हुआ है। इन काँटों के साथ खेलने का कयास कर रही है पगली-

पगली कहती है- रात में जाड़ा बहुत रहा दीदी। एक बुड्ढा आया रहन, मोसे ओढ़े को मांगत रहन, फिर हम अपने पास से उसको दू ठन बोरा दिए, कंपकंपात रहन दीदी। वह जताना चाह रही थी कि वह भी किसी की मदद करने को सामर्थ्य रखती है। फिर बड़े अधिकार से कहती है - हम रात में किसी को नहीं घुसने देता दीदी। यहाँ आते हैं दारू पीते हैं, बीड़ी-बोड़ी पीते हैं, गंदा करते हैं- मैं नहीं आने देता किसी को ... उसके लहज़े पर सब हँसते हैं। मैंने देखा परछी में कुछ सिगरेट के टुकड़े -पड़े हैं। मन में अजीब सा कबैलापन भर गया।

पर, मुझे लगाव-जुड़ाव सा हो गया है। बसंती पगली से । नहीं दिखती तो जैसे बच्चों की हाजिरी के साथ नीतू और बसंती की भी गैर हाजिरी दर्ज होती ।

नीतू ने न केवल सूरज के साथ खेलना सीख लिया है बल्कि उसे पकड़ने को कोशिश भी उसे आने लगी है। खपरैली परछी में से घूप को टूकड़े जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं। नीतू पकड़ने का पूरा प्रयास कर रही है। जैसे सचमुच बसंती का सपना पूरा कर देना चाहती है। पर, सूरज तो आखिर सूरज है। कभी यहाँ, कभी वहाँ अँधियारे की क्या बिसात कि उसे पकड़ सके?

आज बसंती के हाथ में साबुन का टुकड़ा है। उसने अपने बालों को खूब धोया है। पीली साड़ी और ब्लाउज भी पीला भदरंगा किंतु, साफ पहना है। उसे देखकर मुझे अचानक हँसी आ गई। मैंने कहा क्या बात है बसंती आज तो तू पूरी बसंती लग रही है। उसका काला रंग और निखर आया है। वह पूरे दाँत दिखाकर हँसती है।- हम बसंत पंचमी को भए रहन ना... जाने कौन घड़ी मोहि पैदा करिस और मर गई। फिर वह बड़बड़ाती चली जाती है। थोड़ी देर में देखती हूँ- बसंती के हाथ में एक आइने का टुकड़ा है- वह अपना चेहरा देखती है हँसती है, बतियाती है, बसंतीऽऽ बसंतीऽऽ हूँ मैं... उसने तेल लगाकर कंघी भी की है। नीतू को फ्रॉक भी पहनाया है- मैंने कहा-इतनी सुन्दर सज-धजकर कहाँ जा रही हो? कहाँ से लाई ये सब कपड़े? 'हम एक बोरा गेहूँ छाना है-50 रुपया में अग्रवाल कने ओहि दीन्ही हैं। मैं नहीं माँगता किसी से । फिर हँसती है। समय के इतने प्रहार कैसे झेल लेती है नारी। वह कहती है- बसंत पंचमी का मेला देखने जाऊँगी। उसने नीतू को गोदी में टाँगा, मटकती

जा रही है... बीच-बीच में पति को हाथ नचानचाकर दाई...महतारी... और ना जाने क्या-क्या गाली भी देती जा रही है।

मेले से बसंती नीतू के लिए पायल लाई है। नीतू ने पायल पहनकर कदम क्या रखा-छनक उठी पैंजनियाँ। फिर तो वह बार-बार छन-छन पैर पटकती रही, घूमती रही, नाचती रही। झूम उठी खुशी से उसकी दुनियाँ और पगली खुशी से ऐसी नाची जैसे बादल को देखकर मोर। देर तक.... फिर पगली आइने का टुकड़ा लाती है। नीतू को उसका खिला-खिला चेहरा दिखलाती है। सूरज की रोशनी आइने पर पड़ती है। फिर, वह अपना चेहरा आइने में देखती है- सूरज चमकता है पगली का चेहरा दमक उठता है। पगली के लिए सूरज सुख है, पुरुषत्व का प्रतीक है। वह उस सुख को कैद कर लेना चाहती है। जीत लेना चाहती है प्रेम से। पगली को लगा, उसने सूरज को जीत लिया है। अँधियारे जीवन को अकेले ढकेलने के प्रयास में जी रही है पगली। एकाएक उदास होकर बैठ जाती है। लगता है- पगली भी अपनी जिंदगी के विषय में जानना चाहती है, पूछना चाहती है समय से रोटी, भूख और परुषता के सवाल' वह जानना चाहती है पुरुष की इतनी निर्दयता के बाद भी वह क्यों करती है उससे प्रेम? क्यों पलता है कोख में जीवन? क्या पुरुष सचमुच सूरज है, नारी अंधियारा? पुरुष प्रश्नकर्त्ता है? परीक्षक है? नारी सिर्फ परीक्षार्थी- सिर्फ जवाबदेही? उसके मन में नदिया बहती धार जैसे थम सी गई।

नीतू दिन मर से मैदान में खेल नही है। वह बहुत थक चुकी है, बहुत भूखी है, अभी बसंती नहीं आई है। स्कूल सूनसान है- मैदान में जानवर कुछ खा रहे है... भूखी नीतू भी कुछ खाने लगी है। शाम गहराती जा रही है। बसंती पुकार रही है- नीतू... नीतू.... मैदान में पड़ी है नीतू। बसंती उसे गोद में उठा कर प्यार करती है। पर, नीतू नहीं बोलती। वह उसे हिलाती है पर,नीतू नहीं बोलती। नीतू के मुँह से झाग सा गिरता है पर, नीतू नहीं बोलती- लहरों का रुदन तेजी से घाट पर सिर पटकने लगा है। पगली अपने कंधे पर नीतू को टाँगे है... नीतू में कोई स्पंदन नहीं है... पाँच दिन से पगली नीतू को उठाने का प्रयास कर रही है। नीतू अकड़ चुकी है। उसका नीला शरीर बदबू देने लगा है। पर, पगली नीतू को काँधे पर दिन रात लिये है... नीतू की जिंदगी में सूरज की रोशनी कैद करने के लिए...

स्त्री का पागल मन इतनी जल्दी हार नहीं मानता। उसने नीतू को लिटा दिया है धरती की गोद में... और धोती की काँछ लगाकर तनकर खड़ी हो गई है मर्दों की तरह। हाथ में लकड़ी उठा ली है और वह आइना जिसमें सूरज कैद कर रखा था, उसके टुकड़े-टुकड़े कर देती है। आसमान की ओर देखकर ललकारती है... पूरे मनोबल के साथ।

संपर्कः सुधा गुप्ता
दूबे कालोनी, कटनी (म.प्र.)

काव्य-कुंज

मेरे सपनों का भारत

✍ गोविन्द शर्मा

तार-तार हो गये
मेरे जीवन के सारे सपने
जैसे मरने के बाद बिखर जाते हैं पक्षियों के डैने
अब मैं जोड़ नहीं सकता टूटे सपनों को
गढ़ नहीं सकता नया सपना
समय नहीं है मेरे पास
कोशिश तो की-
नया महल बना दूं
टूटी नदियों की धारा को जोड़ दूं
गढ़ दूं- एक नया समाज
बहा दूं-शांति और समृद्धि की धारा
ये ही तो थे सपने
संजोया था हमने
मगर......
हे सूरज, चाँद!
तुम सब गवाह हो
मैं रहूं न रहूं
तुम बताओगे
किसने तोड़ा मेरे सपनों को
और,
नहीं बनने दिया
मेरे सपनों का भारत

संपर्क: प्रेम बिहार, इन्द्रपुरी
रोड न०-1, पटना-24

ऐसी नारी चाहिए

✍ डॉ. मधु धवन

आज हमको ऐसी नारी चाहिए,
जो कर सके देश का निर्माण
आज साहसी कर्मरत नारी,
प्यारी राजदुलारी चाहिए
जो कर सके आम आदमी का ख्याल
उनकी जरूरतों का पूरा हिसाब
जो तोड़ सके मानसिक ग्रंथियाँ सबकी
जला दे शापित कुरीतियाँ देश की
आज हमको ऐसी नारी चाहिए
जो देश को पहचान दे सके
हर क्षेत्र के निर्माण में
भरपूर ज्ञान दे सके
सदियों से हो रहा देश का विनाश
अब संभालने का काम कर सके
आज हमको ऐसी नारी चाहिए।
जिसके चेहरे से तेज
ज्वालामुखी-सा फूटता
जिसकी एक झलक से
दुश्मन के छक्के छूट जाएँ
एक बार में ही उनका
रोम-रोम काँप जाए
आज हमको ऐसी नारी चाहिए
जो फौलाद बन अडिग रहे सब कहीं
तैयार कर फौजों को
आतंक को भस्म करे
दुश्मनों के सामने नारी महाकाली बने
आज हमको ऐसी नारी चाहिए

संपर्क: के-3, अन्नानगर (ईस्ट)चेन्नै

नेता से अरज

✍ अरुण कुमार गौतम

देशवा के नेता लोग से हम्मर अरज है
न करऽ नाम बदमान हो।
जन-प्रतिनिधि होके फंड के मालिक
न करऽ लूटे के तू काम हो।।
ख्याबऽ जादे त पचतवऽ न तोरा
उपरे से न पीयऽ तू जाम हो।
नेता के अर्थ व्यर्थ न करऽ
न बनऽ नेता तू हराम हो।।
भोटवा के बेरा अयबऽ गांव नगरिया
घूम-घूम बितयबऽ सुबह शाम हो।
जीत के जयबऽ तब चिंह न पयवऽ
बिन घूस के करव न काम हो।।
करबऽ घोटाला घूस लेवइत धरायबऽ
जेलवा में करवऽ विसराम हो।
अप्पन इज्जतिया माटी में मिलयाबऽ
नहिंए बचयतन तोरा राम हो।।
जात धरम के न झगड़ा बढ़इऽ
न सोचिहऽ कोई खुराफात हो।
लहफइत आग में घी न गिरइहऽ
बिगड़ल बनइहऽ सब बात हो।।
समहरऽ-समहरऽ अब नेता मारे देश के
अब न करायव कत्लेयाम हो।
देश सेवा के समझऽ दौलत से ऊपर
अमर होएत तोर नाम हो।।

संपर्क: अराप, बिक्रम (पटना)

इंसानियत की खोज

✍ राम संजीवन शर्मा

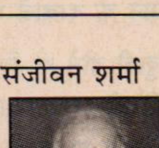

है हिन्दू यहाँ पर कोई, है मुस्लिम यहाँ पर कोई
है बुद्धिष्ठ यहाँ पर कोई, है वैष्णव यहाँ पर कोई
है अगड़ा यहाँ पर कोई, है पिछड़ा यहाँ पर कोई
है हरिजन यहाँ पर कोई, है गुरुजन यहाँ पर कोई
है लाला यहाँ पर कोई, है ग्वाला यहाँ पर कोई
है क्षत्रिय यहाँ पर कोई, है ब्राह्मण यहाँ पर कोई
पर क्या बता सकते हो दोस्तों, है इन्सां यहाँ पर कोई

संपर्क: खाजपुरा, वित्त कॉलोनी, पटना

ग़ज़ल

✍ -डॉ० वन्दना वीथिका

......यूँ पैमाना भरे रहे

जिंदगी का चेहरा बदल गया, हम बनकर आईना खड़े रहे
बारात ख्वाबों की कहाँ गयी, हम सूना शामियाना पड़े रहे।
क्यूँ इंतजार में खड़ी दीवारें, दरवाजे सब खुले पड़े,
तन्हाई भी छोड़ चली, हम खाली आशियाना पड़े रहे!
जुबान नश्तर-सी है, उनकी, जख्म हरा जो किया करे,
सहलाते फिर जख्मों को, हम दिल-दीवाना पड़े रहे!
पीते रहें, वो मस्त रहें, 'वीथिका' बनकर साकी साथ रहे,
शराब गज़लों की खत्म न हो, हम यूँ पैमाना भरे रहे!

संपर्क : हिंदी विभाग मगध महिला कॉलेज, पटना

काव्य-कुँज

एक बार गाकर देखूँगा

डॉ. देवेन्द्र आर्य

लगता है जितना सुख जग में, दुख ज्यादा मन में बजता है,
अनगाए ऐसे पल-छिन को, एक बार गाकर देखूँगा।

हर आँसू का दर्द समेटा, हर पीड़ा का मन सहलाया,
ऋतु बसंत की मस्ती लेकर, पात-पात का मौसम गाया।
रहे न कोई पीड़ा जग की, गुमसुम चुप मेरे गीतों में,
शाख-शाख की हरियाली को मैंने आस-आस दुलराया।

लगता है मरूस्थल में प्यासी मृगतृष्णा का मन बसता है,
बिना बुझी अनगिन प्यासों को एक बार पीकर देखूँगा।

जिनके होंठ सिले हैं भय से, पाँवों में बेड़ी जग भर की,
खँडहर से खँडहर तक बैठी, आस बिचारी जीवन भी की।
उनकी खातिर गंध बेच कर, मैं सुख का सूरज लाया हूँ
बूँद-बूँद में अमृत भर कर कितनी व्यथा हरी निज पर की।

लगता है हिमगिरि से मन में, अगन-अगन सा कुछ जलता है
ऐसी अमन हलाहल पीकर शंकर सा जीकर देखूँगा।

इस दुनिया के कठिन सफर में केवल मैं ही नहीं अकेला,
शहर-शहर कितना एकाकी गाँव गली का बेसुध मेला।
हर मीरा विष पीती चुपचुप, चार चणक भर तुलसी खाते,
संवेदन के शून्य द्वार पर बेबस मन का रोज झमेला,

लगता है जीवन के घट में, निर्वेदन का विष पलता है
अनभोगी ऐसी वेदन से एक बार बिंधकर देखूँगा।

संपर्क: वाणी सदन, बी-18, सूर्यनगर,
गाजियाबाद-201011, उ. प्र.

'राष्ट्रीय विचार मंच' के सदस्यों के लिए एक

आवश्यक सूचना

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक अत्यावश्यक बैठक आगामी 11 जून 2004 को सायं 4 बजे नई दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के सभागार में होगी जिसमें मंच के द्वारा प्रस्तावित पुस्तकों के प्रकाशन से जुड़े मुद्दों के साथ-साथ संगठन एवं पत्रिका के संवर्द्धन पर विचार विमर्श होगा।

सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थीत है।

(सिद्धेश्वर)
राष्ट्रीय महासचिव

तुम्हारे पत्र

-डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

मन की भाषा
भाग्य की लिपि में लिखे-
तुम्हारे पत्र।

बरसते भादों की रात में
जीर्ण हुआ सूत्र तोड़
अचानक ही खोल बैठा
और अचकचा गया।

तुम्हारी रजनीगंधा सी श्वासों से सुवासित वे पत्र
जगह जगह धुंधिया गये हैं,
यकीन ही नहीं होता?
पतझर के पत्तों से
विभिन्न रंग ले बैठे हैं कागज
और अक्षर-
कहीं हैं,
कहीं नहीं!
कहीं मेरी नजर ही तो कमजोर नहीं पड़ गई?

पत्रों में रखे फूल,
छोटी छोटी अन्य वस्तुयें
जन्म-दिन की याद दिलाता रेशमी रूमाल,
मोर के पंख का चन्द्र,
बालों की चिमटी
और उसमें अब भी फँसे किशोर-बाल,
जीवन के सुनहरे खण्ड के मार्मिक इतिहास के जीवंत चित्र!

वर्षा से भीगे बोझिल अंधकार में
बोलने नहीं, चीखने चिल्लाने लगे हैं मोर
घूँघट खोलने लगी है चंचला
बेसुध दौड़ा, भागा चला जा रहा है पवन
मन के दरवाजे पर दस्तकें दे रहा है अतीत...

दुखी होने के लिए
किसी अन्य द्वारा सताया जाना
जरूरी तो नही?

संपर्क : 396, सरस्वतीनगर
'आजाद' सोसाइटी के पास
अहमदाबाद-380015

ग़ज़ल शिल्प ज्ञान

✍नासिर अली 'नदीम'

'उर्दू' एक लोकप्रिय भारतीय भाषा है, जिसका निर्माण हिंदी और फ़ारसी के परस्पर मेल मिलाप से हुआ है। हिंदी के प्रभाव से इसमें अनेक भारतीय भाषाओं सहित संस्कृत भाषा के भी शब्द प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। वहीं दूसरी ओर फ़ारसी के प्रभाव से इसमें फ़ारसी, अरबी, तुर्की सहित अन्य अनेक मध्य एशियाई भाषाओं के शब्द भी प्रचलित हैं। जहाँ एक ओर इस मधुर भाषा की लिपि, फ़ारसी लिपि है, वहीं दूसरी ओर इसके अनेक नियम कायदे हिंदी से लिए गये हैं। यह भाषा भारतवर्ष में आपसी एकता और परस्पर मेल-मिलाप का आधार स्तंभ रही है। लोगों ने जहाँ इसे हिंदी की बहन अथवा बेटी कहा है, वहीं एक शोध के फलस्वरूप इसे शूरसेनी प्राकृत की प्रपौत्री, पश्चिमी हिंदी की पौत्री और दिल्ली भाषा की बेटी माना गया है।

वैसे तो 'शाइरी' या कविताई एक कठिन और दुस्साध्य कला है, परंतु प्रकृति ने जिनके अंदर इस कला के बीज स्वयं ही रोप दिए हों, उनके लिए उन्हें अंकुरित और विकसित करना कोई कठिन कार्य नहीं है। कुछ विद्वानों के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात कवि होता है। सभी मनुष्यों में कवित्व का अंश न्यूनाधिक मात्रा में प्राकृतिक रूप से विद्यमान रहता है, यह अंश जिन लोगों में जितना अधिक होता है, वह उतने ही शीघ्र सफल कवि अथवा शाइर बन जाते हैं।

शाइरी-कला अर्थात् 'अरूज' अपने आप में एक पूर्ण विज्ञज्ञन है। यह विज्ञान, भाषा-विज्ञान एवं स्वय-विज्ञान (गायन कला) को मिलाकर बना है। जैसा सभी जानते हैं कि विज्ञान का विषय सामन्यत: थोड़ा अरुचिकर होता है, उसे पूर्ण मनोयोग के साथ समझ-समझकर ही सीखा जा सकता है। ठीक इसी प्रकार शाइरी-कला के नियमों को भी पूर्ण मनोयोग और धैर्य के साथ पढ़ने और समझने की आवश्यकता होती है। ऐसा करने पर कठिन प्रतीत होनेवाली बात भी आगे चलकर सरल और रुचिकर लगने लगती है।

जिन्हें अपने अंदर कवित्व का अंश पर्याप्त मात्रा में विद्यमान प्रतीत होता हो और उचित प्रयास के बाद, शइरी कला के नियम समझना जिन्हें रुचिकर लगे, यह प्रस्तुति उन्हीं के लिए है। जिन्हें शाइरी के नियम समझना भार प्रतीत हो, कवित्व के अंशों का कुछ अता-पता न हो उन्हें इस ओर से अपना मन हटाते हुए इश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने उन्हें इस कथित 'रोग' से मुक्त रखा। वैसे शइरी के नियम समझना बहुत कठिन भी नहीं है, बस कुछ परिश्रम और धैर्य की आवश्यकता होती है। थोड़ा आगे बढ़ते ही न केवल सब कुछ सुगम और सरल प्रतीत होने लगता है बल्कि एक विशेष प्रकार का आनन्द भी आने लगता है।

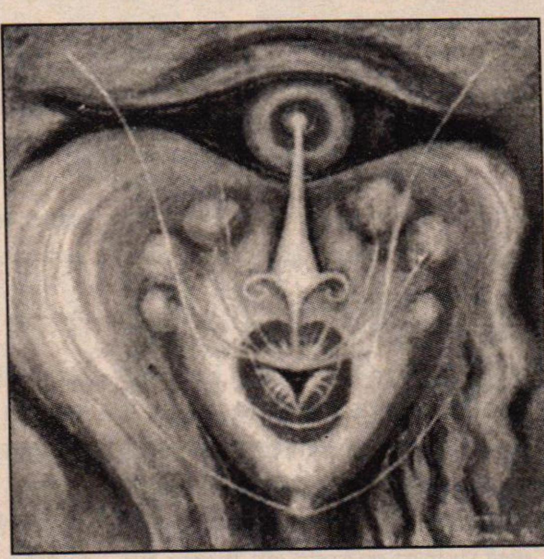

शेरगोई और ग़ज़ल-सृजन के नियमों पर चर्चा करने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले शइरी से संबंधित कुछ आवश्यक बातों की जानकारी कर ली जाए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्नोत्तर के अंतर्गत ऐसे सभी स्वाभाविक प्रश्नों के उत्तर यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जो शाइरी-कला के प्रत्येक विद्यार्थी के मस्तिष्क में सामान्यत: पाए जाते हैं, अथवा जिनकी जानकारी प्रत्येक ग़ज़लकार को होनी चाहिए।

प्रश्न - 'शेर' किसे कहते हैं?

उत्तर - शाइरी के नियमों में बँधी हुई दो पंक्तियों की ऐसी काव्य-रचना को शेर कहते हैं जिसमें पूरा भाव या विचार व्यक्त कर दिया गया हो। 'शेर' का शब्दिक अर्थ है- 'जानना' अथवा किसी 'तथ्य से अवगत होना।'

प्रश्न - 'मिसरा' किसे कहते हैं?

उत्तर - शेर जिन दो पंक्तियों पर आधारित होता है, उसमें से प्रत्येक पंक्ति को 'मिसरा' कहते हैं। 'शेर' की प्रथम पंक्ति को 'मिसरा-एऊला' (प्रथम मिसरा) तथा द्वितीय पंक्ति को 'मिसरा-ए-सानी' (द्वितीय मिसरा) कहते हैं।

प्रश्न-'क़ाफ़िया' किसे कहते हैं?

उत्तर- अंत्यानुप्रास अथवा तुक को 'क़ाफ़िया' कहते हैं। इसके प्रयोग से शेर में अत्यधिक लालित्य उत्पन्न हो जाता है और इसी उद्देश्य से शेर में क़ाफ़िया रखा जाता है, अन्यथा कुछ विद्वानों के निकट शेर में क़ाफ़िया होना आवश्यक नहीं है, परन्तु अपने गुण के कारण अब शेर में क़ाफ़िया की उपस्थिति अनिवार्य हो गई है।

प्रश्न - 'रदीफ' किसे कहते हैं?

उत्तर - शेर में क़ाफ़िया के बाद आने वाले शब्द अथवा श्ब्दावली को 'रदीफ' कहते हैं। 'रदीफ़' का शब्दिक अर्थ है-'पीछे चलने वाली'। क़ाफ़िया के बाद रदीफ़ के प्रयोग से शेर का सौन्दर्य और अधिक बढ़ जाता है, अन्यथा शेर मं रदीफ़ का होना भी कोई आवश्यक नहीं है। रदीफ़ रहित ग़ज़ल अथवा शेरों को 'ग़ैर मुरद्दफ़' कहते हैं।

प्रश्न - 'मलता' किसे कहते हैं?

उत्तर - ग़ज़ल के प्रथम शेर को मतला

से ग्रस्त है। शेख अब्दुल्ला के फारूख अब्दुल्ला और उनके साथ अब उनके पुत्र उमर अब्दुल्ला भी उनके रास्ते हैं। हरियाणा के चौधरी देवीलाल के बाद उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटाला और फिर चौटाला के एक पुत्र विधायक तो दूसरे सांसद के पद पर विराजमान हैं। इसी प्रकार पंजाब में प्रकाश सिंह बादल के पुत्र भी सांसद हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के पुत्र सांसद अखिलेश यादव तथा आंध्र प्रदेश में एन टी रामाराव, उड़ीसा में बीजू पटनायक, केरल में करुणाकरुण तथा तमिलनाडु में

करुणानिधि आदि भी उसी परिवारवाद की परंपरा पर अग्रसर हैं। इसी प्रकार मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात आदि राज्यों में भी कई मुख्यमंत्रियों ने केंद्रीय अथवा राज्यों की विधानसभाओं में अपने निकट परिचितों, संबंधियों या अपनी जाति वालों की उपस्थिति सुनिश्चित की और उनकी कोशिश रही है कि अपने पुत्र, पुत्री व पत्नी को सत्ता सौंप दें।

इस चुनाव के पूर्व कई एजेंसियों द्वारा सर्वेक्षण कराए गए और भविष्यवाणियां की गईं जिसमें राजग को जिताया गया और कांग्रेस के 1999 से भी बुरी हार के अनुमान लगाए गए हैं।

मतदाता को सही निर्णय लेकर सही जनप्रतिनिधियों को चुनने एवं जवाबदेही निश्चित करने का वक्त आ गया है क्योंकि आज देश का सामान्य नागरिक अपने आपको ठगा–सा महसूस कर रहा है। कारण कि केवल पेड़ों को उखाड़ने के साथ चार व छह लेन की चौड़ी सड़क बनाने, फ्लाई ओवर व ई–मेल से सुसज्जित नगर बनाने, युवकों को आई आई टी की शिक्षा देने से देश के बहुतसंख्यक लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। सामान्य जनता की आवश्यकताएं भूख, बेरोजगारी एवं बुनियादी सुविधाओं में राहत के कार्यों में छिपे रहते हैं, कृषि एवं ग्रामीण लघु उद्योगों के विकास के कार्यों में होते हैं जिसकी अनदेखी की जा रही है। परिणामस्वरूप आम जनता की समस्याएं घटने की जगह निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इसलिए समय का तकाजा है कि मतदाता सोच समझकर अच्छी छवि वाले उम्मीदवारों को विजयी बनावें।

चुनाव के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बिंदु पर गौर करना लाजिमी होगा कि व्यवस्था के खिवैया यानी जनप्रतिनिधि को चुनने का अधिकार जब मतदाता को है तो उसे जनप्रतिनिधि को नकारने, खारिज करने का अधिकार भी दिया जाना चाहिए। एक तो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का दुर्भाग्य है कि देश के आधे मतदाता तो लोकतंत्र के इस महानुष्ठान–चुनाव से दूर ही रहते हैं और जो 50 प्रतिशत मतदाता वोट डालते भी हैं तो उनके मत कई उम्मीदवारों में बंटने के बाद मात्र 20–25 प्रतिशत मत पाने वाला प्रत्याशी ही जनप्रतिनिधि बन जाता है। मतदान के प्रति उदासीनता हमारी पूरी व्यवस्था को लेकर एक प्रकार से नैराश्य भाव का भी नतीजा है। हालांकि इसकी एक वजह यह भी है कि मत पाने की कतार में खड़े उम्मीदवारों में से इस योग्य भी नहीं कि उसके हाथ कमान सौंपी जाए। कुछ इसी ख्याल से पिछले भारत के नए मुख्य चुनाव आयुक्त टी एस कृष्णमूर्ति ने भारत सरकार को यह सुझाव दिया था कि जिस मतदाता को अपना जनप्रतिनिधि चुनने का अधिकार है उसे उस जनप्रतिनिधि को नकारने का भी अधिकार दिया जाना चाहिए। किंतु चिंता की बात यह है कि श्री कृष्णमूर्ति के इस अहम सुझाव को सरकार ने खारिज कर दिया और आश्चर्य तो इस बात का है कि चुनाव आयुक्त के इस सुझाव की न तो किसी राजनीतिक दल ने अहमियत समझी और न ही समाज के किसी वर्ग से इसके हक में आवाज ही उठ पाई। इस बात से हम समझ सकते हैं कि जब नकारने का अधिकार देना ही जिन सत्तासीनों को क्रांतिकारी लग रहा है तो उनसे आप मतदान को अनिवार्य बना देने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। निश्चित रूप से मतदान का अधिकार रखने वाले लोगों में से आधे लोग इस प्रक्रिया से दूर रहते हैं, जो अपने आप में लोकतांत्रिक पद्धति की एक बड़ी खामी की ओर संकेत करता है। यदि मतदाताओं को अपने जनप्रतिनिधियों को नकारने का हक मिले तो मुमकिन है नैराश्य भाव में डूबे ये लोग आगे आएं। प्रत्येक चुनाव की प्रक्रिया पर तकरीबन एक हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं पर सारी प्रगति और जागरूकता के तमाम दावों को मतदान का नीचा प्रतिशत बौना साबित कर देता है। ऐसे में मतदाताओं को अपने जनप्रतिनिधियों को खारिज करने के हक देने का प्रयोग होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि राजनेता, राजनीति और चुनाव प्रणाली पर से भरोसा उठते चले जाने के इस दौर में यह बात बेमानी हो चली है कि जनप्रतिनिधि की सबसे बड़ी अदालत का जज मतदाता होता है। क्योंकि अदालत का जज ही फैसला देने की अपनी जिम्मेदारी से भागना चाहता है। इस दृष्टिकोण से कम से कम मतदान का हक रखने वालीी आधी जनता के दूर खड़े होकर तमाशा देखने की प्रवृति को थामने का कोई तो तरीका होना चाहिए। इसके लिए जनप्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार भी मतदाताओं को मिलना चाहिए।

मतदाता को सही निर्णय लेकर सही जनप्रतिनिधियों को चुनने एवं जवाबदेही निश्चित करने का वक्त आ गया है क्योंकि आज देश का सामान्य नागरिक अपने आपको ठगा–सा महसूस कर रहा है। कारण कि केवल पेड़ों को उखाड़ने के साथ चार व छह लेन की चौड़ी सड़क बनाने, फ्लाई ओवर व ई–मेल से सुसज्जित नगर बनाने, युवकों को आईआईटी की शिक्षा देने से देश के बहुतसंख्यक लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। सामान्य जनता की आवश्यकताएं भूख, बेरोजगारी एवं

नया भारत : नया सवेरा

✍डॉ. देवेन्द्र आर्य

लो, चुनावों का मौसम फिर आ गया और हमारे सामने अनेक चुनौतियों, जिम्मेदारियों, आशाओं, आकांक्षाओं का नया सवेरा अपनी पिटारी खोल कर बैठ गया हैं बचपन में एक कहानी पढ़ी थी—-एक फूलकुमारी की, जो किसी बात पर रूठ जाती है। वह रूठती है तो सारा मौसम रूठ जाता है, फूल खिलना छोड़ देते हैं, चिड़िया चहकना छोड़ देती है, भौंरे गुंजार नहीं करते। सब अपने–अपने तरीकों से फूलकुमारी को हंसाने की चे टा करते हैं। कहानी वाली फूलकुमारी एक राजकुमार के करतबों पर रीझ कर हंस पड़ती है तो सारे राज्य में खुशी का माहौल छा जाता है। चुनावों के मौसम में वोट की फूलकुमारी रूठ गई है, छोटे–बड़े सभी दल अपने–अपने तरीकों से वोटकुमारी को रिझाने की चे टा में हैं। जिसने कभी पलंग से नीचे पैर नहीं रखा, गुलाब की पंखुरियों से जिसके गाल पर खरोंचे पड़ जाती हैं, वही आज रोड ो निकालते हैं, झोपड़ियों में जाकर नंगे–अधनंगे बच्चों को लगातार प्यार का नाटक कर रहे हैं, गरीब विधवा की हजार छिद्र वाली साड़ी का नया संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं, अनेक कोठों से तस्वीरें खींची जा रही हैं और अखबारों में, मीडिया में उभार–उभार कर छापी और प्रचारित की जा रही हैं।

कोई गाड़ियों के काफिले को रथ की संज्ञा देकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक की दौड़ लगा रहा है तो किसी को ख्वामखाह दर्द हो रहा है। कोई जन्म–जन्म की दुश्मनी को भुलाकर गले मिलने की नौटंकी कर रहा है, कोई सीटों के बंटवारे को लेकर आनन्दमगन नहीं है पर आनन्दमगन होने का नाटक कर रहा है यानि कि सभी इस फिराक़ में हैं कि जैसे भी बने, एक बार उनकी वोटकुमारी नहीं ! नहीं ! फूलकुमारी प्रसन्न हो जाए, सत्ता की माला उनके गले में डाल दे–बस ! बाद में किसने देखा है, और पांच साल के लंबे समय में तो बहुत कुछ आगे–पीछे किया जा सकता है, करेंगे भी। जनता का क्या है ? आम आदमी तो रोने के लिए पैदा होता है। देश ? देश मेरे दल और मेरी कुर्सी से बहुत छोटा है। मेरी कुर्सी बनी रहे, बाकी कुछ रहे तो ठीक, न रहे तो ठीक ! इतने बड़े जहान में किस–किस की फिक्र करें ? अपने ग़म क्या कम हैं ? प्रजातंत्र था क्या है, वह तो समर्थ का ढोल है, और ढोल में पोल है, जितना बजाया जा सके बजाओ, जितने जोर से बजाओगे उतने ही निरीह–बेबस आपके चारों ओर घिर आएंगे। दूसरों का चेहरा चाहे जितना उजला हो, आप उन्हें निरा काला भ्र टाचार की घिनौनी कालिख से पुता बनाओ और अपना चेहरा चाहे कितना ही काला है, कालिख पुता हो से हमेशा उजला बताओ, हो सके तो किसी अच्छे से ब्यूटी पारलर से उजला बनवाकर ले जाओ, सफेदी की दो चार गहरी पर्तें चढ़वाकर ले जाएं, अपने को ही दूध का धुला बताएं। आप उन्हें वायदों की खूबसूरत दुनिया में ले जाएं, लुभावने भवि य की लोलीपाप देकर उनका मनोरंजन करें, उन्हें दुखो–तकलीफों से निकाल कर सपनों के फाइव स्टार में डिनर कराएं, उनके हाथों से वोट की सोनपरी छीनकर रफूचक्कर हो जाएं, कौन तुम्हारे पीछे–पीछे भाग रहा है ? और इन्द्रधनु ी नोट की चकाचौंध वे भी अंधे से हो जाएंगे––बस ! फतेह तुम्हारी है।

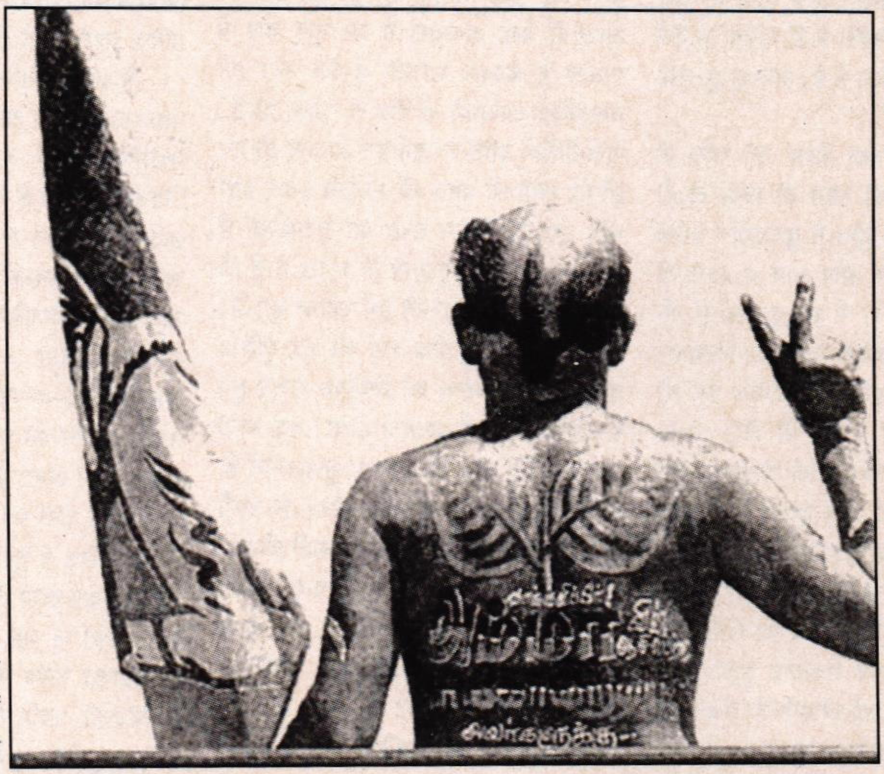

ये है स्वार्थपरक राजनीतिज्ञों की सोच। सच, आजादी और आजादी के कुछ वर्षों बाद तक की तपः पूत पीढ़ी के अवसान के बाद जो कुछ इस देश में हुआ है, वह नितांत अशोभनीय हुआ है। उस समय यह सोचकर आश्चर्य होता था कि अमुक मिनिस्टर रिश्वत लेता है और आज यह सोच कर आश्चर्य

होता है कि अमुक मिनिस्टर रिश्वत नहीं लेता। सत्ता की पीनक में सब घोर अफीमची हो गए हैं; लोलुपता की अंधी दौड़ में सब शामिल हैं। सभी राजसत्ता का चीरहरण कर रहे हैं, जिसके हाथ में जितना चीर आ गया है, वह उसी को लेकर भागा जा रहा है सबके लक्ष्य जैसे एक अंधे कुएं में जाकर समाप्त हो गए हैं। लेकिन एक मैं पागल हूं जो इस बदले माहौल में भी किसी कृष्ण के आने की इंतजार में बैठा हूं, सोचता हूं द्रौपदी का चीर बचाने कोई तो आएगा। यहां तो दुःशासन और अंधे धृतराष्ट्रों की लंबी लाइन लगी है, भीष्म पितामह पहले की तरह ही सिंहासन से बंधे हैं, विदुर की नीति न तब चली थी और न आज चलने की स्थिति में हैं, पांडव तो वैसे भी ग्रीतदास की भूमिका में है। सोचता हूं–क्या होगा ?

पर आप मेरे 'क्या होगा' की सोच से निराश न हों। स्वार्थी लोग तो सदा से ही राजलक्ष्मी का अपने हित में दुरुपयोग करते रहे हैं और अगर हम और आप न जागे तो आज भी करते रहेंगे। मैं तो इन लोगों की मुखौटा चढ़ी तस्वीर की वास्तविकता दिखाकर आपको जगाना चाहता हूं। लेकिन हम भी जागें तो कैसे जागें ? हम भी जैसे अपना सारा ईमान धर्म बेचकर इनके पिछलग्गू बने हुए हैं। अपनी ऊर्जा और चेतना को उनके हाथों गिरवी रख दिया है। दिमाग से पैदल हो गए हैं हम। इन्होंने हमारे सामने जाति–वर्ण–धर्म–अमीर–गरीब का रोना रोया तो हम भी मुंह ऊपर उठाकर हुआं–हुआं करके रोने लगे; धर्म को जोड़ने का तंत्र नहीं, तोड़ने का मंत्र समझकर एक दूसरे से भिड़ गए और इस भिड़ने में हमने यह नहीं देखा कि पर्दे के पीछे से जो कठपुतली की डोरियां चला रहा है उसका मकसद क्या है ? बस, हमसे कहा और हम वर्षों की दोस्ती–पारी, भाई चारा भूलकर उलझ गए। वस्तुतः हम अपने स्वरूप को भूल गए हैं। मैं सच्चाई का शीशा लेकर आपको आपका वास्तविक स्वरूप दिखा देना चाहता हूं। आज हम प्रजातांत्रिक व्यवस्था में रह रहे हैं। हमारे कुछ अधिकार हैं तो कुछ कर्तव्य भी हैं। हम अधिकारों की बात करें, अच्छी बात है, पर कर्तव्यों की बात भी साथ–साथ करें तो और भी अच्छी बात होगी। एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति ने कहा था कि यह मत सोचो कि अमेरिका ने तुम्हारे लिए क्या किय सोचो कि तुमने अमेरिका के लिए क्या किया ? सच है, व्यक्तिगत स्वार्थों से देश बहुत बड़ा है, बहुत ऊंचा हैं देश है तो हम सब हैं, देश ही नहीं तो हम सब का क्या होगा ? हम देश के बारे में सोचें। अगर देश में एक भी जन भूखा है, अभावग्रस्त है तो हमारे सारे सुख–वैभव क्षुद्र पड़ जाते हैं। एक आह हजार–हजार शहीदों का खत बहाकर यह आजादी प्राप्त की है। आंसू की एक बूंद का मोल सात–सागरों से भी बड़ा है। यह आजादी बड़ी अनमोल है पर कई बार में एकांत में बैठकर सोचता हूं कि क्या हम वास्तविक आजादी के दौर से गुजर रहे हैं। राजनीतिक दृष्टि से चाहे हम आजाद हो गए हों पर अभी भी बहुत सी गुलामी हमारे हाथ बांधे हुए है। तमाम तरह की गुलामियां हैं कहीं हम आर्थिक गुलामी के चंगुल में हैं तो कहीं सामाजिक गुलामी हमें जकड़े हुए हैं। जाति, वर्ण, ऊंच–नीच, धर्म की क्षुद्र वृतियां हमारे समस्त चैतन्य को निष्क्रिय बनाए हुए है। हमें इन सबसे उभरना होगा। क्या फर्क पड़ता है कि कोई हिंदू है या मुसलमान है, सिक्ख है, ईसाई है या कोई और। हम सभी भारत माता की संतानें है। हम सबकी शिराओं में एक ही रक्त प्रवाहित है। हम नन्दनकानन के पुष्प हैं, सबकी अपनी खुशबू है, रंगों–आब है। एक फूल से उपवन नहीं बनता सभी फूल और भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल मिलकर उपवन बनाते हैं। हम सभी के अलग–अलग बनाते हैं। हम सभी के अलग–अलग चूल्हें हैं, कभी साझा–चूल्हा बनकर भी देखिए। एक समान भाई–चारा महसूस करके तो देखो। कान्ह की वंशी और अजान के स्वरों के सम को हृदय में उतार कर तो देखो–एक नया परिदृश्य आपके सामने खुल जाएगा, एक नई ओर खुशियों के नए–नए वन्दनवार आपके द्वार टांक जागी। सोचो, हम जब भी अलग हुए हैं, आपदाओं ने हमारे द्वार खटखटाए हैं और जब भी हाथ की पांचों अंगुलियां मिलकर एक मुट्ठी हो गई है, आंधियों के रूख बदल गए हैं। सोचो, एक नया भारत जन्म ले रहा है, एक नया सवेरा आपकी प्रतीक्षा में है। बहुत सोच–समझ कर चलने की आवश्यकता है। आपका एक–एक वोट कीमती है। राष्ट्र निर्माण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। आप अपने चारो ओर देखें, खुद जागें औरों को जगाएं। बहुत से लोग अपना–अपना स्वार्थ लिए, अपने–अपने झंडे और नारे लेकर आपके द्वार पर आएंगे, आप सबकी बातें सुनें और देखें–परखें कि इन जुआरियों में जौहरी कहां छिपा है, चमकीले वायदों में सच्चे कार्य का, सच्चे विकास का हीरा कहां छिपा है ? आपको देश का निर्माण करना है, बस इसी पवित्र चश्मे से देखें।

मैं आपकी शक्ति को जानता भी हूं और पहचानता भी हूं। आपमें ऊर्जा का अनंत स्रोत प्रवाहित है। मैं जानता हूं कि जब आप निश्चय कर लेते हैं तो आपकी शक्ति, आपकी ऊर्जा हर तूफान में हिमालय सी अटल बन जाती है, आपदाओं का मुख मोड़ देती है, आकाश की बिजलियों को थाम कर वक्त की मुश्कें कस देती हैं, गहरी खाइयों–गिरि–कन्दराओं में सृजन–बीज बोकर नन्दन कानन को धरती पर उतार लाती हे, ब्रह्माण्ड की अनंत ऊंचाइयों में अपने परचम फहरा कर उस पर अपना नाम लिख देती है। इसीलिए मैं तुझसे प्रश्न करता हूं, तुम्हें झकझोर कर जगा देना चाहता हूं। आज देश नई करवटें ले रहा है। विकास और प्रगति का महारथ गरीब की कुटिया तक गतिमान है। बिजली, पानी, सड़क यातायात आदि ही नहीं, आधुनिक युग और जीवन की सभी सुख–सुविधाओं से गांव–घर–आंगन का नूतन श्रृंगार हो रहा है, बस आप जागते रहना। उठो, सभी खिड़की, दरवाजे और वातायन खोल दो। देखो तो ! न जाने कब से नया सवेरा आने को बेचैन है......।

संपर्कः 'वाणी सदन',बी–98, सूर्य नगर, गाजियाबाद–201011

आडवाणी की भारत उदय यात्रा

विचार कार्यालय, दिल्ली

विगत दस मार्च से कन्याकुमारी से प्रारंभ भारत के उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी की 33 दिवसीय तीसरी भारत उदय यात्रा 121 लोकसभा क्षेत्रों से गुजरते हुए यह केंद्र सरकार की उपलब्धियों को बताने, गिनाने, समझाने के लिए आयोजित की गई ताकि फीलगुड को जन–जन तक पहुंचाया जा सके। इस यात्रा का अंत होगा अयोध्या में। श्री आडवाणी के अनुसार इस यात्रा में वह भारत को विकसित राष्ट्र और महाशक्ति बनाने के लिए वोट माँग रहे हैं। दरअसल जब–जब चुनाव आता है भाजपा अपने को कमजोर महसूस करते हुए मंदिर का सहारा लेती है। इस बार रथ–यात्रा की घोषणा में श्री आडवाणी ने पक्का भरोसा जताया कि वाजपेयी सरकार के तहत ही मंदिर बनेगा। ऐसा देखा गया है कि जब–जब रथ–यात्रा होती है मंदिर का मामला गरमाता है, अल्पसंख्यक खौफजदा हो जाते हैं और उन्हें घर में राशन भरने और कर्फ्यू झेलने की चिंता सताने लगती है। आडवाणी जी की इस तीसरी यात्रा का हश्र क्या होगा, यह तो समय ही बताएगा। बहरहाल भारत उदय का हश्र यह है कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है और बेरोजगारों को खाने के लाले पड़ रहे हैं। भ्र टाचार अपना पांव पसारता जा रहा है। घोटालों एवं अन्य आपराधिक गतिविधियों में फंसे नेता धीरे–धीरे अपने कुकर्मों पर विजय प्राप्त कर मुक्त होते जा रहे हैं। देश के कर्जे के भार से दबता जा रहा है। हमारी सभ्यता पर पश्चिमी संस्कृति का मोटा आवरण जमता जा रहा है। चुनाव का शंखनाद होते ही राजनेताओं द्वारा आश्वासनों एवं वादों के झुनझुने थमाए जा रहे हैं। चुनावी नारों में 'भारत उदय' हो चुका है और भारती जनता 'फील गुड' कर रही है फिर भी पार्टियां परेशान हैं क्योंकि 'भारत उदय' का ब्रांडयुक्त विज्ञापन अभियान बहुरा ट्रीय विज्ञापनी अभियानों को मीलों पीछे छोड़ता दिखाई दे रहा है। जाहिर है सरकार अपनी उपलब्धियों की चकाचौंध से आम जनता को भ्रमित करने की कोशिश कर रही है। कुछ दिनों पूर्व मेवात से आए किसानों के बीच आडवाणी जी ने स्वयं माना था कि देश में 'फील गुड' की हवा तो बह रही है लेकिन उसके झोंके ायद अभी तक गाँवों में नहीं पहुँच पाए हैं। विकास का लाभ गाँव तक न पहुँचने का मतलब है देश की साठ प्रतिशत से अधिक आबादी भाजपा के 'फील गुड फैक्टर' की लहर से

अछूती है। यदि विकास में उसकी कोई हिस्सेदारी नहीं है तो विकसित भारत के सपनों का क्या होगा ? शायद, कुछ इसी ख्या से तो नहीं इसी अपेक्षित आबादी से, संपर्क साधने और समझाने के अभियान पर निकल पड़े हैं आडवाणी जी।

भारत युवकों की स्थिति आज यह है कि सन् 2007 तक चार करोड़ बेरोजगार युवाओं की फौज तैयार हो जाएगी। संभव है कि इसकी वजह से देश में गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक संकट खड़ा हो जाए। लोकतंत्र में वोट की कीमत सबकी समान होती है चाहे वह गरीब हो या अमीर, रोजगार में हो या बेरोजगार उसके वोट के बिना कोई भी राजनीतिक दल और उसके नेता सत्ता के शीर्ष तक नहीं पहुँच सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि आडवाणी जी की भारत उदय यात्रा इसी बेरोजगारों को मनाने के लिए रथ पर सवार होकर निकल पड़े हैं।

दो चरणों में होने वाली उनकी यात्रा कुल 7872 किलोमीटर का रास्ता तय करेगी। यात्रा के दौरान आडवाणी के साथ उनकी पत्नी कमला आडवाणी, केंद्रीय कानून मंत्री अरुण जेटली, पार्टी महासचिव प्रमोद महाजन तथा यात्रा के राष्ट्रीय संयोजक प्रकाश जावेदकर भी उनके साथ हैं।

केरल के विचार प्रतिनिधि का कहना है कि भारत उदय रथ पर सवार आडवाणी जी का सुखाग्रस्त केरल में भाजपा के राजनीतिक विरोधियों के कड़े प्रतिरोध का सामना इसलिए करना पड़ सकता है कि केरल के लिए 49 करोड़ रुपए की सहायता राशि की घो णा राज्य की भयावह स्थिति और 1359 करोड़ रुपए की उसकी माँग को देखते हुए यह ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। चुनाव के ठीक पहले प्रारंभ किए गए राजग सरकार के 'भारत उदय' अभियान के चलते भी राज्य में भाजपा के पक्ष में लहर नहीं बन पाई। वैसे भी केरल भाजपा के लिए अब तक राजनीतिक मायने में बंजर भूमि ही रही है। यदि सूखे की स्थिति लंबे समय तक रहती है तो राज्य की अर्थव्यवस्था गहरे संकट में पड़ जाएगी क्योंकि कई करोड़ रुपए की फसल बर्बाद हो चुकी है जबकि कई कस्बों और गाँवों में पेय जल का संकट पैदा हो गया है।

आडवाणी की यह तीसरी लंबी यात्रा है। पहली 1990 में अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए जन समर्थन लेने के संबंध में थी। दूसरी बार उन्होंने 1997 में स्वर्ण जयंती यात्रा की थी जिसका उद्देश्य देश की आजादी के 50 साल पूरे होने पर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देना था। सात–सात साल के अंतराल पर की जा रही इस तीसरी यात्रा उन्होंने राजग सरकार की पिछली पांच साल की उपलब्धियों के आधार पर अगले पांच सालों के लिए केंद्र में दोबारा सरकार बनाने के लिए जन समर्थन माँगने के मकसद से

14वी लोकसभा : किसे वोट दें

✍यू. सी. अग्रवाल

तेरहवीं लोकसभा के भंग होने के उपरांत चौदहवी लोकसभा के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। 20, 22, 26 अप्रैल एवं 5 और 10 मई, 2004 को संपन्न होने वाले पांच चरणों के चुनावी दंगल में सभी राजनीतिक दल कमर कसकर उतर चुके हैं। 1952 से अपने अधिकारों के प्रति सजग जनता ने अपने मतों का प्रयोग कर मतदान के महत्व को पूरी तरह समझ लिया है। जनता अब प्रौढ़ बन चुकी है। विगत वर्षों की अवधि ने उन्हें क्या दिया, उन्होंने कितना खोया, कितना पाया—इसका जोड़–घटाव भली–भांति व्यक्तिगत या चौपाल में कर जनता रहती है।

अब, जब कि सभी राजनीतिक दल अपने घोषणा–पत्र के साथ चुनाव के मैदान में आ चुके हैं, चुनाव की गर्माहट देश की जनता महसूस करने लग गई है। शीघ्र ही उनके मतों से चुनकर आए प्रतिनिधियों द्वारा 14वीं लोकसभा का गठन कर दिया जायेगा। सभी दलों ने जैसा कि सामान्यतया हो रहा है, उन सभी लुभावने वायदों का समावेश करना नहीं छोड़ा है जिसे वे विगत चुनावों में करते रहे हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ जेहाद छेड़ना, गरीबी उन्मूलन, बेकारी दूर करना, उत्पादित चीजों की कीमतों व अवमूल्यन दर को नियंत्रण में रखना, स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना, सभी नागरिकों को शिक्षा और आवास की सुविधा मुहैया कराना, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक, जो सभी दलों के लिए वोट बैंक समझे जाते हैं, उनके हितों की भरपूर रक्षा करना आदि शामिल हैं।

13वीं लोकसभा के पूर्व के निर्वाचनों में प्रायः कुछ महत्वपूर्ण दल अपने बूते सरकार बनाने का दावा करते रहे थे। किंतु राजग की गठबंधन सरकार की लगभग पूरी अवधि तक शासन देने के बाद अब प्रमुख राजनीतिक दल गठबंधन की राजनीति की घोषणा पत्रों के साथ इस बार मैदान में उतरी हैं।

पूरे भारतवर्ष में आज की तिथि में कोई भी राजनीतिक दल आम जन सहयोग या समर्थन के अभाव में अकेले ही बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं है। हंग संसद की स्थिति को टालने क उद्देश्य से ही गठबंधन की राजनीति की प्रेरणा आई है, न कि सिद्धांतों का कोई गहरा लगाव ऐसे उद्देश्य के पीछे है।

वर्षों से राजनीतिक दल अथवा राजनीतिक हस्तियां जनता को दिए गए अपने वायदे को पूरा न कर सकने के कारण, अपने घोषणा पत्र की विश्वसनीयता खो देने के कारण

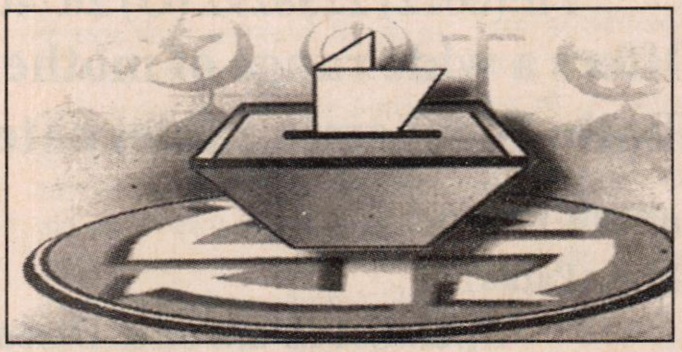

आम जनता के बीच अपनी छवि ठीक नहीं बना पाए हैं। भ्रष्टाचार–मुक्त कुशल प्रशासन आज तक जनता को नहीं मिल पाया है। केंद्र में अथवा राज्य में कमोवेश किसी समय में सभी दलों को सत्ता में रहने का अवसर मिला है। कांग्रेस पार्टी तो केंद्र में लगातार लंबे समय तक सत्तासीन रही है।

13वीं लोकसभा के पूर्व गठबंधन के द्वारा गैर–कांग्रेसी दलों ने केंद्र में जो प्रयास किए, दुर्भाग्यवश सभी क्षेत्रों में असफलता की जीती जागती पहचान बन कर रह गए। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक विफलता एवं गिरावट ने जनता और देश को निराशा में डूबो दिया। गैर कांग्रेसी सरकारों ने देश में व्याप्त बड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान नहीं ढूंढ़ा, बल्कि कुछ नई सामाजिक एवं धार्मिक तनावों को जन्म दे दिया। उनके शासन काल में भारत राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में पिछड़ गया।

वर्षों तक केंद्र में सत्तासीन रहीं कांग्रेस पार्टी भी यह दावा नहीं कर सकती कि देश की मौलिक आधारभूत समस्याएं, जैसे गरीबी, बेरोजगारी, जनसंख्या–वृद्धि, आर्थिक विकास की दर जैसे क्षेत्रों में उसने कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की हो। सामाजिक क्षेत्र, स्वास्थ्य सुविधाएं, आवास और जलापूर्ति के क्षेत्र में भी स्थिति दयनीय है। आज भी बड़ी संख्या में लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर कर रहे हैं तथा गरीबी से जुड़ी अनेकों समस्याओं का सामना कर रहे हैं। आजादी के समय समाज में भ्रष्टाचार, अपराध और हिंसा की कमी के कारण भारतीय आर्थिक, सामाजिक या प्रशासनिक दृष्टि से अधिक प्रसन्न थे।

समय के अन्तराल में प्रशासन और उच्च पदों पर भ्रष्टाचार इस हद तक व्याप्त हो चुका है कि जनता के सामने इसके सिवा कोई दूसरा विकल्प ही नहीं बचा है कि 'यही उनकी नियति है' कि विवशता झेलते रहें। जनता भ्रष्टाचार पर बात करना अब मुनासिब नही समझती, क्योंकि राजनीतिक दलों के ऐसे वायदे उन्हें मात्र खोखले प्रतीत होते हैं, नेताओं की मंसा से भरोसा ही उठ चुका है। उन्होंने देखा है कि हर चुनाव के बाद भ्रष्टाचार में बढ़ोतरी पहले की तुलना में अधिक हो गई है। भ्रष्टाचार का खेल जो शायद हजारों रुपए से शुरू हुआ था वह अब अरबों में खेला जा रहा है।

बोफोर्स में 64 करोड़ रुपए की चर्चा हुई, कुछ समय बाद बैंक सेक्यूरिटी स्कैम में चार हजार करोड़ रुपए का स्कैम बताया गया, टेलीकॉम स्कैम की रकम उससे भी ज्यादा बतायी जा रही है, आज तो तेलगी स्टाम्प घोटाला को देश के उन सारे घोटालों से ऊपर बताया जा रहा है, जिनके आगे चारा घोटाला जैसे अन्य घोटाले को लगता है, जनता नहीं याद रख सकेगी। इसी 10 मार्च

राजनेता, चुनाव और मतदाता

✍ सिद्धेश्वर

लोकतंत्र में चुनाव और चुनाव में भाग लेने वाले मतदाता ही आधार होते हैं। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत की 14वीं लोकसभा के लिए चुनाव आयोग द्वारा मतदान कार्यक्रम की घोषणानुसार पांच चरणों में क्रमशः 20 अप्रैल को कुल 141 सीटों, 22 अप्रैल को केवल त्रिपुरा में, 26 अप्रैल को 137, 5 मई को 83 तथा 10 मई 2004 को 182 सीटों के लिए चुनाव संपन्न होंगे। मतगणना आंध्र प्रदेश को छोड़कर 13 मई को होगा। पहली बार देश भर के कुल 67 करोड़ 50 लाख मतदाता हैं। इसके लिए कुल 10. 75 इलेक्ट्रॉनिक्स वोटिंग मशीनों (इ वी एम) का इंतजाम किया गया है। इस लोकसभा चुनाव के साथ कर्नाटक, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश तथा सिक्किम के विधानसभाओं के लिए चुनाव होंगे। चुनाव आयोग ने चुनावी प्रक्रिया की निगरानी के लिए कुल 2750 पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की है। बिहार की परबत्ता एवं शिवहर विधानसभा के उपचुनाव के लिए भी वोट डाले जाएंगे।

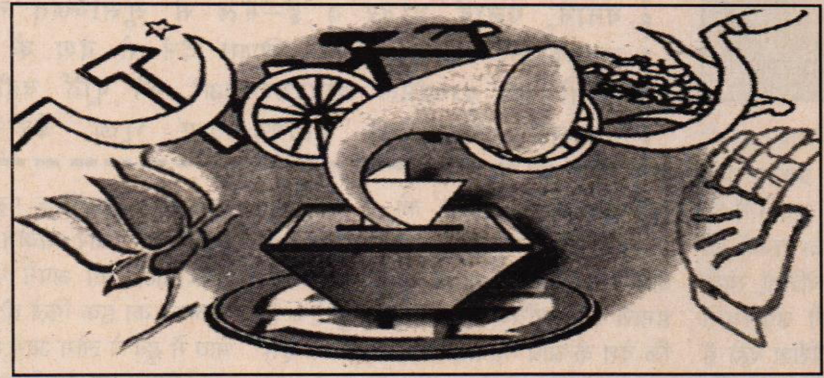

कहना नहीं होगा कि यह चुनाव जहां 'फील गुड' तथा 'भारत उदय' के साथ अटल बिहारी वाजपेयी के विकास पुरुष के रूप में अग्नि परीक्षा है वहीं सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की। साथ ही क्षेत्रीय दलों में तेलुगु देशम, समाजवादी पार्टी, अन्नाद्रमुक, शिव सेना, राष्ट्रवादी तृणमूल कांग्रेस, जद (यू) की भूमिका भी सरकार बनाने में अहम होगी। इस चुनाव की एक बड़ी विशेषता यह है कि अन्य आयु वर्ग के मुकाबले युवा मतदाताओं की भारी भरकम उपस्थिति है, जो बेरोजगारी से परेशानहाल हैं। चुनावी घोषणा के बाद दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा चुनाव में उतरने वाले उम्मीदवारों की बकाया देनदारियों का विवरण सार्वजनिक करने का जो निर्देश निर्वाचन आयोग को दिया है वह स्वागत योग्य है क्योंकि संसद के दोनों सदनों के 656 वर्तमान एवं पूर्व सदस्यों पर लगभग 17 करोड़ रुपए की राशि देनदारियां शेष हैं जो टेलीफोन और बिजली–पानी के बिल से संबंधित हैं। उल्लेख्य है कि उन्हें डेढ़ लाख यूनिट टेलीफोन कॉल, 50 हजार यूनिट बिजली और 4 हजार किलोलीटर पानी प्रतिवर्ष मुफ्त में उपयोग करने की छूट है। इसके बाद भी इतनी भारी रकम की देनदारियां हैं जिसके बारे में आम मतदाताओं को जानकारी होनी चाहिए ताकि वे अपने उम्मीदवारों के नकारात्मक पक्ष को भी जान सकें। निःसंदेह मतदाताओं के लिए यह लाजिमी हो जाता है कि वे अपने उम्मीदवारों के गुण–दोष की परख अच्छी तरह अपने प्रतिनिधि का चयन करें। अपने प्रत्याशी के बारे में पूरी जानकारी रखने वाला मतदाता ही तो लोकतंत्र की नींव है। इस परिप्रेक्ष्य में अदालत के निर्देश और उसके अनुपालन से कुछ तो अंकुश लगेगा, ऐसी आशा की जा सकती है। इस फैसले से यह सिद्धांत सुदृढ़ होगा कि कानून सबके लिए समान है, यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र की उम्र बढ़ने के साथ ही उसके दोषों का निवारण हो रहा है। संभव है अगले चुनाव में कुल मतदान का प्रतिशत बढ़ाने और उम्मीदवार की जीत के लिए सर्वाधिक वोटों की बजाय स्पष्ट बहुमत के प्रावधान के लिए भी कुछ ठोस कदम उठा लिए जाएं। यही नहीं इस चुनाव के पूर्व यहां जिस प्रकार किसी को किसी से परहेज नहीं रहा, पार्टियों की विचारधाराओं और नीतियों का जमाना खत्म हो गया, उस स्थिति में दल–बदल रोकने के लिए और सख्त कानून की आवश्यकता है।

चुनाव और हिंसा में चोली–दामन का संबंध है। राजनीतिक दल भले ही एक दूसरे पर अपराधियों को संरक्षण देने के आरोप लगाते रहे हैं किंतु सच्चाई यह है कि प्रायः सभी दलों ने आपराधिक प्रवृति के लोगों को संरक्षण दिया है जिसके चलते चुनाव के दिनों में हिंसा और बूथ कब्जे की घटनाएं घटती रही हैं। इसी प्रकार उग्रवादी तथा देशद्रोही तत्वों के अतिरिक्त नक्सलवादियों ने भी प्रत्येक चुनाव के दौरान चुनाव बहिष्कार का फतवा देते रहे हैं, खासकर बिहार तथा आंध्र प्रदेश में पिपुल्स वार ग्रुप और एम सी सी जैसे संगठनों ने अपने फतवे को लागू कराने के लिए बंदूकें भी चमकाती रही हैं। जातीय समीकरण को केंद्र में रखकर इन चुनावों में उम्मीदवारों का यहां चयन किया जाता है और उस आधार पर मतदाताओं की दबंगियत की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था को आजादी के बाद अपने देश के संचालन के लिए हमने अपनाया है उसमें कुछ परिवारों के इर्द–गिर्द मिथक बनाकर उन्हें शासन करने के नाम पर उनका परिवारवाद चल रहा है। इसी परिवारवाद के एक उदाहरण है कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया जी। मोतीलाल नेहरू से प्रारंभ कांग्रेस पार्टी जवाहर लाल नेहरू से होते हुए इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और आज सोनिया गांधी प्रधानमंत्री की दावेदार हैं। यही नहीं अब तो उनके सुपुत्र राहुल और सुपुत्री प्रियंका का कांग्रेस में प्रवेश हो चुका है। नेहरू परिवार अकेले ही ऐसा नहीं है जो परिवारवाद

से ग्रस्त है। शेख अब्दुल्ला के फारूख अब्दुल्ला और उनके साथ अब उनके पुत्र उमर अब्दुल्ला भी उनके रास्ते हैं। हरियाणा के चौधरी देवीलाल के बाद उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटाला और फिर चौटाला के एक पुत्र विधायक तो दूसरे सांसद के पद पर विराजमान हैं। इसी प्रकार पंजाब में प्रकाश सिंह बादल के पुत्र भी सांसद हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के पुत्र सांसद अखिलेश यादव तथा आंध्र प्रदेश में एन टी रामाराव, उड़ीसा में बीजू पटनायक, केरल में करुणाकरुण तथा तमिलनाडु में

करुणानिधि आदि भी उसी परिवारवाद की परंपरा पर अग्रसर हैं। इसी प्रकार मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात आदि राज्यों में भी कई मुख्यमंत्रियों ने केंद्रीय अथवा राज्यों की विधानसभाओं में अपने निकट परिचितों, संबंधियों या अपनी जाति वालों की उपस्थिति सुनिश्चित की और उनकी कोशिश रही है कि अपने पुत्र, पुत्री व पत्नी को सत्ता सौंप दें।

इस चुनाव के पूर्व कई एजेंसियों द्वारा सर्वेक्षण कराए गए और भविष्यवाणियां की गईं जिसमें राजग को जिताया गया और कांग्रेस के 1999 से भी बुरी हार के अनुमान लगाए गए हैं।

मतदाता को सही निर्णय लेकर सही जनप्रतिनिधियों को चुनने एवं जवाबदेही निश्चित करने का वक्त आ गया है क्योंकि आज देश का सामान्य नागरिक अपने आपको ठगा–सा महसूस कर रहा है। कारण कि केवल पेड़ों को उखाड़ने के साथ चार व छह लेन की चौड़ी सड़क बनाने, फ्लाई ओवर व ई–मेल से सुसज्जित नगर बनाने, युवकों को आई आई टी की शिक्षा देने से देश के बहुतसंख्यक लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। सामान्य जनता की आवश्यकताएं भूख, बेरोजगारी एवं बुनियादी सुविधाओं में राहत के कार्यों में छिपे रहते हैं, कृषि एवं ग्रामीण लघु उद्योगों के विकास के कार्यों में होते हैं जिसकी अनदेखी की जा रही है। परिणामस्वरूप आम जनता की समस्याएं घटने की जगह निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इसलिए समय का तकाजा है कि मतदाता सोच समझकर अच्छी छवि वाले उम्मीदवारों को विजयी बनावें।

चुनाव के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बिंदु पर गौर करना लाजिमी होगा कि व्यवस्था के खिवैया यानी जनप्रतिनिधि को चुनने का अधिकार जब मतदाता को है तो उसे जनप्रतिनिधि को नकारने, खारिज करने का अधिकार भी दिया जाना चाहिए। एक तो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का दुर्भाग्य है कि देश के आधे मतदाता तो लोकतंत्र के इस महानुष्ठान–चुनाव से दूर ही रहते हैं और जो 50 प्रतिशत मतदाता वोट डालते भी हैं तो उनके मत कई उम्मीदवारों में बंटने के बाद मात्र 20–25 प्रतिशत मत पाने वाला प्रत्याशी ही जनप्रतिनिधि बन जाता है। मतदान के प्रति उदासीनता हमारी पूरी व्यवस्था को लेकर एक प्रकार से नैराश्य भाव का भी नतीजा है। हालांकि इसकी एक वजह यह भी है कि मत पाने की कतार में खड़े उम्मीदवारों में से इस योग्य भी नहीं कि उसके हाथ कमान सौंपी जाए। कुछ इसी ख्याल से पिछले भारत के नए मुख्य चुनाव आयुक्त टी एस कृष्णमूर्ति ने भारत सरकार को यह सुझाव दिया था कि जिस मतदाता को अपना जनप्रतिनिधि चुनने का अधिकार है उसे उस जनप्रतिनिधि को नकारने का भी अधिकार दिया जाना चाहिए। किंतु चिंता की बात यह है कि श्री कृष्णमूर्ति के इस अहम सुझाव को सरकार ने खारिज कर दिया और आश्चर्य तो इस बात का है कि चुनाव आयुक्त के इस सुझाव की न तो किसी राजनीतिक दल ने अहमियत समझी और न ही समाज के किसी वर्ग से इसके हक में आवाज ही उठ पाई। इस बात से हम समझ सकते हैं कि जब नकारने का अधिकार देना ही जिन सत्तासीनों को क्रांतिकारी लग रहा है तो उनसे आप मतदान को अनिवार्य बना देने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। निश्चित रूप से मतदान का अधिकार रखने वाले लोगों में से आधे लोग इस प्रक्रिया से दूर रहते हैं, जो अपने आप में लोकतांत्रिक पद्धति की एक बड़ी खामी की ओर संकेत करता है। यदि मतदाताओं को अपने जनप्रतिनिधियों को नकारने का हक मिले तो मुमकिन है नैराश्य भाव में डूबे ये लोग आगे आएं। प्रत्येक चुनाव की प्रक्रिया पर तकरीबन एक हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं पर सारी प्रगति और जागरूकता के तमाम दावों को मतदान का नीचा प्रतिशत बौना साबित कर देता है। ऐसे में मतदाताओं को अपने जनप्रतिनिधियों को खारिज करने के हक देने का प्रयोग होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि राजनेता, राजनीति और चुनाव प्रणाली पर से भरोसा उठते चले जाने के इस दौर में यह बात बेमानी हो चली है कि जनप्रतिनिधि की सबसे बड़ी अदालत का जज मतदाता होता है। क्योंकि अदालत का जज ही फैसला देने की अपनी जिम्मेदारी से भागना चाहता है। इस दृष्टिकोण से कम से कम मतदान का हक रखने वाली आधी जनता के दूर खड़े होकर तमाशा देखने की प्रवृति को थामने का कोई तो तरीका होना चाहिए। इसके लिए जनप्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार भी मतदाताओं को मिलना चाहिए।

मतदाता को सही निर्णय लेकर सही जनप्रतिनिधियों को चुनने एवं जवाबदेही निश्चित करने का वक्त आ गया है क्योंकि आज देश का सामान्य नागरिक अपने आपको ठगा–सा महसूस कर रहा है। कारण कि केवल पेड़ों को उखाड़ने के साथ चार व छह लेन की चौड़ी सड़क बनाने, फ्लाई ओवर व ई–मेल से सुसज्जित नगर बनाने, युवकों को आईआईटी की शिक्षा देने से देश के बहुतसंख्यक लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। सामान्य जनता की आवश्यकताएं भूख, बेरोजगारी एवं

2004 को बीएसएनएल, पटना में कार्यरत एक लेखाधिकारी, बी हांसदा के शिवपुरी आवास से सी बी आई के छापे में 1.90 करोड़ रुपए नगद मिले। प्रेस ने इसे मात्र टेलर माना, यह अरबों का घोटला हो सकता है। देशी कट्ठे भी बरामद किए गए। नेताओं को कितने दिए गए होंगे, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे अपने घर को बैंक की तरह नकदी रुपए रखनेवाले व्यक्तियों की संख्या हजारों में हो सकती है—जबकि मतदाता को पानी पीने के लिए एक चापा नल लगाने के लिए सरकार को पैसे नहीं रहते। चूंकि नेताओं पर से जनता का विश्वास उठ–सा गया है, ऐसे घोटालों को जनता सच के सिवा और कुछ नहीं मानती। गांधी युग की सरलता और ईमानदारी कांग्रेस परिवार के राजनीतिज्ञों के लिए मात्र बीते युग की कहानी बनकर रह गई है। संसद और विधानमंडलों के सदस्यों के पहनावे भारत की गरीब जनता के पहनावे से मेल नहीं खाते, जिनके वे प्रतिनिधि हैं। किसान, दलित और पिछड़ों के नेता पश्चिमी सभ्यता के नए परिधान–सूट, टाई में लपटे हुए दूरदर्शन पर प्रायः देखे जाते हैं। गांधी जी की खादी उनके नैतिक मूल्य की तरह म्युजियम में रखे गए उनके बन्दरों की पूंछ से सटाकर रख दिए गए हैं। अधिकांश सांसद देश या आयातित विदेशी एयर कंडीशन कारों में संसद भवन आते हैं। प्रतिनिधि से मिलने अब दलित, पिछड़े किसान, मजदूर की जगह उनके एवं अगड़ी जमायत के अपराधियों की बढ़ती संख्या ने ले रखी है। एक प्रेस रिपोर्ट के अनुसार अपराध में संलिप्तता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पिछले विधान के चुनाव में उत्तर प्रदेश में जहाँ 425 में से 180 अपराधी थे वहीं बिहार में 325 में से लगभग 200 अपराधी रिकार्ड वाले प्रतिनिधि थे। वर्तमान में आए एक आंकड़े के अनुसार पूरे देश में 700 विधायक एवं 40 सांसद आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग हैं।

इस संदर्भ में बोहरा रिपोर्ट में दर्शाये गए तथ्य गंभीर परिणामों की ओर इशारा कर चुके हैं—

"Crime sydicates have acquired substantial financial and muscle power and social respectability have successfully corrupted the Government machinery at all levels. The network of the mafia is virtually running a parallel government, pushing the state apparatus into irrelevance."

अपराधियों के राजनीति में प्रवेश के उपरांत असामाजिक कार्यों में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। ऐसे राजनेता अपने को कानून से ऊपर मानते हैं। सरकार उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती—इसी भाव के कारण यहां अराजकता पनपती है।

अनेक सुधीजन प्रत्येक आम चुनाव के पहले राजनीतिक दलों को सुझाव देते रहे हैं कि पार्टियों को आपराधिक लोगों को टिकट नहीं देना चाहिए। अतः जनता को अपनी अंतिम शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है। हर समझदार नागरिक का पुनीत कर्त्तव्य बनता है कि अपराध के उभरते दानवों का अंत कर दें। दागदार व्यक्ति को संसद में न जाने दें। संविधान की सुरक्षा और संसद की पवित्रता को बनाए रखने का अधिकार है—मतदान। इस हथियार का उपयोग सावधानी से न करने से देश और व्यक्ति दोनों का बड़ा अहित हो जायेगा।

मतदाता को ऐसे पुनीत कार्य के लिए दल, जाति, क्षेत्र और धर्म जैसे भावों से ऊपर उठना पड़ेगा। उन्हें उम्मीदवार की योग्यता का ख्याल रखना पड़ेगा। नैतिकता और चरित्र वाले व्यक्ति को संसद में भेजने की स्वस्थ परंपरा बनानी ही पड़ेगी। धनबल और बाहुबल को आगे बढ़ाने से आप की समस्या बढ़ेगी। फिर आप किनको दोष देगे ? पंडित नेहरू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में लाहौर में कहा था—

"Who lives if India dies, and who dies if India lives" यही सूत्र वाक्य हमें हमेशा याद रखना चाहिए।

संपर्क : प्रधान संपादक, इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडर्मिनस्ट्रेशन, आईआईपीए, इन्द्रपस्थ एस्टेट, रींग रोड, नई दिल्ली–2

इस वर्ष भारत सहित 73 देशों में चुनाव

जनसंख्या के लिहाज से विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में चुनाव को पर्व–त्यौहार का रूतबा हासिल हो चुका है। इस वर्ष केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के 73 देशों में चुनाव होंगे। ब्रिटेन को छोड़कर लगभग महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक देशों में चुनाव की तैयारी है। इस तरह का चुनावी माहौली दुनिया में संभवतः अरसे बाद देखा जा रहा है। भारत के अतिरिक्त इस बार जिन अन्य देशों में चुनाव की तैयारियां हैं उनमें अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान, मलेशिया, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रिया, यूनान, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों का नाम उल्लेखनीय है। पूरी दुनिया में इस साल के चुनाव से करीब 13 हजार सांसद चुनकर प्रतिनिधि सभा में पहुंचेगे।

अप्रैल और जून में इंडोनेशिया, अल्जीरिया, ऑस्ट्रिया, यूनान और दक्षिण कोरिया सहित कुल 17 देशों में तथा इसके बाद अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, मंगोलिया, लेबनान, मॉरीशस, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, मलेशिया, ताईवान और सूडान आदि में लोकतांत्रिक चुनाव होंगे। वर्ष 2004 की अंतिम त्रिमाही में करीब 40 देशों में चुनाव होंगे। राजनीतिक विश्लेषक जी वी एल नरसिम्हाराव के अनुसार दुनिया में लोकतत्र के प्रति जनता की आस्था बढ़ी है। आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और मंगोलिया में वर्तमान शासकों के दोबारा सत्ता में आने की उम्मीद जताई जा रही है। अमेरिका में कराए गए चुनाव सर्वेक्षण के अनुसार यदि अभी चुनाव कराए जाएं तो डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जॉन केरी चुनाव में राष्ट्रपति जॉर्ज बुश को 44 फीसदी वोटों के मुकाबले 52 फीसदी वोटों से करारी शिकस्त दें सकते हैं।

जातीय नैया की पतवार चुनाव पर सवार

✍उदित राज

भारतीय समाज जातियों का समाज है। हिंदू धर्म को बिना जाति के न तो परिभाषित किया जा सकता है और न ही समझा जा सकता है। जिस तरह नारियल छिलकों और आवरणों से अपने आपको पूर्ण सुरक्षित रखता है, उसी तरह से प्रचार, कुतर्क, अंधविश्वास, स्वर्ग और नरक का भय, भाग्य, पुनर्जन्म इत्यादि बातों के जरिए जाति को सुरक्षित किया गया है।

इस देश में हमलावरों की लम्बी कतार है और उनका शासन लगभग 1000 वर्ष तक होने के बावजूद हिंदी धर्म की व्यवस्था को खास प्रभावित नहीं किया जा सका। राष्ट्र की संप्रभुता वर्ण व्यवस्था में बदलाव नहीं। मुगल शासकों ने जब यहां की सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने का साहस किया, तो भयंकर विरोध का सामन करना पड़ा। इससे वे समझ गए कि वर्ण व्यवस्था में यदि बदलाव करेंगे तो उनका शासन करना मुश्किल हो जाएगा। अंग्रेजी शासन में जब चार्ल्स गांट ने 1772 में अंग्रेजी, आधुनिक विज्ञान, इंजीनियरिंग आदि की शिक्षा देने की बात कही तो जबर्दस्त विरोध हुआ। इसी तरह से विलियम गिलवर फोर्स के साथ हुआ। 1835 में विलियम बेंटिंग ने मैकाले के प्रस्ताव को मान लिया कि अंग्रेजी, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग आदि की शिक्षा भारत में लागू की जाए। राजाराम मोहन राय को भी बहुत तीखी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, जब उन्होंने यहां की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन के लिए आंदोलन चलाया।

अंग्रेजों ने मुद्रा, डाक, रेल प्रशासन एवं सेना आदि के द्वारा भारत को बनाने में सहयोग दिया। फिर भी आजादी के समय लगभग 500 रजवाड़े राष्ट्र का हिस्सा न बनकर, अपनी रियासत कायम रखना चाहते थे। रियासत कायम रखने में जातीय व्यवस्था भी अहम् भूमिका निभा रही थी। वर्ण व्यवस्था के अनुसार तथाकथित सवर्ण ही शासन करने के अधिकारी थे। अंग्रेजी शासन में विभिन्न अधिनियमों द्वारा संसदीय प्रणाली का विकास हुआ और आजाद भारत में इसी प्रणाली को अपनाया गया। आधुनिक जनतंत्र का विकास यूरोप में हुआ और उसके बाद दुनिया के अन्य देशों ने इसे अपनाया। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। राजनैतिक पार्टी को यदि परिभाषित किया जाए, तो इसका उद्देश्य अपने सिद्धांतों को लागू करने के लिए सत्ता हासिल करने का होता है। जिस पार्टी के जो भी

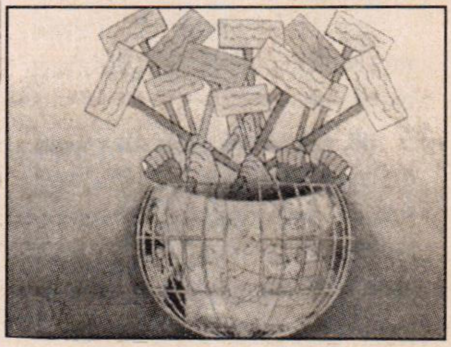

सिद्धांत हो, उसी को लागू कराने के लिए लोगों को संगठित करके हजमारे यहां सभी पार्टियों का अस्तित्व यूरोप या अमरीका के देशों जैसा है। लेकिन जब धरातल की सच्चाई को देखते हैं, तो होश उड़ जाते हैं। भाजपा के उद्देश्य में भी धर्मनिरपेक्षता के लिए कटिबद्धता है लेकिन व्यवहार में क्या ऐसा है ?आजादी के बाद से ही कांग्रेस इस फार्मूले के आधार पर चुनाव लड़ती रही कि जहां जिस जाति या समुदाय की संख्या ज्यादा हो, उम्मीदवार लगभग उसी के हों। विपक्ष में उस समय भाजपा जैसी पार्टियां नहीं थीं। 80 के दशक तक विपक्षी पार्टियां या तो समाजवादी थीं या साम्यवादी अथवा उदारवादी। इसलिए इन्होंने जाति व धर्म को कांग्रेस जितना इस्तेमाल नहीं किया और सत्ता से दूर रहे।

चुनाव के समय कोई भी उम्मीदवार मंच से यह भाषण नहीं करता हुआ मिलेगा कि वह अमुक जाति या सम्प्रदाय का है, इसलिए वोट इसके विपरीत है। कांग्रेस पार्टी को यदि जाने–समझे तो यह लगेगा कि तथाकथित सवर्णों के बीच ही सत्ता सिमटती रही और आज भी उसका यही चरित्र. है। दिखाने के लिए कुछ अल्पसंख्यक, दलित एवं पिछड़े वर्ग के भी नेता हैं, लेकिन असली सम्प्रभुता तथाकथित सवर्णों के ही हाथ में आज भी सिमटी हुई है। मान लिया जाए कि कांग्रेस चुनाव लड़ती है ओर कहती है कि वह गरीबी दूर करेगी, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र उसका संकल्प है या देश का विकास ही उद्देश्य है, तो जब सत्ता सवर्णों के ही बीच घूमती रही, तो ऐसी हालत में यह मान लेना कहां तक सच है कि कांगेस एक पार्टी के रूप में चुनाव लड़ी। भले ही उसने आवरण यह ओढ़ रखा हो कि और भी लोग पार्टी में हैं, लेकिन असली लड़ाई तो सवर्णों के सत्ता पर काबिज रहने की ही है।

यही सच्चाई भाजपा के मामले में भी है। सवर्णों के अतिरिक्त इसमें व्यवसायी जातियां भी शामिल हो गई हैं। अतः भाजपा की ओर से वर्ण और बनिया दोनों चुनाव जातीय ध रातल पर लड़ते हैं, न कि एक राजनैतिक पार्टी के रूप में।

बहुजन समाज पार्टी भी चुनाव को पार्टी की ओर से नहीं, बल्कि दलित जाति की ओर से नहीं, बल्कि दलित जाति की ओर से लड़ती है, जब चुनाव होता है तब दलित बसपा की तरफ सवर्णों को हराने का ही काम करते हैं। उस समय उत्तर प्रदेश के आम दलितों में यही जुनून सवार होता है कि हम अपने नेता को जिताएंगे और सवर्णों को हराएंगे। कुछ मतदाताओं को छोड़कर लगभग सभी इस चीज का बोध नहीं होता कि आखिर मतदान पार्टी के सिद्धांत के लिए कर रहे हैं अथवा किसी अन्य विचार के तहत।

बिहार में यादव की बाहुल्यता होने के कारण एक निश्चि वोट बैंक लालू प्रसाद का बन गया है। मुसलमान की वरीयता भाजपा को हराने की रहती है। ऐसे में वह स्वाभाविक रूप से तलाश करेगा कि कौन ऐसा नेता या पार्टी है, जो भाजपा का विकल्प बन सकती है। इस तरह से मुसलमान और यादव वोट का ध्रुवीकरण हो जाता है और यादव मूलरूप से भूमिहारों, राजपूतों को चुनाव में हराने के

लिए सक्रिय होते हैं।

यही स्थिति आंध्र प्रदेश में भी है। वर्तमान में कम्मा जाति के नेता चंद्रबाबू नायडू आंध्र प्रदेश में तेलुगुदेशम पाटी के सुप्रीमों हैं। आंध्र प्रदेश में कम्मा और रेड्डी दबग जातियां हैं। इसीलिए कभी कम्मा मुख्यमंत्री बनता है, तो कभी रेड्डी। इस सच्चाई के जानने के बाद तो बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि चुनाव जातियों के बीच अधिक है, न कि पार्टियों के बीच। हरियाणा में तीनों लाल–भजनलाल, देवीलाल, बंशीलाल जाट जाति के ही हैं। सत्ता इन्हीं के ईद–गिर्द घूमती रहती है। अपवाद को छोड़कर दूसरी जाति का कोई नेता कितना भी विद्वान, प्रशासनिक, सिद्धांतवादी, ईमानदार और दूरदृष्टिवाला हो, तो भी वह सत्ता में नहीं आ सकता, क्योंकि उसकी जाति की संख्या कम है या कमजोर है।

यही बात पंजाब के भी संदर्भ में सटीक है। चाहे प्रकाश सिंह बादल हो या अमरीन्दर सिंह, सत्ता जाट और सिक्ख के ही इर्द–गिर्द रहती है। पंजाब में जाट और सिक्ख की संख्या अधिक है और वे मालदार व दबंग भी है। उनके सामने दूसरी जातियां चुनाव लड़ने में कमजोर पड़ती हैं, इसलिए वे सत्ता से दूर रहती हैं। अगर पार्टियों के सिद्धांत के मुताबिक चुनाव होता, तो क्या अब तक ब्राह्मण, बनिया, क्षत्रिय या दलित वर्ग के लोग मुख्यमंत्री नहीं हुए होते ?

जनमानस की चाहत होती है कि योग्य, ईमानदार, चरित्रवान नेता होना चाहिए लेकिन क्या वह ऐसा करने में सहयोग करती है। मध्य वर्ग के एक भाग अपवाद के रूप में हो सकता है, लेकिन आम जनमानस के लिए जाति/धर्म और स्वयं के स्वार्थ की प्राथमिकता होती है, नेता चुनने में। हालांकि कुछ अपवाद भी हैं, लेकिन साधारणतया चुनाव जातीय समीकरण के अनुसार ही लड़ा जाता है। जब जातीय भावना चुनने में प्रभावी हो, तो अन्य मुद्दे जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, मंहगाई आदि का क्या मतलब ?

भारतीय परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक पार्टियों की जिम्मेदारी वही नहीं है, जो यूरोपीय देशों की राजनीतिक पार्टियों की है। चूंकि वहां जाति जैसी कोई सामाजिक विकृति नहीं है, इसलिए इसका वहां के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में कोई अर्थ ही नहीं है। हमारे नेताओं और पार्टियों को विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि मांगों के साथ जाति तोड़ने की भी मांग उठानी पड़ेगी। जब तक इस सड़ी–गली सामाजिक परंपराओं और भावनाआं को खत्म करने की प्राथमिकता नहीं देते हैं, तब तक ऐसा माहौल नहीं बन पाएगा, जिसमें चुनाव पार्टियों के बीच हो। हालांकि इस सामाजिक विभाजन जैसे दैत्य के शिकार लगभग सभी हैं, लेकिन इससे लड़ने की हिम्मत या प्रयास वे नहीं करते।

चूंकि जातीय भावना को उभारकर आसानी से राजनैतिक सत्ता हथियायी जा सकती है, तो आम नेता इसी सहज रास्ते को अपनाने में ही बुद्धिमानी समझते हैं। जब चुनाव जातियों के मध्य हो तो ईमानदारी, भ्रष्टाचार मिटाने, चरित्र, विकास इत्यादि जैसी अहम मुद्दों की बात करने वाली पार्टियों व नेताओं को पिछड़ना ही है। मध्य वर्ग की दुनिया अलग हीी है। इसलिए इस सच्चाई को बिना पहचाने या आगे लाए उम्मीद करना बेकार है। लोकसभा का चुनाव होने को है। मध्य वर्ग को चाहिए कि इस नजर से देखे, ताकि आत्मसात करने के बाद इस सड़ी–गली व्यवस्था को समाप्त करने के लिए आगे आये।

—राष्ट्रीय सहारा से साभार

तमिलनाडु के चुनावी समर में 'अम्मा' आगे

विचार कार्यालय, चेन्नै

1970 में तमिलनाडु में द्रमुक की टूट के पश्चात बनी अन्नाद्रमुक पार्टी। फिर कांग्रेस ने इस राज्य में क्षेत्रीय पार्टियों के साथ गठबंधन बनाया किंतु जब देश के नक्शे पर भाजपा रा ट्रीय पार्टी के रूप में उभरी तब वहां का गठबंधन दो ध्रवीय हो गया। आज की तिथि में द्रमुक तथा अन्नाद्रमुक ने क्रमशः कांग्रेस तथा भाजपा के साथ हाथ मिलकर एक तरह विचारधाराओं की धज्जियां उड़ाई हैं क्योंकि आपको स्मरण होगा व र्ष 2001 के विधानसभा चुनाव के वक्त यह गठबंधन बिल्कुल विपरीत था। जब अम्मा के नेत त्व अन्नाद्रमुक सत्ता में आई तो द्रमुक की चाल गड़बड़ाने लगी। याद करें कांग्रेस ने द्रमुक की सरकार से पल्ला इस आधार पर झाड़ लिया था कि राजीव गांधी की हत्या में द्रमुक के हाथ होने का आरोप था। वहीं कांग्रेस आज कह रही है कि उस समय जल्दबाजी में उस तरह का निर्णय लिया गया था जबकि कांग्रेस ने जैन आयोग के अंतरिम रिपोर्ट के आधार पर वैया निर्णय लिया था।

दिलचस्प बात तो यह है कि बनियार की पार्टी पी एम के तथा एम डी एम के जिनके पास 10 प्रतिशत से ज्यादा वोट हैं ने भी द्रमुक के साथ हाथ मिला लिया है और दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी द्रमुक के नेत त्व वाले लोकतांत्रिक प्रगतिशील गठबंधन के साथ ही अपने भाग्य आजमाए। इस गठबंधन का एक ही कार्यक्रम है अम्मा की, अन्नाद्रमुक सरकार कुशासन को अपदस्थ करना। वैसे इस गठबंधन ने पोटा को हटाने की भी बात की है। अम्मा कांग्रेस तथा डी वी ए पर लागतार यह आरोप लगा रही है कि वे विदेशी मूल की महिला को समर्थन दे रही हैं। दूसरी ओर पिछले 19 माह से जेल में बंद बालकों को मुक्त करने के लिए डी पी ए (डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव एलायंस) लगातार पोटा को खत्म करने की मांग कर रही है।

अन्नाद्रमुक के 33 उम्मीदवारों में इस बार अधिकतर नए चेहरे हैं। सबसे बड़ी प्रतिष्ठा की सीट है केंद्रीय मद्रास संसदीय निर्वाचन क्षेत्र जहां से तमिलनाडु स्लम क्लियरेंस बोर्ड के चेयरमैन एन बालंगना चुनाव लड़ रहे हैं। जयललिता ने यही से चुनाव अभियान का बिगुल फूंका और करुणानिधि ने भी इसी क्षेत्र से चुनाव अभियान प्रारंभ किया जिन्होंने मुरासोली मारन के सुपुत्र दयानिधि को अपनी पार्टी से इस क्षेत्र से उतारा है। ऊँट किस करवट बैठता है यह तो समय ही बताएगा। बहरहाल इतना अवश्य कहा जा सकता है कि तमिलनाडु की अम्मा का इस चुनाव में पल्ला भारी लगता है।

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,
Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

अभिनेता से नेता बनने की चाहत

विचार कार्यालय, मुंबई

14वीं लोकसभा चुनाव का बिगुल बजते ही जिस प्रकार राजनेताओं ने अपने सिद्धांतों को तिलांजलि देकर पार्टी का पाला बदलने का बेताव हुए उसी प्रकार फिल्म जगत के अभिनेताओं एवं सिने तारिकाओं में किसी न किसी राजनीतिक दल में शामिल होकर नेता बनने की होड़ लग गयी। प्रारंभ में राज्य सभा के लिए राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होने के बाद ड्रीमगर्ल हेमामालिनी ने 'कमल' की आकर्षित होकर भाजपा का दामन थामा जिसपर काफी विवाद भी हुआ। उसके बाद तो जैसे अभिनेताओं और सिने तारिकाओं की नेता बनने की चाहत इतनी बढ़ी कि हमारे जैसे पत्रकारों को भी इसपर अपनी कलम चलाना मुनासिब लगने लगा।

संतुलन साधने में माहिर भाजपा ने जब युवाओं को लुभाने के लिए ग्लैमर जगत की मशहूर हस्ती व पूर्व मिस वर्ल्ड युक्ता मुखी को पार्टी में शामिल कर लिया तो लंबे इंतजार के बाद कांग्रेस ने भी वालीवुड की अभिनेत्री मौसमी चटर्जी, जीनत अमन, सेलिना जेटली, नम्रता शिरोडकर, हास्य अभिनेता असरानी व अभिनेता शरद कपूर को अपनी पार्टी में शामिल कर उसे मजबूत करने का इरादा जताया। यही नहीं शेखर सुमन, तथा महिमा चौधरी पर भी डोरे डाले जा रहे हैं।

गोविन्दा भी कांग्रेस में शामिल हो चूके हैं। भाजपा, कांग्रेस ने जब फिल्मी कलाकारों को प्रश्रय देना प्रारंभ किया समाजवादी पार्टी भला क्यों इसमें चुकती। उसने सिने तारिका जयप्रदा को अपनी पार्टी में शामिल कर उसी पंक्ति में खड़ी हो गई। इसी सिनेमा के नायक खलनायक राजनीति में जब धड़ल्ले से प्रवेश पा रहे हैं तो खेल जगत के खिलाड़ी भी राजनीति का दामन थामना मुनासिब समझा। क्रिकेट सुपरिचित खिलाड़ी बिशन सिंह बेदी ने कांग्रेस में शामिल होकर यह कहा कि उनके परिवार के लोग पूर्व कांग्रेस के सदस्य थे।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि फिल्में खासतौर पर हिंदी फिल्मों में अक्सर नेताओं को भ्रष्ट, स्वार्थी और बेईमान दिखाया जाता है। इसके बावजूद फिल्मों के अभिनेताओं ने राजनीति में आने की जिस प्रकार होड़ लगा दी उससे ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा होने में उन्हें कुछ बुराई नहीं दिखती है। दरअसल नेता और अभिनेता एक जैसे ही होते हैं। नेता भ्रष्टाचार–घोटाले को भी जनता की सेवा ही मानते हैं और अभिनेता भी अक्सर वही अभिनय फिल्मों में करते हैं जो वह जिंदगी में कभी नहीं होते। टी वी सीरियल की तुलसी खुद मानती हैं कि वास्तविक जिंदगी में वैसी बहू बनना संभव नहीं है।

सच कहा जाए तो आज लोगों के दिमाग में यह बात घर कर गई है कि राजनीति ही वह जगह है जहां पाताल में गिरकर लोग शिखर पर पहुंच सकते हैं। यही कुर्सी का खेल है जो कभी मायावती, कभी जयललिता तो कभी ममता सभी खेलती रहती हैं। यह नेताओं का विशेषाधिकार का खेल है और जिसे खेलना हो उसे नेता लिबास पहनना जरूरी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि नेता बनने के लिए न किसी योग्यता की जरूरत होती है न देश की समस्याओं की कोई समझ होना आवश्यक है। नाम होना, पहचान होना एकमात्र कसौटी है। इसी कसौटी को देखते हुए यदि चंदन तस्कर वीरप्पन भी राजनीति में आ जाए तो उसकी भी जय–जयकार हो सकती है। वीरप्पन भी राजनीति में आने के इच्छुक हैं, लेकिन सभी राजनीतिक पार्टियां उसे इसलिए अपने में शामिल करने में कतरा रही हैं कि वह तस्कर पार्टी का सुप्रीमों होने की योग्यता रखता है और प्रत्येक दल के प्रधान अपनी कुर्सी भला क्यों छोड़ना चाहेगा। वीरप्पन के प्रधान बनने की दावेदारी इसलिए भी सही प्रतीत होती है कि जब साधारण अपराधी राजनीति में आकर विधायक एवं मंत्री बन रहा है तो चंदन तस्कर वीरप्पन जैसा कुख्यात एवं खूंखार अपराधी किसी दल का प्रधान होने का दावा आखिर क्यों न करे?

भय इसका नहीं है कि मौजूदा राजनति में धड़ल्ले से अपराधी, अभिनेता और खेल के खिलाड़ी शामिल हो रहे हैं, क्योंकि लोकतंत्र में सभी नागरिकों को किसी भी दल में भागीदारी की छूट है, दरअसल चिंता इस बात की है कि जो राजनीतिक कार्यकर्ता पिछले कई वर्षों से किसी न किसी पार्टी के कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने में अपना समय जाया कर रहे हैं, उनका क्या होगा? स्वाभाविक है ग्लैमर के चलते संगठन अथवा सत्ता में उन्हीं अपराधियों, अभिनेताओं तथा खेल–खिलाड़ियों को जगह मिलेगी और बेचारे कार्यकर्ता झोला कंधा में लटकाए वही ग्लैमर वाले लोगों की चाकरी करने के लिए मजबूर होंगे। दूसरा खतरा यह है कि अपराधी के राजनीतिकरण की वजह से एक तो वैसे समाज के प्रबुद्धजन, चिंतक–विचारक, पत्रकार, साहित्यकार राजनीति में प्रवेश पाने से वंचित रहे हैं या पार्टी में शामिल होने पर उन्हें तिरस्कृत ही होना पड़ रहा है तो ऐसी स्थिति फिल्मी अथवा खेल की दुनिया के लोगों के आने से बुद्धिजीवियों के लिए राजनीति के दरवाजे और भी बंद हो जाएंगे। प्रबुद्धजनों की राजनीति में भागीदारी के बिना जो हश्र हो रहा है उसका खामियाजा जो जनता भुगत रही है वह सब तो सामने है। आगे क्या होगा? भगवान मलिक।

आज लोकसभा में विजय पाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव को भी मनोरंजक बनाने हेतु फिल्मी दुनिया के कलाकारों से प्रचार कराया जा रहा है, उससे यह अहसास होता है कि भूले पांच साल की सरकार मिल या न मिले, हमारे देश के विकास की गति आगे बढ़े या न बढ़े पर हमारे देश के कर्णधार अपना उल्लू सीध करने के निरर्थक कारनामों को अंजाम देने में कभी पीछे नहीं हटेगे। यही हमारे लोकतंत्र की विडंबना है और लोगों के मनोरंजन को ही हम लोकतंत्र की व्यंग्यात्मक सफलता मानेंगे।

—महेश, मुंबई से

तीसरे विकल्प की ऐतिहासिक परंपरा

✍ मस्तराम कपूर

भारतीय जनता पार्टी ने तीन राज्यों के चुनाव में मिली सफलता से उन्मत्त होकर लोकसभा के चुनाव समय से आठ महीने पहले कराने का निश्चय किया। यह जुआ ही है जो पहले भी कई बार खेला गया है लेकिन एक बार को छोड़कर कभी भी यह जुआ जुआरी के पक्ष में नहीं गया। इंदिरा गांधी ने जरूर एक बार बाजी मारी थी, जब बंग्लादेश के युद्ध में निर्णायक जीत का उन्माद देश में व्याप्त था, लेकिन राजीव गांधी और नरसिंह राव को इसका नुकसान हुआ था। भाजपा और उसके साथ जुड़े बुद्धिजीवी जिस आशापूर्ण (फीलगुड) वातावरण की बात कर रहे हैं वह मात्र हवाई है और उसकी हवा बहुत जल्दी निकल सकती है।

विपक्ष का राजनीति यह है कि मुकाबला दो मोर्चों के बीच हो। एक मोर्चा भाजपा के बीच हो। एक मोर्चा भाजपा के आसपास जुटनेवाला है तो दूसरा कांग्रेस के आसपास। वामपंथी इसके लिए बहुत उत्सुक हैं। इस ध्रुवीकरण में अब कोई खास बाधा नहीं दिखायी दे रही है। भारत के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा भी दो मोर्चों के पक्ष में ऐसा माहौल बनाया जा रहा है गोया तीसरे मोर्चे की बात करना इस समय सरासर मूर्खता है। इसका कारण यह है कि हमारे बुद्धिजीवी आमतौर पर उस स्थूल दृष्टि के मालिक रहे हैं जो वस्तुओं को काले और सफेद दो ही रंगों में देख सकते हैं। लेकिन इतिहास के महत्वपूर्ण मोड़ो पर इस तरह की दृष्टि बहुत अनर्थ कर सकती है।

इसका ताजा उदाहरण है कि इराक के संबंध में अमरीका के राष्ट्रपति जार्ज बुश की नीति जिसमें उसने दुनिया को सीधे दो हिस्सों में बांट दिया। दोस्त और दुश्मन के दो खेमों में दुनिया को बांटने की नीति तानाशाही दिमाग की ही उपज होती है। यही दृष्टि स्टालिन के समय साम्यवादी विश्व में भी अपनायी गयी थी जब स्टालिन ने अपने सहयोगियों को झूठे मुकद्दमों से खत्म करने की मुहिम चलायी थी। उस समय वामपंथी बुद्धिजीवियों द्वारा कहा गया कि जो सोवियत संघ का समर्थन नहीं करता वह पूंजीवाद का समर्थक है। समाजवादियों नें, खासकर लोहिया ने कहा था कि इन दो के अलावा तीसरी दृष्टि भी हो सकती है कि कोई समाजवादी भी रहे और लोकतांत्रिक मूल्यों का भी सम्मान करे।

वास्तव में हमारा स्वाधीनता आंदोलन तीसरी दृष्टि और तीसरे रास्ते की खोज का अद्भुत प्रयोग है। अंग्रेज जाति की लोकतांत्रिक भावनाओं के प्रशंसक होते हुए भी हमने उनके साम्राज्यवाद के विरुद्ध युद्ध छेड़ा। गांधी के बहुत से आलोचक उनमें यह विरोधाभास देखते हैं लेकिन गांधी में हीं क्यों स्वतंत्रता आंदोलन के भी बड़े नेताओं में इसे देखा जा सकता है। ऐसे लोगों की न पहले कमी थी और न आज कमी है जो यह कहते हैं कि जो अंग्रेजों को दुश्मन नहीं मानते वे साम्राज्यवाद के पिट्ठू हैं। हमारे स्वाधीनता आंदोलन के महत्वपूर्ण मोड़ पर यह सवाल बड़ी शिद्दत के साथ उभरा कि हमें दो खेमों में से किसी एक में शामिल होना है या कोई तीसरा रास्ता अपनाना है। दूसरे महायुद्ध के छिड़ने पर यह सवाल उठा और उसने कांग्रेस के अधिकांश बड़े नेताओं को भी लगभग गुमराह कर दिया था। जब युद्ध में दो मोर्चे बन गये, एक लोकतांत्रिक शक्तियों का मोर्चा (जिसमें इंग्लैंड, अमरीका, फ्रांस आदि थे) और दूसरा फासीवाद शक्तियों का मोर्चा तो कांग्रेस ने सामने यह सवाल आया कि वह फासीवाद के खिलाफ लोकतांत्रिक शक्तियों अर्थात अंग्रेज सरकार के साथ सहयोग करें या नहीं। इस प्रश्न पर सभी कांग्रेसी नेता फिसल गये और गांधी जो अकेले पड़ गये बल्कि उन्हें कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्त कर दिया गया। गांधी जी भी कुछ समय के लिए फिसलते दिखायी दिये। किंतु वे जल्दी ही अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करने में सफल हुए और तीसरे रास्ते की खोज की। समाजवादी नेता उस समय भी तीसरे रास्ते की खोज के पक्ष में थे। उनका कहना था कि फासीवाद के विरोध के लिए लोकतंत्र के नाम पर साम्राज्यवाद के साथ सहयोग करना कतई जरूरी नहीं है। आखिर इसी रास्ते को कांग्रेस ने अपनाया। साम्राज्यवादी युद्ध से असहयोग के इस तीसरे रास्ते के कारण ही हमारा स्वाधीनता आंदोलन सफल हआ। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी हमने दो खेमों में बंटे विश्व में तीसरे विकल्प की खोज की। गुटनिरपेक्षता का यह रास्ता स्वाधीनता आंदोलन की प्रमुख सोच की ही देन है और हालांकि लोग इस पर पूरी ईमानदारी के साथ नहीं चले और यह उत्तरोत्तर फीका पड़ता गया तथापि इसकी सार्थक भूमिका को अब भी लोग स्वीकार करते हैं।

भारतीय राजनीति के संदर्भ में भी तीसरे रास्ते की खोज अनिवार्य है। कांग्रेस और भाजपा दोनों पार्टियां ऊंची जातियों की पार्टियां हैं और इसलिए वे उन्हीं के हितों का पो ण कर सकती है। सदियों से चली आ रही जाति–व्यवस्था को भी वे तोड़ना नहीं चाहतीं, क्योंकि यह ऊंची जातियों के हित में नहीं है। जाति व्यवस्था को तोड़ने के लिए संविधान ने जो उपाय किये हैं (आरक्षण आदि) उन्हें वे कभी ईमानदारी के साथ लागू होने नहीं देगी बल्कि तरह–तरह की तिकड़मों से उसे खत्म करने की कोशिश करेगी जैसे राष्ट्रपति प्रणाली, सरकार उद्योगों का निजीकरण, आर्थिक आधार पर अगड़ों को आरक्षण आदि। दोनों की आर्थिक नीतियां घोर पूंजीवादी हैं, इसलिए गरीब देशों को बर्बाद करने वाली भूमंडलीकरण से वे अपने को अलग नहीं करसकती। चूंकि ऊंची जातियां कल जनसंख्या के पांचवें हिस्से से ज्यादा नहीं हैं, इन दोनों पार्टियों को दूसरी जातियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए छल–कपट का समर्थन प्राप्त करने के लिए छल कपट अथवा डराने धमकाने का सहारा लेना पड़ता है। दोनों आरक्षित सीटों से अपने सवर्ण मतों के बल पर कमजोर उम्मीदवार जिताकर लाती हैं और उनका गुलामों की तरह इस्तेमाल करती हैं। दलबदल संबंधी नया कानून बन जाने के बाद तो गुंलामी पक्की हो गयी है। डॉ. अंबेडकर के

शब्दों में इस राजनीतिक डकैती के बल पर ही वे सत्ता पर काबिज होती हैं। डराने धमकाने की कला के उदाहरण वे भीषण दंगे हैं जो इन दोनों पार्टियों के शासनकाल में होते रहे हैं। अलपसंख्यकों के खिलाफ तो जनसंहार जैसे अभियान भी दोनों पार्टियों ने चलाए हैं, एक ने सिखों के खिलाफ और दूसरी ने मुसलमानों ईसाइयों आदि के खिलाफ। जाति व्यवस्था की रक्षा के लिए धर्म के अंधविश्वासों को भुनाने का काम भी दोनों ने किया हैं भ्रष्टाचार में तो दोनों सनी हुई हैं।

अंतः इन दो पार्टियों को ध्रुव मानकर इनके आसपास दो मोर्चे बनाने का मतलब है राजनीति के उसी गंदे तालाब में सड़ते जाना। भारत की 80 प्रतिशत जनता की आकांक्षाओं को प्रताड़ित करने के अलावा इस राजनीति में न तो भारत की गरीबी और बेरोजगारी से निजात पाने की कोई उम्मीद है और न भ्रष्टाचार से मुक्ति की कोई आश ! वैसे ही यह देश विश्व के धनाढ्य देशों और उनकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का चरागह बन गया है और हम नये ढंग की गुलामी की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। अटल बिहारी वाजपेयी हो या सोनिया गांधी हों, अमरीका जैसे देशों के हाथ की कठपुतलियां ही रहेंगे।

दो ध्रुवीय राजनीति के लिए वही तर्क दिये जा रहे हैं जो बुश ने दिये थे या जो दूसरे विव युद्ध के समय कांग्रेस के नेताओं ने दिये थे। फासीदवार और धर्मनिरपेक्षता के दो खेमों में सारी राजनीति को सीमित करना, राजनीति के अन्य सभी महत्वपूर्ण मुद्दों की (गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता आदि) के उपेक्षा करना है। वैसे यह तो दो टूक विभाजन भी बहुत लचर है। न तो भाजपा के खेमे में सब फासीवाद है और न कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता असंदिग्ध रही है। बड़ी बुराई और छोटी बुराई है यह तर्क कुछ समाजवादी, गांधीवादी और सर्वोदयवादी भी देने लगे हैं। जैसे हिटलर के फासीवाद के मुकाबले अंग्रेजों के साम्राज्यवाद को छोटी बुराई मानकर हमारे नेता कभी फिसलने लगे थे, कुछ ऐसा ही आज भी हो रहा है। वामपंथी तो तब भी सारी स्थितियों को काले–सफेद रंगों में देख रहे थे, आज भी उनकी दृष्टि वैसी ही है इसलिए वे सारी राजनीति को दो खेमों में बांटने के लिए बहुत उत्सुक हैं। लेकिन भारत का भविष्य तीसरे रास्ते की खोज में रहा है और आज भी तीसरे रास्ते की खोज के बिना वह अपनी मंजिल की तरफ नहीं बढ़ सकता।

यह तीसरा रास्ता समाजवादी आंदोलन ने बनाया भी था। जनता दल के रूप में एक शक्तिशाली समीकरण बना था, लेकिन वह नेताओं की अदूरदर्शिता और स्वार्थलिप्सा के चलते छिन्न–भिन्न हो गया। इतिहास सीधी रेखा में आगे नहीं बढ़ता, वह बड़े घुमावदार रास्ते से आगे बढ़ता है। कभी आगे बढ़ता है तो पीछे हटता है। जनता दल का एक प्रयोग विफल हुआ तो कोई दूसरा प्रयोग किया जा सकती है। सवाल है कि इस समय तीसरी शक्ति कैसे खड़ी की जा सकती है। जनता दल का सबसे बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी है जो अभी किसी गठबंधन के साथ नहीं जुड़ा है, इसका मुख्य आधार बन सकता है।

पिछले चार–पांच वर्षों में एक नये ढंग की राजनीतिक सूत्रपात करने पर बहुत विचार–विमर्श हुआ है और इसकी रूपरेखा भी बनी है। जनांदोलनों के राष्ट्रीय समन्वय, सोशलिस्ट फ्रंट, मानवाधिकार संस्थाओं आदि ने मिलकर एक एजेंडा तैयार किया है, जिसका सार है 1. विश्व व्यापार संगठन की दादागिरी में चलनेवाली घोर पूंजीवादी नीतियों का विरोध जो कमजोर देशों ओर समाज के कमजोर वर्गों के हितों पर चोट करती है, 2. सांप्रदायिक राजनीति का विरोध 3. विकास की उस कल्पना का विरोध जिसमें प्रकृति और पर्यावरण का विरोध और बड़े पैमाने पर गरीब लोगों का विस्थापन अनिवार्य है, 4. उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ का विरोध, जो हिंसा, द्वेष, भ्रष्टाचार की अपसंस्कृति को बढ़ावा दे रही है, और 5. सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक गैर बराबरी के खिलाफ संघर्ष।

इन मुख्य विचार बिंदुओं के आधार पर नयी राजनीति की शुरूआत आगामी लोकसभा चुनावों में हो सकती है। नौजवान लड़के–लड़कियों की टुकड़ियां जिनमें सभी जातियों, वर्गों और फिरकों के लड़के–लड़कियां हो, किसी एक लोकसभा क्षेत्र को चुनकर उसमें काम शुरू करें। यदि इस प्रयोग के द्वारा आगामी चुनाव मं 8–10 सांसद भी चुने गए जाए तो यह क्रांति की शुरुआत ही होगी।

–राष्ट्रीय सहारा से साभार

विधायक ज्योत्सना, जिन्हें गंवारा नहीं राजनीति को कमाई का जरिया बनाना

विचार कार्यालय, कोलकाता

पं. बंगाल विधानसभा के वर्द्धमान सुरक्षित क्षेत्र की माकपा विधायक ज्योत्सना सिंह ने गरीबी से तंग आकर विधायक बने रहने की जगह कॉलेज छात्रावास के अधीक्षक पद पर नौकरी करना बेहतर समझा और उन्हें राजनीति को कमाई का जरिया बनाना कतई गंवारा नहीं। इतिहास में स्नातकोत्तर ज्योत्सना की पांच बहनें और दो भाई हैं। विधायक बनने के पूर्व उन्होंने बालूर घाट महिला होस्टल के अधीक्षक पद के लिए परीक्षा दी थी जिसमें वह सफल हो गई है। विधायक के वेतन के यप में उन्हें 5000 रुपए मिलते हैं जिसमें से 3000 रुपए पार्टी को दे देना पड़ता है। बाकी बचे मात्र दो हजार रुपए में इतना बड़ा परिवार चलाना उनके लिए संभव नहीं हो रहा था। इसलिए परिवार का पेट पालन के लिए विधायक की सदस्यता छोड़कर छात्रावास की अध्यक्षता बनना उन्होंने उचित समझा क्योंकि राजनीति में रहकर उसे कमाई का जरिया बनाना कतई मंजूर नहीं हैं होस्टल के अधीक्षक के रूप में उन्हें कम से कम दस हजार रुपए माहवार मिलेंगे।

आज भारतीय राजनीति की जो गिरती साख है और जिसमें भ्र टाचार का बोलबाला है ज्योत्सना ने राजनीतिज्ञों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसकी जितनी सराहना की जाए कम होगी। काश अन्य विधायक भी ज्योत्सना से सीख लेकर उनके नक्शे कदम पर चल पाते।

निराला का क्रांतिकारी तेवर

डॉ. चन्द्रिका ठाकुर

निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले की महिषादल रियासत में माघ शुक्ल एकादशी सम्वत् 1955 अर्थात् 21 फरवरी 1899 को हुआ था। कहा जाता है कि निराला की मानसिक स्थिति कुछ डाँवाडोल रहने लगी तो उन्होंने माघ शुक्ल एकादशी को बदलकर माघ शुक्ल पंचमी कर दिया। तभी से इनका जन्म दिन बसंत पंचमी को मनाये जाने लगा। अनुश्रुति है कि उनकी माता रुक्मिणी देवी सूर्य का व्रत करती थीं। फलस्वरूप कवि निराला का जन्म रविवार को हुआ था। इस कारण कवि का नाम सूर्यकुमार रखा गया। कुछ अन्य विद्वानों का कहना है कि निराला का जन्म हनुमान की पूजा के दिन मंगलवार को हुआ था। पिता पण्डित राम सहाय त्रिपाठी महावीर के अनन्य भक्त थे। इसीलिए पिता ने इनका नाम सूर्यकुमार रखा। परन्तु सन् 1917-18 के आसपास निराला ने जन्मतिथि की भाँति ही नाम को बदलकर सूर्यकान्त त्रिपाठी कर लिया और उपनाम 'निराला' रख लिया। इस तरह सूर्यकुमार से सूर्यकान्त त्रिपाठी और सूर्यकान्त त्रिपाठी से सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

निराला के पिता गवर्नर के अंगरक्षक थे। एक बार जब गवर्नर महिषादल के दौरे पर गये तो राजा ने इनके शरीरिक बनावट को देखकर गवर्नर से इन्हें माँग लिया और पण्डित रामसहाय त्रिपाठी को सौ सिपाहियों का जमादार तथा राज्य कोष का संरक्षक नियुक्त कर दिया। डॉ० पदम सिंह शर्मा 'कमलेश' लिखते हैं कि एक बार पिता को यह सुझाव देने पर कि वे इतने सिपाहियों के जमादार होने पर भी राजा को लूट क्यों नहीं लेते पिता की मार खाते-खाते बेहोश हो गया था। पिता की इस कठोरता ने उसे एक ओर सहनशील बनाया तो दूसरी ओर अत्यंत भावुक। तभी से ये दोनों गुण उसके स्वभाव के प्रमुख अंग बन गए।

निराला जब बारह वर्ष के थे, तभी उनकी शादी रायबरेली जिले के डलमउ गाँव के पं०रामदयाल दुबे की पुत्री मनोहरादेवी के साथ सन् 1911 ई० में सम्पन्न हुआ। काल क्रमानुसार मनोहरा देवी ने सन् 1914 में पुत्र रामकृष्ण एवं सन् 1917 में पुत्री सरोज को जन्म दिया।

अढ़ाई वर्ष की अवस्था में ही निराला को मातृस्नेह से वंचित होना पड़ा था। पिता भी सन् 1917 में निराला को अकेला छोड़कर स्वर्गसिधार गये। कुछ दिनों बाद प्राण से भी प्रिय पत्नी मनोहरा देवी भी 'इनफलूएंजा' की चपेट में आकर निराला को सदा-सदा के लिए त्याग दिया। विवाहोपरान्त प्यारी बेटी सरोज का असामयिक निधन से एक के बाद एक अत्यंत प्रियजन का वियोग सहते जाने से निराला की मनोदशा ऐसी हो गई कि संघर्ष में ही शक्ति ग्रहण करने लगे। कवि का क्रांतिकारी तेवर एवं विद्रोही स्वभाव का मूल भाव इसी में खोजना समीचीन होगा। अब कुछ भी मानव के पास नहीं होता है तो ऐसी परिस्थिति में या तो वह आत्महत्या करता है अथवा जिन हालातों ने उसे इस दयनीय स्थिति पहुँचाया है, उनको समाप्त करने का संकल्प करता है। मगर निराला ने ऐसा कुछ नहीं किया, क्योंकि निराला दूसरे प्रकार के व्यक्ति थे। उन्होंने क्या समाज, क्या साहित्य, क्या दैनिक जीवन-चर्या सभी में रूढ़ियों और विकृतियों से लोहा लिया।

निराला कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे फिर भी उन्होंने वेश्या के लड़के के हाथ का पानी पिया था। पासी-चमारों के साथ भाई-चारा बनाया, पुत्री सरोज का विवाह बिना बारात तथा पुरोहित का सम्पन्न कराया। निराला बचपन से ही स्वच्छन्द प्रकृति के थे। निराला बचपन से ही पढ़ने में कुशाग्र थे। पर जब मनमें यह आ गया कि हम रवीन्द्रनाथ से कम नहीं हैं, तब परीक्षा देकर लीक-लीक कौन चले। यही कारण है कि निराला ने भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भाँति स्वतंत्र अध्ययन किया और उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली।

समय और परिस्थिति के थपेरों ने कवि को क्रांतिकारी बनने के लिए वाध्य किया। क्रांति का दूसरा नाम 'निराला' है। प्रतिभा सदा नवीनता के साथ पलती है। तन से निराला, वचन से निराला, चाल से निराला तथा पोशाक से निराला। सचमुच निरालाजी हर तरह से निराला थे। छह फुट के लगभग लंबे कद, चौड़ा सीना, विशाल मस्तक, दिव्य तेज से जगमगाती आँखें, विशाल बाहु और उनमें उनमें नुकीली लंबायमान अँगुलियाँ, लंबे बाल और बंगाली बेशभूषा के साथ मंद-मंथर गति से चलना इस सब संभार को देखकर सहज ही वे असाधारण लगते थे और सचमुच थे भी असाधारण। उनकी आकृति और शारीरिक गठन को देखकर ग्रीक योद्धाओं के स्वरूप का आभास मिलता था। यही कारण है कि निराला को कोई 'अपोलो' तो कोई 'विवेकानन्द'। बाद में जब वे दाढ़ी-मूँछें रख ली थी तो वे साक्षात् ऋषि जान पड़ते थे।

निराला को जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक मिला था। कई बार तो ऐसा हुआ कि निराला की रचनाओं को प्रकाशक ने लौटा दिया था। इस गंभीर उपेक्षा के कारण भी निराला में क्रांतिकारी बीज अंकुरित हुए थे। इसका स्पष्ट रूप को उल्लेख निराला ने पुत्री की याद में लिखे गये 'सरोज स्मृति' काव्य में प्रस्तुत किया है-

"लौटी रचना लेकर उदास,
ताकता हुआ मैं दिशा काश,
बैठा प्रांतर में दीर्घ प्रहार,
व्यतीत करता था गुन-गुनाकर,

संपादक के गुण, यथाभ्यास,
पास की नीचता हुआ घास,
अज्ञात फेंकता इधर-उधर,
भाव की चढ़ी पूजा उन पर।"

निराला प्रकाशक द्वारा रचना को लौटाये जाने पर भी धैर्य नहीं खोते हैं। 'निराला' शरीर के खून को सुखाकर लिखते रहना ही जीवन का लक्ष्य मानते थे। निराला ने जीवन रूपी मार्ग में लाख अवरोध आने के पश्चात् भी अपने स्वाभिमान को नहीं खोया। काश! इसी का परिणाम है कि आज निराला मरकर भी साहित्य में अमर हैं। यही कारण है कि निराला साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० राम विलास शर्मा अपनी

पुस्तक 'निराला' की पृष्ठ संख्या पन्द्रह में लिखते हैं। कि "वे श्रीमान् गरगज सिंह वर्मा 'साहित्य शार्दूल' के नाम से चाबूक लिखते रहे ।"

निराला वाह्य एवं अन्तःकरण दोनों से स्वाभिमानी प्रवृति के व्यक्ति थे। इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या इन में डॉ० रामविलास शर्मा फिर लिखते हैं। कि "लखनऊ की एक साहित्यिक गोष्ठी में जब एक राजासाहब से निराला का परिचय कराया गया था, तो उनका क्रांतिकारी स्वभाव बोल उठा था- हम वह हैं, हम वह हैं जिनके बाप-दादों के बाप दादा की पालकी तुम्हारे बाप-दादों के बाप-दादा उठाया करते थे।" निराला का यह एक वाक्य ही उनके संपूर्ण क्रान्तिकारी स्वभाव का प्रमाण प्रस्तुत कर देती है।

निराला का यह क्रांतिकारी तेवर उनकी समस्त काव्य रचनाओं पर किसी-न-किसी रूप में दृष्टिगोचर होती है। कवि का यह क्रांतिकारी भाव कभी उन्हें परंपरा पुष्टि के लिए तुलसीदास की ओर आकर्षित करती है, तो कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर, तो कभी विवेकानन्द जैसे मेधावी राष्ट्रप्रेमी दार्शनिक से। इस समुद्र की प्रखर धार में कवि की नाव डोलती रहती है-

"डोलती नाव प्रखर है धार
संभालो जीवन खेवन हार।"

'परिमल' की 'सेवा' शीर्षक कविता में उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन रूपी नैया को सँभालने के लिए प्रभु को खेवनहार के रूप में याद किया है और उनका ध्यान भवसागर की विभीषिका की ओर आकृष्ट कराया है। सचमुच निराला का क्रांतिकारी तेवर बहुमुखी व्यक्तित्व का पुँज एवं भंडार है, जो नमोन्मेष शालिनी प्रतिमा से मंडित है। निराला के व्यक्तित्व में कबीर का अक्खड़पन तथा तलखी है। 'शिवाजी का पत्र' और 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता भारतीय नवजागरण का जीता-जागता उदाहरण है। 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने भारतीय जवानों को जगाना चाहा है। निराला का यह क्रांतिकारी भावना राष्ट्रीय भावना एवं देशप्रेम के रूप में प्रकट हुआ है। बादल की गम्भीर गर्जना को निराला ने क्रांति का प्रतीक मानते हुए कहा है

"नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कण्ठ, नव जलद-मंद्रख ।"

'कुकुरमुत्ता' में निराला ने अपना क्रांतिकारी तेवर एवं आक्रोश तीव्र करते हुए पूँजीवाद पर प्रहार किया है। इसके साथ ही कवि ने पूँजीवाद की सहायक संस्कृति, सभ्यता और साहित्य पर चोट की है। युगस्रष्टा कवि निराला के काव्य का मुख्य स्वर यही है। परिणम चाहे जो कुछ हो कवि ने इस काव्य में 'गुलाब' को पूँजीवादी वर्ग का प्रतीक माना है तो कुकुरमुत्ता को सर्वहारा वर्ग का, जिसकी कथा इस प्रकार है- एक नवाब ने फारस से गुलाब मँगाकर अपने बाग में लगवाया। उसके पास ही गंदी जगह में उग आया कुकुरमुत्ता। एक दिन गुलाब को इठलाते देखकर कुकुरमुत्ता को ताव आ गया और कह उठा-

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत, कर गई खुशबू, रँगे आब
खून चूसा स्वाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपीटलिष्ट
कितनों को तूने बनाया गुलाम
माली कर रखा, सहाया जाड़ा-धाम।" (कुकुरमुत्ता)

इन सारी बातों के द्वारा कुकुरमुत्ता गुलाब की बुराइयों को बतलाता है। तू अमीरों और राजा-नवाबों का प्यारा है। इसी से सर्वसाधारण तुमसे दूर रहा है। कुकुरमुत्ता अपने विषय में कहता है कि मैं स्वयं उगता हूँ। मेरा न कलम लगता है, न मैं किसी का जीवन छीनता हूँ। वह अपने को भारत का छत्र और युद्ध का पैराशूट कहता है।

'तोड़ती पत्थर' शीर्षक कविता में दीन-दुःखियों और दलित-पीड़ितों की दुर्दशा से दुःखी होकर कवि का मन क्रांतिकारी रूप धारण कर लेता है और वह क्रांति का आवाहन करता है। इसका शंखनाद हमें 'बादलराग' में सुनाई पड़ता है। जहाँ वह बादल को 'विप्लव के वीर' कहकर संबोधित करता है और अट्टालिकाओं को 'आतंक भवन' का नाम देकर छोटे से कमल की प्रशस्ति संगीत गाता है, तभी तो उन्होंने कहा है-

"अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन,
धनी, वज्र गर्जन से बादल, त्रसत नमन-सुख ढाँप रहे हैं,
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर। चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार, ऐ जीवन के पारावार।"

सच बात तो यह है कि निराला ने भारतीय जनता के कष्ट को अपनी आत्मा की आँखों से देखा था। इसीलिए वे उसकी मुक्ति के लिए क्रांति का आवाह्न करने को उद्यत हुए थे। इसके लिए कवि असुरमर्दिनी श्यामा-माता काली को छोड़ा दूसरे किसकी शरण में जाता? उन्होंने उसे पुकारा और कहा-

"एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर, चाहिए कितने तुझको हार?
कर मेखला झुण्ड मालाओं से बन मन-अभिराम
एक बार बस और नाच तू श्यामा।"

निराला सर्वहारा वर्ग के प्रति अपनी करुणा और दया प्रकट करते हुए कहते हैं कि यह कैसी नियति एवं विडंबना है कि मानव से बैलों एवं घोड़ों की भाँति कार्य लिया जा रहा है। निराला की यह कविता कलकते की उस दृश्य को प्रदर्शित करती है, जहाँ मनुष्य घोड़े की भाँति एक्का को लेकर दौड़ता है। समाज में तथा देश में सर्वहारा वर्ग के प्रति इस तरह का अन्याय किया जाना, निराला के क्रांतिकारी मन बर्दाश्त

"तरंगिणी" के तट पर

पुरानी पीढ़ी के अस्सी वर्षीय साहित्यकार श्री कृष्णकुमार राय जिन्होंने कथा–साहित्य में अपनी पहचान बना रखी है, ललित गद्य के क्षेत्र में भी अब अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक के साथ उपस्थित हैं। 'तरंगिणी' में ऐसी तीस रचनाएं संकलित हैं, जिनमें वहीं ललित निबंध पढ़ने का आनंद आता है, तो कहीं भावपूर्ण रेखा–चित्र का। कतिपय रचनाएं आज के संदर्भ में गंभीर व्यंग्य भी हैं।

'निर्झरिणी', 'शबनम की बूंदें', 'मौन समर्पण', 'महाशक्ति का आवाहन' आदि रचनाओं में छायावादी एवं रहस्यवादी गद्य का रंग गहरा है। एक अद्भुत आकर्षण इन रचनाओं की अपनी विशेषता है। दार्शनिकता से ओत–प्रोत भावों में भाषा का लालित्य हमें विस्मृत–विमुग्ध करता है। श्री कृष्णकुमार राय ने प्रेमचंद जैसी कहानियो को लेकर जैसी ख्याति प्राप्त की है, 'तरंगिणी' उससे बिल्कुल हटकर एक रोमांटिक वातावरण की सृष्टि करती है जिसमें 'Devotion to something afar, from the sphere fo our sorrow' की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। यही इस पुस्तक की सामान्य प्रवृत्ति है, उपलब्धि भी।

बहुत पहले 'मधुशाला' के कविवर बच्चन ने मदिरा को मस्ती का प्रतीक मानते हुए उसकी सराहना में रस–भरी रूबाइयां लिखी थीं, इस पुस्तक की रचना 'शराबी का प्रलाप' में वहीं प्रवृत्ति व्यक्त हुई है––'बिना किसी दुराव या भेदभाव के शरण को शरण देने वाला मदिरालय क्या सुरधाम से भी सुखद नहीं ? (पृ . 58)

इस पुस्तक की कुछ रचनाएं 'व्योमकुंजों की परी, अपि कल्पने !' से नीचे उतर कर आज की कठोर सच्चाईयों से टकरा गयी है, जैसे–'देह–व्यापार' और 'यह कैसी आजादी है ?' (पृ. 63/पृ. 68)

दौलत और देह के व्यापार का खेल कोई नया नहीं है, जमाने–जमाने से चला आ रहा है और दुनिया के किसी भी देश का कोई भी कानून न इसे रोक सका है, न रोक सकेगा, क्योंकि, 'प्यार, जवानी जीवन इनका, जादू मैंने सब दिन माना' कविगण कहते हैं और 'रुप, रुपैया और जवानी में इन तीनों का हूं, काय।' अभिप्राय यह कि कोई अपना रुप और यौवन बेच रहा है, तो कोई अपनी कोई अन्य वस्तु। अर्थशास्त्र के मोहे सिद्धांत के अनुसार 'मांग और पूर्ति' ने इस प्रवृत्ति के कारण कोई अपनी देह का व्यापार कर रही है और किसी को उसकी आवश्यकता (मांग) है और वह उसकी पूर्ति कर रही है और कोई उसे खरीद रहा है तो इसमें कोई भी बात नहीं है और न कोई बुरी बात है। कानूनों की धारा में यह धारा कभी कैद नहीं हुई। हां, 'कोठे' का रुपान्तर आज 'साइबर कैफे', 'बिउटी पार्लर' आदि में साफ परिलक्षित होता है। अतः 'देह–व्यापार' कोई मार्मिक विषय तो अब नहीं रहा परंतु इसे चित्रित करने में श्री कृष्णकुमार की शब्द तूलिका में बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि और संजीदगी का परिचय दिया है जो निश्चय ही प्रशंसनीय है––

"काम–सरित के उन्मत्तप्रवाह में
उन्मुक्त प्रणय–क्रीड़ा करने।
खिड़की का पर्दा गिर जाता है,
जो गिरा ही रहेगा
खेल खत्म होने तक।"–

संग्रह	:	तरंगिणी
रचनाकार	:	कृष्ण कुमार राय
समीक्षक	:	प्रो. दीनानाथ 'शरण'
प्रकाशक	:	प्राच्य प्रकाशन,वाराणसी

इन प्रगतिशील कविताओं में, जो मुक्त छंद में रचित है, एक अत्यंत महत्वपूर्ण वि ाय आजादी के बाद बदहाल हिंदुस्तान का है जिसे श्री कृष्ण कुमार राय ने दो–टूक अभिव्यक्ति दी है। इस पूरी पुस्तक में, और वैसे भी पिछले कई दशकों के दौर में, 'क्या यही आजादी है ?' (पृ. 68) जैसी कविता कोई दूसरी नहीं लिखी गयी। मंहगाई, गरीबी, आर्थिक विपन्नता, लूट–खसोट, भ्रष्टाचार, घपले–घोटाले, आतंकवाद, विज्ञान की प्रगति और इंसान की अधोगति चारित्रिक पतन आदि स्वातंत्र्योत्तर भ्झारत की तमाम बदहालियों की ऐसी संक्षिप्त, सजीव और सटीक अभिव्यक्ति और किसी कविता में, एक जगह पर, मुझे देखने को नहीं मिली।

सारांशतः 'तरंगिणी' एक अद्भुत अलबम है जिसमं सहृदय संवदेनशील–सजग सहित्यकार का बहुआयामी व्यक्तित्व झलकता है। 'तरंगिणी' एक ओर मनोरम महल है, तो दूसरी ओर, खंडहर में तब्दील आजाद हिंदुस्तान।

संपर्क :दरियापुर गोला, बांकीपुर,
पटना–800 004 (बिहार)

ग़ज़ल

सीमा फ़रीदी,

धूल जमीं गुदसतों पर –
फूल पड़े हैं रसतों पर
बैनर नन्हें हाथों में –
खून के छीटे बसतों पर
टूट पड़े जांबाजे वतन –
मददे मुकाबिल दसतों पर
झूटे और मुनाफ़िक लोग –
लानत हो बदमसतों पर
गलियं सब खुशहाली की–
बन्द है फ़ाका मसतों पर
करना मत विश्वास कभी –
सीमा हुसन परसतों पर

संपर्कः अनीस मंजिल, शेखूपुर,
बदायू (उ. प्र.) 243 601

आओ, दीवारों के घेरों–परकोटों से बाहर निकलें

✍ समीक्षक : डॉ. ऋषभदेव शर्मा

सान्ध्य–काल
धूप–छाँह बीच
गिर रही फुहार
रिमझिमा रहा
गगन !

बार–बार
द्वार थपथपा रहा
समय–अ–समय
किसी क़दर
उतावला पवन !

दूर–पास
खेत हाट चौक में
अधीर
जानबूझ
भग–भग
थरथरा रहा
प्रिय बदन !

डॉ. महेंद्र भटनागर की कुछ प्रतिनिधि कविताओं की अंग्रेजी सानुवाद कृति 'उमंग तथा अन्य कविताएं' की शीर्षक रचना 'उमंग' (उपर्युक्त) में कवि ने उमंग के तीन स्रोतों को अनावृत किया है। यहां चित्रित कल ही संधि युक्त नहीं है बल्कि संपूर्ण परिवेश ही धूप–छांह और रिमझिम बरसात की संधि से ग्रस्त है। ऐसे में पवन का उतावलापन मन के उद्‌वेलन का प्रतिनिधि बन कालौचित्य का विचार छोड़ चेतना के द्वार को थपथपाए तो इस का दोष किस पर लगाया जा सकता है। चेतना जब अनावृत होती है तो प्रेम देह का अतिक्रमण करके भुवनव्यापी हो जाता है। संपूर्ण प्रकृति प्रिया–बदन के साथ एकाकार हो जाती है। यही है कवि की उमंग का स्रोत–जानबूझ, भीग–भग, थरथरा रहा, प्रिया बदन। सौन्दर्य का दैहिक और मांसल होते हुए भी सर्वव्यापक औद दिव्य दर्शन ! सांध्यकालीन वर्ष में नहाई प्रिय अपनी पावनता में स्वयं उल्लसित भी है और उल्लास का हेतु भी। ऐसी प्रिया से पहचान होते ही मूक अधरों पर गी–संगीत का मचल उठना सहज है। यह संसर्ग प्रथम दर्शन में ही मन को मुक्ति की आकांक्षा से भर देता है। सौंदर्य का यह प्रभाव प्रेम की एकनि ठता के साथ भी जुड़ा है :

देखा
एकाग्र
पहली बार–
बढ़ गया विश्वास
मन
पंख पसार
छूना चाहता
आकाश ! (संसर्ग)

महेंद्र भटनागर की प्रणयानुभूति एक ऐसी पावनता का संस्पर्श लिए हुए है जिसके बोध से जीवन सुरक्षा–भाव से भर जाता है और मन मुश्किलों को भूल जाता है–

खिल गये
उर में
हजार–हजार
टटके फूल !
खो गये
पथ के
अनेकानेक
शूल–बबूल ! (संस्पर्श)

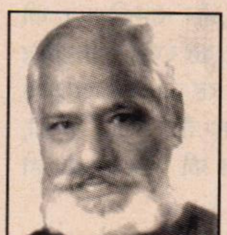
डॉ. महेन्द्र भटनागर

प्रिया से मिलन डॉ. महेंद्र भटनागर के काव्यनायक के निकट एक ऐसी प्रेरणा से मिलन है जो घन–अंधेरे को भटकन और थकन के बाद आलोक के झरने में नहाने के समान है। इस अर्थ में यह काव्यनायक भाग्यवान है कि अविराम संघर्ष के बाद वांछित गन्तव्य को पाने में सफलता उसे प्राप्त हुई है। इससे उसकी सारी जीवनचर्या प्रेममय हो उठी है। संघर्ष–पक्ष के बाद प्रेम का यह भोग–पक्ष बड़ा आनंदप्रद है। धरती पर लेटी पसरी रेशम जैसी चिकनी–चिकनी दूब, आंगन में उतरी खुली–खुली धू, ताजे टटके गदराए फूलों की छांह, हरियाए–हरियाए शूलों की बांह, शरमीली भोली कलियां, लंबी पतली फलियां, रंगीन साड़ी पहने उड़ती मुग्धा तितली, मदमाती प्रेम–प्रगल्भा प्रोढ़ा सरसों जैसे बिंबों के माध यम से उस विलास की सटीक अभिव्यक्ति हुई है। तन–मन और आत्मा को इस तरह उल्लसित–विलसित करने वाला प्रेम निश्चय ही सुंदर और सुखकर है। कवि का यह निष्कर्ष तब और अधिक परिपूर्ण प्रतीत होता है जब वह तलवार की धार पर दौड़ने जैसे इस साहसिक कर्म को दुष्कर भी बताता है :

प्यार है तो जिन्दगी
महका हुआ इक फूल है !
अन्यथा;
हर क्षण हृदय में
तीव्र चुभता शूल है !
निंदगी में प्यार से दुष्कर
कहीं कुछ भी नहीं !
कुछ भी नहीं ! (निष्कर्ष)

प्रेम के पारंपरिक और उदात्त रूप के अंकन के बाद जो दूसरा पाठ महेंद्र भटनागर के गीतों में सर्वाधिक प्रबल अभिव्यक्ति प्राप्त करता है वह है आधुनिकता का पाठ। उन्हें आधुनिक वास्तुकला अजनबीपन और संकीर्णता की पर्याय प्रतीत होती है। आज के मनुष्य का संकुचित हृदय और स्वकेंद्रित मन इतना सिकुड़ गया है कि उसमें उपवन तो क्या आंगन–भर की जगह नहीं बची :

कुएं की दीवारों जैसा
ऊंचा परकोटा
संकरे–कंकरे गलियारों जैसा
हर कमरा छोटा ! (भवन)

आधुनिकता ने मनुष्य को अलगाव से इतना भर दिया है कि वह संवेदन–शून्य हो गया है। किसी निराश या हताश व्यक्ति के दर्द से कराहने या चोट से लहूलुहान चीखने अथवा मर्मान्तक पीड़ा भोगते हुए मर जाने का समाचार भी उसके भीतर न तो करुणा जगाता है और न वेदना। महानगरीय मस्तिष्क मानों किसी को पहचानता ही नहीं। जाने कितने मरते हैं ! एक और कोई मर गया होगा !

(होगा कोई) स्वकेंद्रिंत और अजनबी लोगों से भरी यह आधुनिक दुनिया रागात्मक संबंधों से हीन है। अब जो संबंध नये बने हैं, वे लाभ और लोभ पर आधारित हैं। परस्पर हित नहीं, परस्पर विश्वासघात इन संबंधों का चरम मूल्य है। घर उजड़ गये हैं। सब ओर बाजार–ही–बाजार हैं। सब एक दूसरे को ठग रहे हैं। परस्पर छल की प्रतियोगिता है। सफलता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है चाहे कितना ही छल–बल करना पड़े। धन सर्वस्व है। नेता और मंत्री से लेकर धर्म गुरुओं तक सभी तो अपराधी हैं। ऊपर–ऊपर सब बड़ा सुंदर दीखता है। लेकिन इस आधुनिकता का भीतरी सच बहुत विकृत है :

धन सर्वस्व है, वर्चस्व है,
धन–तेज को पहचानते हैं ठग
उसकी असीमित और अपरंपार महिमा
जानते हैं ठग !
किंतु; सब पकड़े गये
कानून में जकड़े गये
सिद्ध स्वामी, राज नेता सब !
धूर्त मंत्री, धर्मचेता सब !

अच्भा–हीअचंभा !
हिडिंबा है, नहीं रम्भा !
मुखौटे गिर पड़े नकली
मुखाकृति दिख रही असली ! (अंत)

आधुनिकता के पूरक पाठ के रूप में विसंगति के पाठ को देखा जा सकता है। पूरे इन्वाल्वमेंट के साथ कवि ने अनेकशः इस विडंबना को रेखांकित किया है कि व्यक्तिगत जीवन हो चाहे सामाजिक हम अवांछित को ढोने के लिए अभिशप्त हैं। राजनीतिक व्यवस्था की विशाक्तता को वैयक्तिकता से जोड़कर कवि ने तीव्र गीतात्मक अभिव्यक्ति सपने और सावन की अनचाही परिणति के माध्यम से इस प्रकार की है :

सब अनचहा होता गया,
स्वप्न सारे हो गये विकलांग,
सावन की सरसता खो गयी,
अनरक्त अंतस की
मधुरता जब विशैली हो गयी ! (अनचहा)

ऐसे में एक आत्मपीड़क निःसंग भाव जन्म लेता है। जब हम जानते हैं कि परिस्थितियां इतनी विकट और भयावह है कि उन्हें उलट सकना हमारे बस में नहीं है, तो हम मानसिक नरकाग्नि में अकेले खामोश जलने को तैयार हो जाते हैं। कवि ने इस मनोदशा को संन्यास–चेतना कहा है :

उसे बुजदिल नहीं समझो–
जानता है वह
कुछ हासिल नहीं होगा
किसी को कोसने से।
भागना क्या
भोगने से ! (संन्यास–चेतना)

इसे पढ़ते हुए क्षणभर को मन में यह प्रश्न कांधता है कि बलात्कार का प्रतिकार करने में असमर्थ होने पर क्या यह संन्यास–चेतना मूक समर्पण की वकालत करेगी ? निश्चय ही यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। लेकिन है हमारे देशकाल का सच ही। इस देश में कर्मभोग के नाम पर जाने कितने लोग कितना–कितना अत्याचार चुपचाप सहते चले जाते हैं। इसी प्रवृत्ति का दुष्परिणाम है कि लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही हमारे नियति बन गयी है। सब पीड़ित हैं और प्रवंचित भी। लेकिन विडम्बना यह है कि इस अभिशाप को बस अकेले–अकेले ढो रहे हैं।

कृतिः 'उमंग तथा अन्य कविताएं'
कृतिकारः डॉ. महेन्द्र भटनागर, ग्वालियर
समीक्षकः डॉ. ऋषभदेव शर्मा

जो प्रवंचना संगठन और सामूहिकता की चेतना बन सकती थी, वह ऐकान्तिक होकर व्यक्तिगत दीनता भर रह जाती है, आक्रोश और क्रांति की भूमिका तैयार नहीं करती, शरणागति और भक्ति की ओर उन्मुख हो जाती है :

प्यासा
बेहद प्यासा हूं
जाते–जाते
मुझको भी
पीने को कुछ दे दो !
निर्मल गंगा–जल दो !
झरता– मधु–स्रव फल हो ! (अंतिम अनुरोध)

दहका दाह अभावों का
हर सपना भस्म हुआ !
निर्धन, निष्फल, भिक्षु अकिंचन–
जैसे –
नहीं किसी की लगी दुआ !
(अभिप्रेत–वंचित)

आधुनिक जीवन की विसंगति सेउपजी कवि की यह निःसंगता तब टूटती है जब इसका शिकार अकेला व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज होता दिखाई देता है। ऐसे में कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता व्यक्तिगत संन्यास–चेतना को पीछे धकेल देती है। सांप्रदायिक हिंसा किसी भी चेतना को पीछे ध केल देती है। सांप्रदायिक हिंसा किसी भी सचेतन नागरिक को उद्वेलित करती ही है, क्योंकि धर्मोन्माद मनुष्य को क्रूर दरिंदे में तबदील कर देता है; जिसके आतंक की परिणति इतिहासों का मलवा बनकर सामने आती है :

रात गुजरते ही
घबराए कुत्ते रोएंगे,
भय–विह्वल पक्षी चीखेंगे !
हम
आहत युग की पीड़ा सह कर
इतिहासों का मलवा ढोएंगे (त्रासदी)

कवि डा. महेंद्र भटनागर भी इस देश के आमजन की बार–बान राजनीतिक चालबाजियों में स्वयं को छला गया महसूस करते हैं। धर्मनिरपेक्षता हो या सामाजिक न्याय। राष्ट्रीय एकता हो संविधान–सुरक्षा। सब नारे हैं। ये नारे खोटे सिक्के हैं जो घिस चुके हैं, काले पड़ गये हैं और सपाट हो गये हैं। फिर भी नेतागण विदूषकों की भांति चुनाव के बाजार में उन्हें चलाकर जनता के साथ छल ही नहीं कर रहे हैं, उसे हास्यास्पद बनाकर अपमानित और प्रतिड़ित भी कर रहे हैं। यहां कवि का आक्रोश फूट पड़ता है :

अद्भुत घोर तमाशा है
घनघोर निराशा है, यह किस जनतंत्र–प्रणाली का ढांचा है ?
जनता के मुंह पर
तड़–तड़ पड़ता तीव्र तमाचा है ! (तमाशा)

और इसी बिंदु से होता है संघर्ष का पाठ। काव्यनायक को यह अहसास है कि दिशाओं में दहशत भरी हुई है और हवाएं गंधक तथा गरल से गर्म हैं। अग्नि की

शिखाएं रह–रह कर सैलाब–सी उमड़ती है। इतना ही नहीं, चारों तरफ, नदियों, पहाड़ों और जंगलों तक में बारूद की सुरंगे बिछी हुई हैं। आतंक के इस सर्वग्रासी फैलाव के बावजूद कवि की संघर्ष चेतना उसे निरंतर गंतव्य की ओर चलते रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। जीवन के प्रति गहन आसक्ति उसे पराजित होकर आत्म–समर्पण करने नहीं देती। जिजीविषा हर थपेड़ा झेल कर चलने को कहती है। इससे साधारण जन के उस आत्मविश्वास का पता चलता है जो चटखकर टूटते शोलों भरे वीरान रास्तों से गुजरते हुए भी हर तपन को सहने, झुलसने और जलने तक को तैयार रहता है; क्योंकि उसे मंजिल से पहले रूकना स्वीकार नहीं है :

किंतु मंजिल तक
अकेले
खाइयों को, खंदकों को
लौह के पैरों तले
हर बार दलना है ! (जीने के लिए)

यह संघर्ष चेतना सामूहिकता और संगठन के महत्व को पहचानती है। इसीलिए अनेक स्थलों पर उद्‌बोधन की प्रगतिशील अभिव्यंजना का मुहावरा भी अपनाती है। कवि का मनुष्यता की अंतिम विजय से दृढ़ विश्वास है; लेकिन वह विजय किसी चमत्कार अथवा अवतार द्वारा नहीं, संगठन और संग्राम के द्वारा ही संभव है। हिंसकों के टूट कर कमजोर होने तक अनथक जागते हुए युद्धरत रहकर ही इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। इस संघर्ष चेतना की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने जागरण गीत और प्रयाण गीत रचे हैं, जैसे :

जागते रहना, जगत में भोर होने तक।
छा रही चारों तरफ दहशत,
रो रही इंसानियत आहत,वार सहना,
संगठित जन–शोर डोने तक !
मुक्त हो व्यक्ति कारा से,
जूझना विपरीत धारा से,जन–विजय
संग्राम के घनघोर होने तक !
मौत से लड़ना, नहीं थकना,
अंत तक बढ़ना, नहीं रूकना,
हिंसकों के टूटने कमजोर होने तक !
(जागते रहना)

जीवन–संग्राम में सतत सन्नद्ध मनुष्य एक ऐसे आत्म–बोध से भर उठता है कि वह आने वाले हर पल और चुनौती का उल्लास के साथ स्वागत करता है। अहं, स्वाभिमान और दर्प की दीप्ति से युक्त उसके 'मैं' का संबंध उस अस्तित्व–चिंतन के साथ सहज ही जुड़ जाता है जिसकी सत्ता द्वन्द्वात्मकता का परिणाम है। अपनी लघुता को ही अपनी शक्ति बनाने वाला यह काव्यनायक विराटता से आप्लावित हो उठता है :

मेरे हाथ पकड़
उठता है दिन,
मेरे कंधों पर चढ़
बढ़ता है दिन,
मेरे मन से
अभिनव रचना
करता है दिन,
मेरे तन से
सृष्टि नयी
गढ़ता है दिन,
लड़ मेरे बल पर
जीता है दिन,
क्षण–क्षण मरे जीने पर
जीता है दिन,
मेरी गति से
सार्थक होता काल अमर,
मैं ही हूं
अविजित अविराम समर,
मरे सम्मुख हर
पर्वत–बाधा नत है,
हर आगामी कल का
स्वागत है ! (जीवन)

इस संघर्ष चेतना को दिशा देने में 'शब्द' की बड़ी भूमिका है। कवि को शब्द की अपराजेय शक्ति में गहन आस्था है। इतिहास–बोध इस आस्था को और भी दृढ़ बनाता है। इसमें संदेह नहीं कि वर्तमान इतना विडम्बनापूर्ण है कि शब्द छूछे और प्रभावहीन प्रतीत होने लगते हैं; लेकिन यह अंतिम सत्य नहीं हो सकता। यह बात अलग है कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। ऐसे समय मं यह आवश्यक है कि शब्द की समस्त संभावनाओं को पुनः–पुनः खोजा परखा जाए; क्योंकि वही तो क्रांति को संभव बनाता है :

शब्द
बैसाखी लाग कर नहीं चलते,
उनके पदों में
पंख होते हैं,
सुदूर असीम आकाश में,
सौ–सौ गज उछलते हैं !
गहनतम खाइयों को
लांघ जाते हैं,
बार–बार अनमोल माणिक
बांध लाते हैं ! (अभूतपूर्व)

संघर्ष के व्यक्तिगत और समाजगत आयामों से संदर्भित पाठ के अतिरिक्त डा. महेंद्र भटनागर के काव्य का एक और प्रबल पक्ष लोक चेतना से युक्त पाठ से संबंधित है जिसका एक आयाम लोकमंगल की साधना से जुड़ता है तो दूसरा विश्व–प्रेम की कामना से। कवि कर्म की सार्थकता स्वकेंद्रित चिंतन के परकोटे से बारह निकलने–निकालने में ही निहित है। जब–तक अपने सुख की चिंता से ऊपर उठ कर जग के क्रंदन को स्वर के सरगम पर न गाया जाए, तब–तक जीवन औदात्य से मंडित नहीं हो सकता। लोककल्याण की कामना ही कर्ममुक्ति का हेतु है। लोकहित के साथ स्वयं को एकाकार करने वाला व्यक्ति भौतिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। उसका प्रत्येक कर्म प्राकृतिक तत्वों की भांति सर्वभूतहिरत होता है। अपने स्वार्थ के बंधनों को जो काट देता है, उके भीतर ऐसी दिव्य शक्तियां अवतरित होती हैं कि वह मुरझाए–रोते चेहरों को मुसकान बांटने के साथ–साथ उनके जीवन–पथ पर छितराए कुहरे को भी छांट देता हैं संपूर्ण मनुष्यता का हित चाहने वाला ऐसा मनुष्य सर्वहारा के जीवन के पतझर को लकदक पीले–लाल गुलाबों की वासंती जयमाला से ढकने में समर्थ होता हैं इसलिए कवि ने जीवन को सार्थक बनाने हेतु आवहान किया है कि–

घर–घ्झर जा कर
सहमे–सहमे बच्चों को
प्यारी–प्यारी मोहक किलकारी दें,
कंकरीली कंटीली परती पर
रंग–बिरंगी लहराती फुलवारी दें !
(सार्थकता)

यह कामना तभी पूरी हो सकती है जब व्यापक लोक के हित पर कुंडली मारे बैठी जन–विरोधी शक्तियों पर पूरी ताकत से आक्रमण किया जाए। तभी लोहे का आकार

हिलेगा और बंद सिंहद्वार खुलेगा। कवि ने एक ऐसे मुक्त समाज का स्वप्न देखा है जिसमें संगठित जनगण हाथ में मुक्ति की मशाल थामकर कोने–कोने में जीवन–धन खोजने में सफल होंगे। तभी नवयुग का तर्यू बजेगा और प्राची में सूर्य उगेगा। इस स्वप्न की पूर्ति के लिए जनपक्षीय संघर्ष जरूरी है :आओ टकराएं मिल कर

टकराएं
जीवन संवरेगा,
हर वंचित–पीड़ित संभलेगा ! (सम्भव)

हमने अपनी बात सौन्दर्य, प्रकृति और प्रेम की चर्चा से आरंभ की थी और देखा था कि सुंदर और सुखकर होते हुए भी जिंदगी में प्यार से दुष्कर कहीं कुछ भी नहीं। निश्चय ही, प्यार मनुष्य को मनुष्य बनाने वाला वह मानवीय तत्व है जिसे उसका धर्म कहा जा सकता है। इस प्रेम की परिसीमा असीम है––यत्र विश्वम् भवत्येक नीडम। निज और पर की सब हदों को तोड़ कर जब मनु य संपूर्ण जगत से आत्मवत् व्यवहार करता है तो वह विश्ववत्मा हो जाता है। यही भारतीय जवीन–मूल्यों का सार है। कवि महेंद्र भटनागर ने अपने काव्य में जिस जीवन–दर्शन को अभिव्यक्त किया है उसका भी संदेश यही है :

प्यार करना
जिंदगी से : जगत से
आदमी का धर्म है। !
प्यार करना
मानव से
मूक पशुओं–पक्षियों–जलजंतुओं से
वन–लताओं से
द्रुमों से
आदमी का धर्म है !
प्यार करना
कलियों और फूलों से
विविध रंगों सजी–संवरी
तितलियों से
आदमी का धर्म है (धर्म)

संपर्कः रीडर ,उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
हैदराबाद–500 004

सदा सुखी रहो

डॉ. मधु धवन

बड़ी मन्नत मनौतियों के बाद घर में पुत्र उत्पन्न हुआ। घर के समस्त प्राणी आनन्दित हुए। यहां तक कि घर के विशाल आंगन में लगे चन्दन, नीम, जामुन और आम के वृक्ष खुशी से झूमने लगे। आम की पत्तियां तोड़कर घर के द्वारों को सजाया गया। कुछ लकडियां भी तोड़ी गईं। आम ने दर्द सह लिया। चन्दन की मोटी डाल काटी गई उसकी पीड़ा आम, जामुन और नीम देखते असहाय खड़े रहे। चन्दन का पालना बना।

घर में आयी खुशी और चहल–पहल देख बधाई के गीत सुनकर उनके दर्द जाते रहे।

बच्चे की आवश्यकता देख नीम की दो डालें काटी गईं। उसकी छोटी चारपाई बनी। फिर हर माह कुछ न कुछ बनता रहा। चलने के लिए तिपहिया गाड़ी, गुल्ली डंडा। पढ़ने के लिए मेज–कुर्सी, खाने के लिए पटरा, शादी का पाटा, बहू की पालकी।

इधर नीम, चंदन पूरी ताकत से मांगे पूरी कर रहे थे उधर आम हर त्यौहारपर पत्तियां लकड़ियां देता रहा। गर्मी के मौसम में आम और जामुन रसदार फल और घनी छांव से सेवा करते रहे। नीम, चंदन, आम, जामुन की शीतल हवा के साथ–साथ ठंडी छांव के नीचे बालक अपने सखा मित्रों के संग सारा दिन खेलता।

नीम के पेड़ पर अब एक–दो डालें रह गयीं हैं। कोंपले निकलती हैं मगर डाल बनने से पहले तोड़ ली जाती हैं। कभी दातुन के लिए या किसी देवी मंदिर में देने के लिए अथवा किसी रोगी के लिए। अगली पीढ़ी को देने के लिए नाममात्र की पतियां टहनियां बची थी। जामुन का भी बुरा हाल था। उसकी डालों पर बच्चे झूला डाल कर इस कदर झूलते कि कुछ दिनों बाद डाल ही तोड़ देते।

जिस शिशु के लिए चंदन और नीम को काटा जाता था। अब वह भी पोते–पोतियों वाला हो चुका था। एक दिन असहाय–सा चारपाई पर पड़ा चंदन, नीम आम और जामुन के उपकारों को निहारते–निहारते चल बसा।

आम, नीम और चंदन पर कुल्हाड़ियां चलने लगीं। आम क्रंदन करता रहा।

उसी समय किसी का स्वर सुनाई दिया–''लकड़ी कम है...।' कुल्हाड़ी जामुन की डालों पर पड़ी। फिर स्वर सुनाई दिया। आम की चाहए।' आम चौंक पड़ा उसकी रुह कांपी। पत्तियां–टहनियां सब कांपने लगीं।

तो क्या आज हमारी अंतिम यात्रा है...। हममें से कोई नहीं बचेगा। वैसे भी तोड़–तोड़कर ढूंढ़कर दिया था। अपनी स्थिति पर उसके मुंह से आह निकली। मनुष्य की क्रूरता उसे पहल बार खली। टूटते अंगों को मरते देख रहा था। लगभग सारी टहनियां कटती जा रहीं थीं। पूरे छः माह आम ने कैसे काटे यह केवल वह ही जानता है।

एक दिन मृतक का पुत्र चंदन, नीम और जामुन के नंहे पौधे किसी नर्सरी से लेकर आए थे। उन्हें सुचारु रूप से रोप रहा थ। सारा परिवार पौधों को रोपता देख रहा था। छोटे–बड़े सब खुशी से झूम उठे।

आम ने हृदय से आशीर्वाद दिया–

'हे मनुष्य नामक प्राणी ! तुम जुग–जुग जियो........।

सदा सुखी रहो..........।'

संपर्क के–3, अन्नानगर (ईस्ट) चेन्नै

कैंसर से प्रतिवर्ष 60 लाख लोग काल कवलित

कैंसर रोग को रोकना अब संभव

विचार कार्यालय, पटना

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में प्रतिवर्ष 60 लाख से अधिक लोग कैंसर से काल कवलित हो रहे हैं। यदि यही रफ्तार रही तो अगले दस वर्षों में कैंसर से मरने वालों की संख्या प्रतिवर्ष 90 लाख हो जाएगी। इसलिए इसे रोकना होगा। ये विचार सुप्रसिद्ध सर्जन डॉ. ए हई के, जिसे उन्होंने पटना के इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एंड रिसर्च में कैंसर अवेयरनेस सोसायटी द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में व्यक्त किए। संगोष्ठी का संयुक्त रूप से उदघाटन किया डॉ. एस एन पी सिंहा ने, अनिल सुलभ तथा मेजर बलवीर सिंह भसीन ने।

इस अवसर पर डॉ. पूनम दीक्षित ने कहा कि महिलाओं में मुख्य रूप से स्तन और बच्चेदानी का कैंसर होने की आशंका रहती है। इसलिए उसकी नियमित जांच करानी चाहिए। जब कभी स्तन में कहीं गांठ महसूस हो तो अविलंब किसी अच्छे सर्जन और कैंसर विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए। विशेषज्ञों ने कहा कि तंबाकू का सेवन कैंसर का एक प्रमुख कारण है। तंबाकू को 'ना' कहकर इस रोग को टाला जा सकता है। डॉ. यू एस प्रसाद तथा प्रो. हाशिम खान ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

परिवार नियोजन का एक नया विकल्प

महिलाओं के लिए कंडोम

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारत सरकार के हिंदुस्तान लेटेक्स लिमिटेड तथा ब्रिटेन की फीमेल हेल्थ कंपनी द्वारा संयुक्त रूप से देश में ही महिलाओं के लिए कंडोम तैयार किया जा रहा है जो परिवार नियोजन का विकल्प सिद्ध होगा। सरकार के परिवार कल्याण कार्यक्रम में जल्दी ही इसे शामिल किया जाएगा। भारत सरकार के स्वास्थ्य सचिव जे वी आर प्रसाद राव तथा परिवार कल्याण सचिव पी के होता द्वारा इस आशय की घो णा नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में पत्रकारों से बातचीत करते हुए की गयी। अब तक दुनिया में ब्रिटेन की फीमेल हेल्थ कंपनी ही एकमात्र ऐसी कंपनी है जो महिला कंडोम का निर्णाम करती है।

उल्लेख्य है कि यह कंडोम एड्स से बचाव तथा परिवार नियोजन का एक नया विकल्प लोगों के सामने होगा। एच एल एल के चेयरमैन वी राजामोहन के अनुसार अभी इस कंडोम की कीमत 45 रुपए रखी गयी है। लेकिन अगले कुछ सालों में यह कीमत बीस रुपए से भी कम हो जाएगी। इस कंडोम का इस्तेमाल के बाद इसे पुनः रा ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) तथा एच एल एल द्वारा आंध्र प्रदेश, केरल और महारा ट्र में इस महिला कंडोम के संभावित इस्तेमाल को लेकर किए गए अध्ययन के अनुसार परिणाम सकारात्मक रहे हैं तथा पचास प्रतिशत से ज्यादा लोगों ने इस महिला कंडोम में दिलचस्पी दिखाई है।

स्वस्थ रहना है तो तकिया छोड़िए

विचार कार्यालय, कोयंबटूर

तकिये काइ स्तेमाल नहीं करने से स्वस्थ रहा जा सकता है और हृदय, ऑसू तथा सांस की बीमारियों से बचा जा सकता है, ऐसा दावा है योग विशे ज्ञों का। तमिलनाडु राज्य योगासन संगम, मदुरई के को ाध्यक्ष योगराज ने संवाददाताओं को बताया कि जब कोई ऊँचे तकिए पर सिर रखकर सोता है तो उसके मस्ति क खून का पहुंचना रूक जाता है। इसलिए तकिए का इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं है। तकिए का इस्तेमाल नहीं करने वाले अधिक दिन तक जीवित रहकर अनेक रोगों से दूर रह सकते हैं तथा उनके बाल भी काले रहते हैं। यहां तक तकिए का इस्तेमाल नहीं करने वाले छात्र-छात्राएं भी अधिक प्रतिभाशाली होते हैं। तकिए के इस्तेमाल से अस्थमा होने का खतरा बना रहता है और इसके अधिक प्रयोग से युवा वर्ग में हृदय रोग अधिक बढ़ रहा है। तकिए के उपयोग का सीधा प्रभाव हमारी आंखों और दांतों पर भी पड़ता है।

हड्डी में लगातार दर्द को नजर अंदाज न करें

हड्डी में होने वाले अनवरत दर्द या टूट-फूट को बहुत हल्केपन से लेना उचित नहीं है। हड्डियां न केवल ारीर को आकार प्रदान करती है बल्कि ारीर के कई महत्वपूर्ण अंगों को अपने भीतर समेटे वह कवच का काम भी करती हैं। दिल्ली के ाांति मुकुंद अस्पताल के वरि ठ अस्थि रोग विशे ाज्ञ डॉ. ारद अग्रवाल ने ये बातें व्यक्त करते हुए कहा कि हड्डी टूटने के बाद चोटिल स्थान के आसपास खून जमा होनेल लगता है जिससे वहां सूजन आ जाती है। उनके अनुसार मिनीमल इन्वेंसिव सर्जरी के आ जाने से हड्डी के टूटने के इलाज में क्रांति आ गई है।

कसरत करें यदि हृदय रोगों से बचना हो तो

'दिल को दुरूस्त रखने के लिए चिकित्सकों के हाथों चीरफाड़ कराने की बजाय आपका हर दिन कसरत करना कहीं ज्यादा बेहतर इलाज है। हाल ही में अमरीकी हृदय संघ की एक पत्रिका में प्रकाशित जर्मनी के चिकित्सकों के एक अध्ययन में यह खुलासा किया गया है। अध्ययन के अनुसार हर रोज साइकिल पर वर्जिश करने वाले हृदय रोगियों में से 88 प्रतिशत अगले चार वर्षों तक दिल के दौरे सीने के दर्द या दूसरी अन्य बीमारियों से बचे रहेगे। अध्ययन दल का नेतृत्व कर रहे लेइपजिग विश्व विद्यालय के डॉ. रैनर हैमब्रेच्ट ने कहा कि हृदय में स्टेट लगे रोगियों में यह सफलता 70 प्रतिशत रही। उन्होंने कहा कि अपने खाली समय में कसरत करने वाले हृदय रोगियों में ऑपरेशन की आशंका क्षीण हो रही जाती है। 70 साल के 101 हृदय रोगियों की 'सूक्ष्म निगरानी' के बाद यह निष्कर्ष अध्ययन दल के द्वारा निकाला गया है।

"तरंगिणी" के तट पर

पुरानी पीढ़ी के अस्सी वर्षीय साहित्यकार श्री कृष्णकुमार राय जिन्होंने कथा–साहित्य में अपनी पहचान बना रखी है, ललित गद्य के क्षेत्र में भी अब अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक के साथ उपस्थित हैं। 'तरंगिणी' में ऐसी तीस रचनाएं संकलित हैं, जिनमें वहीं ललित निबंध पढ़ने का आनंद आता है, तो कहीं भावपूर्ण रेखा–चित्र का। कतिपय रचनाएं आज के संदर्भ में गंभीर व्यंग्य भी हैं।

'निर्झरिणी', 'शबनम की बूंदें', 'मौन समर्पण', 'महाशक्ति का आवाहन' आदि रचनाओं में छायावादी एवं रहस्यवादी गद्य का रंग गहरा है। एक अद्भुत आकर्षण इन रचनाओं की अपनी विशेषता है। दार्शनिकता से ओत–प्रोत भावों में भाषा का लालित्य हमें विस्मृत–विमुग्ध करता है। श्री कृष्णकुमार राय ने प्रेमचंद जैसी कहानियो को लेकर जैसी ख्याति प्राप्त की है, 'तरंगिणी' उससे बिल्कुल हटकर एक रोमांटिक वातावरण की सृष्टि करती है जिसमें 'Devotion to something afar, from the sphere fo our sorrow' की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। यही इस पुस्तक की सामान्य प्रवृत्ति है, उपलब्धि भी।

बहुत पहले 'मधुशाला' के कविवर बच्चन ने मदिरा को मस्ती का प्रतीक मानते हुए उसकी सराहना में रस–भरी रूबाइयां लिखी थीं, इस पुस्तक की रचना 'शराबी का प्रलाप' में वहीं प्रवृत्ति व्यक्त हुई है—'बिना किसी दुराव या भेदभाव के शरण को शरण देने वाला मदिरालय क्या सुरधाम से भी सुखद नहीं ? (पृ . 58)

इस पुस्तक की कुछ रचनाएं 'व्योमकुंजों की परी, अपि कल्पने !' से नीचे उतर कर आज की कठोर सच्चाईयों से टकरा गयी है, जैसे–'देह–व्यापार' और 'यह कैसी आजादी है ?' (पृ. 63 / पृ. 68)

दौलत और देह के व्यापार का खेल कोई नया नहीं है, जमाने–जमाने से चला आ रहा है और दुनिया के किसी भी देश का कोई भी कानून न इसे रोक सका है, न रोक सकेगा, क्योंकि, 'प्यार, जवानी जीवन इनका, जादू मैंने सब दिन माना' कविगण कहते हैं और 'रुप, रुपैया और जवानी में इन तीनों का हूं, काय।' अभिप्राय यह कि कोई अपना रुप और यौवन बेच रहा है, तो कोई अपनी कोई अन्य वस्तु। अर्थशास्त्र के मोहे सिद्धांत के अनुसार 'मांग और पूर्ति' ने इस प्रवृत्ति के कारण कोई अपनी देह का व्यापार कर रही है और किसी को उसकी आवश्यकता (मांग) है और वह उसकी पूर्ति कर रही है और कोई उसे खरीद रहा है तो इसमें कोई भी बात नहीं है और न कोई बुरी बात है। कानूनों की धारा में यह धारा कभी कैद नहीं हुई। हां, 'कोठे' का रुपान्तर आज 'साइबर कैफे', 'बिउटी पार्लर' आदि में साफ परिलक्षित होता है। अतः 'देह–व्यापार' कोई मार्मिक विषय तो अब नहीं रहा परंतु इसे चित्रित करने में श्री कृष्णकुमार की शब्द तूलिका में बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि और संजीदगी का परिचय दिया है जो निश्चय ही प्रशंसनीय है—

"काम–सरित के उन्मत्तप्रवाह में
उन्मुक्त प्रणय–क्रीड़ा करने।
खिड़की का पर्दा गिर जाता है,
जो गिरा ही रहेगा
खेल खत्म होने तक।"–

संग्रह	: तरंगिणी
रचनाकार	: कृष्ण कुमार राय
समीक्षक	: प्रो. दीनानाथ 'शरण'
प्रकाशक	: प्राच्य प्रकाशन,वाराणसी

इन प्रगतिशील कविताओं में, जो मुक्त छंद में रचित है, एक अत्यंत महत्वपूर्ण वि   ाय आजादी के बाद बदहाल हिंदुस्तान का है जिसे श्री कृष्ण कुमार राय ने दो–टूक अभिव्यक्ति दी है। इस पूरी पुस्तक में, और वैसे भी पिछले कई दशकों के दौर में, 'क्या यही आजादी है ?' (पृ. 68) जैसी कविता कोई दूसरी नहीं लिखी गयी। मंहगाई, गरीबी, आर्थिक विपन्नता, लूट–खसोट, भ्रष्टाचार, घपले–घोटाले, आतंकवाद, विज्ञान की प्रगति और इंसान की अधोगति चारित्रिक पतन आदि स्वातंत्र्योत्तर भ्ज्ञारत की तमाम बदहालियों की ऐसी संक्षिप्त, सजीव और सटीक अभिव्यक्ति और किसी कविता में, एक जगह पर, मुझे देखने को नहीं मिली।

सारांशतः 'तरंगिणी' एक अद्भुत अलबम है जिसमं सहृदय संवदेनशील–सजग सहित्यकार का बहुआयामी व्यक्तित्व झलकता है। 'तरंगिणी' एक ओर मनोरम महल है, तो दूसरी ओर, खंडहर में तब्दील आजाद हिंदुस्तान।

संपर्क :दरियापुर गोला, बांकीपुर,
पटना–800 004 (बिहार)

ग़ज़ल

सीमा फ़रीदी,

धूल जमीं गुदसतों पर –
फूल पड़े हैं रसतों पर
बैनर नन्हें हाथों में –
खून के छीटे बसतों पर
टूट पड़े जांबाजे वतन –
मददे मुकाबिल दसतों पर
झूटे और मुनाफ़िक लोग –
लानत हो बदमसतों पर
गलियं सब खुशहाली की–
बन्द है फ़ाका मसतों पर
करना मत विश्वास कभी –
सीमा हुसन परसतों पर

संपर्कः अनीस मंजिल, शेखूपुर,
बदायू (उ. प्र.) 243 601

नहीं कर पाता है। यही कारण है कि कवि का तेवर तीव्र हो कह उठता है-

"मानव जहाँ बैल-घोड़ा है,
कैसा तन-मन का जोड़ा है।

डॉ० बच्चन सिंह अपनी पुस्तक, क्रांतिकारी कवि 'निराला' में उन्होंने लिखा है कि निराला वैयक्तिक भी हैं और निर्वैयक्तिक भी। वे जीवन, समाज तथा काव्य तीनों में क्रांतिकारी रहे हैं। 'निराला' के संदर्भ में डॉ० अरूणिमा गौतम ने अपनी पुस्तक 'निराला का काव्य प्रयोग के आयाम' में लिखा है कि प्रसाद तटस्थ द्रष्टा की तरह व्यवस्था करते हैं लेकिन निराला इस विशाल रंगमंच में कुर्सी लगाने, स्टेज ठीक करने से लेकर रंगमंच पर रोल तक अदा करने की सारी भूमिका बिना किसी मलाल के निभाते हैं।। यही कारण है कि निराला रूढ़िभंजक या मूर्तिभंजक व्यक्तित्व के होते हुए भी साहित्य में भारतीयता के प्रहरी, आधार स्तम्भ, तुलसी और कबीर से जुड़ते हैं।

निराला क्रांतिकारी स्वभाव के होते हुए भी कर्तव्यपरायण थे। वे अपने कर्तव्य एवं कर्मनिष्ठा के प्रति हमेशा सतर्क रहते थे। कवि जीवन में कभी भी अपने कर्तव्य से च्युत नही दिखाई पड़ता है। निराला ने हर संकट का सामाना पूर्ण शक्ति और धैर्य के साथ किया था। यह बात तो कवि की रचनाओं से पूर्णत: सत्य हो चुकी है। 'परिमल' में उद्धृत 'स्वागत' शीर्षक कविता इस दृष्टि से बहुत ही सटीक एवं सार्थक प्रतीत होता है। नीचे उदाहरण स्वरूप 'स्वागत' कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है-

"कितने ही विघ्नों का जाल,
जटिल, अलग, विस्तृत पथ पर विकराल,
कण्टक, कर्दन, भय-श्रम निर्मम कितने धूल
हिंस, निशचर, भूधर कन्दर पशु संकुल
सिर पर कितना गरजे
बज्र बादल।"

'भिक्षुक' शीर्षक कविता में निराला ने भारतीय भिक्षुक का बड़ा ही मार्मिक एवं हृदयग्राही वर्णन प्रस्तुत किया है। भिक्षुक का ऐसा मार्मिक एवं हृदयग्राही वर्णन प्रस्तुत किया है। भिक्षुक का ऐसा मार्मिक वर्णन क्रांतिकारी निराला ही कर सकते थे, अन्य समकालीन कवियों के द्वारा सम्भव नहीं था। भिक्षुक की कातर वाणी को सुनकर किसी भी मानव हृदय को पिघलना अतिस्वाभविक है। कवि भले ही क्रान्तिकारी हो, पर वह अन्त:करण से मोम की तरह होता है जो थोड़ी भी धूप का स्पर्श होने मात्र से पिघलाना प्रारम्भ कर देता है। इसी संदर्भ में हमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की वह पंक्तियाँ याद आती हैं जिसमें उन्होंने लिखा है कि कवि स्वभाव से ही उच्छृंखल होते हैं। वे जिस तरफ झुक गए, झुक गए। जी में आया तो राई को पर्वत कर दिया, जी में आया तो हिमालय की तरफ आँख उठाकर नहीं देखा। यह उच्छृंखलता या उदासीनता सर्वसाधारण कवियों में देखी ही जाती है, आदिकवि तक इससे नही बचे। तो क्रांतिकारी कवि निरला इससे कैसे वंचित रह सकते थे। कदापि यही कारण है बाल्मीकि क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक पक्षी का निषाद द्वारा वध किया गया देख जिस कवि शिरोमणि का हृदय दु:ख से विदीर्ण हो गया और जिसके मुख से 'माँ निषाद' सरस्वती सहसा निकल पड़ी, तो निराला ने 'भिक्षुक' जैसी कविताएँ लिखकर कौन बहुत बड़ा अन्याय किया वरन् निराला ने तो वह अनुपम कार्य किया जो कार्य बाल्मीकि के पश्चात् साहित्य में खटाई में पड़ गया था। अर्थात् दूसरे शब्द में यह कह सकते हैं। कि निराला ने 'भिक्षुक' जैसी मार्मिक कविताओं को लिखकर आदि कवि बाल्मीकि की परंपरा को अग्रसर किया है। 'भिक्षुक' की दुर्दशा निराला के क्रांतिकारी मन को उद्वेलित कर देता है, तभी तो कवि ने ऐसा यथार्थ चित्रण किया है-

"वह आता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी-पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता।"

"चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।"

हाय री लाचारी, हाय री मानवता, हाय री विवशता! मनु की संतान की यह दर्दशा। भिक्षुक के साथ में दो बच्चे भी हैं जो कोढ़ में खाज का काम करते हैं। वह अपने एक हाथ से पेट को सहलाता है और दूसरी हाथ जनता की ओर कुछ पाने के लिए फैलाता है, परन्तु वहाँ उसे नकारात्मक उत्तर मिलता है। किसी भी दाता को उसकी दीन-हीन दशा पर तरस नहीं आता । यह कैसी मानव की विवशता है। प्रस्तुत कविता में एक ओर हम देखते है। कि निराला भिक्षुक के प्रति करुण प्रदर्शित करते हैं, दूसरी ओर भिक्षा न देने वाले दाता के प्रति आक्रोशी तेवर भी प्रकट करते हैं।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि निराला के जीवन में जो क्रांतिकारी भावना है, वही उनके काव्यों में विविध रूपों में उभरी है। कवि ने समकालीन कवियों की लीक को तोड़कर साहित्य एवं काव्य जगत् में पूर्ण कवित्व शक्ति के साथ अपनी निजता को स्थापित की है। निराला के क्रांतिकारी तेवर को सार्थक धरातल प्राप्त हो सका है, उसमें उनकी बहुआयामी व्यक्तित्व का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संपर्क:- डॉ० चंद्रिका ठाकुर
व्याख्याता, बी. एस.कॉलेज,
लोहरदगा-835302 (झारखंड)

पुस्तक 'निराला' की पृष्ठ संख्या पन्द्रह में लिखते हैं। कि "वे श्रीमान् गरगज सिंह वर्मा 'साहित्य शार्दूल' के नाम से चाबूक लिखते रहे ।"

निराला वाह्य एवं अन्तःकरण दोनों से स्वाभिमानी प्रवृति के व्यक्ति थे। इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या इन में डॉ० रामविलास शर्मा फिर लिखते हैं। कि "लखनऊ की एक साहित्यिक गोष्ठी में जब एक राजासाहब से निराला का परिचय कराया गया था, तो उनका क्रांतिकारी स्वभाव बोल उठा था- हम वह हैं, हम वह हैं जिनके बाप-दादों के बाप दादा की पालकी तुम्हारे बाप-दादों के बाप-दादा उठाया करते थे।" निराला का यह एक वाक्य ही उनके संपूर्ण क्रान्तिकारी स्वभाव का प्रमाण प्रस्तुत कर देती है।

निराला का यह क्रांतिकारी तेवर उनकी समस्त काव्य रचनाओं पर किसी-न-किसी रूप में दृष्टिगोचर होती है। कवि का यह क्रांतिकारी भाव कभी उन्हें परंपरा पुष्टि के लिए तुलसीदास की ओर आकर्षित करती है, तो कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर, तो कभी विवेकानन्द जैसे मेधावी राष्ट्रप्रेमी दार्शनिक से। इस समुद्र की प्रखर धार में कवि की नाव डोलती रहती है-

"डोलती नाव प्रखर है धार
संभालो जीवन खेवन हार।"

'परिमल' की 'सेवा' शीर्षक कविता में उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन रूपी नैया को सँभालने के लिए प्रभु को खेवनहार के रूप में याद किया है और उनका ध्यान भवसागर की विभीषिका की ओर आकृष्ट कराया है। सचमुच निराला का क्रांतिकारी तेवर बहुमुखी व्यक्तित्व का पुँज एवं भंडार है, जो नमोन्मेष शालिनी प्रतिमा से मंडित है। निराला के व्यक्तित्व में कबीर का अक्खड़पन तथा तलखी है। 'शिवाजी का पत्र' और 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता भारतीय नवजागरण का जीता-जागता उदाहरण है। 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने भारतीय जवानों को जगाना चाहा है। निराला का यह क्रांतिकारी भावना राष्ट्रीय भावना एवं देशप्रेम के रूप में प्रकट हुआ है। बादल की गम्भीर गर्जना को निराला ने क्रांति का प्रतीक मानते हुए कहा है

"नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कण्ठ, नव जलद-मंद्रख ।"

'कुकुरमुत्ता' में निराला ने अपना क्रांतिकारी तेवर एवं आक्रोश तीव्र करते हुए पूँजीवाद पर प्रहार किया है। इसके साथ ही कवि ने पूँजीवाद की सहायक संस्कृति, सभ्यता और साहित्य पर चोट की है। युगस्रष्टा कवि निराला के काव्य का मुख्य स्वर यही है। परिणम चाहे जो कुछ हो कवि ने इस काव्य में 'गुलाब' को पूँजीवादी वर्ग का प्रतीक माना है तो कुकुरमुत्ता को सर्वहारा वर्ग का, जिसकी कथा इस प्रकार है- एक नवाब ने फारस से गुलाब मँगाकर अपने बाग में लगवाया। उसके पास ही गंदी जगह में उग आया कुकुरमुत्ता। एक दिन गुलाब को इठलाते देखकर कुकुरमुत्ता को ताव आ गया और कह उठा-

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत, कर गई खुशबू, रँगे आब
खून चूसा स्वाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपीटलिष्ट
कितनों को तूने बनाया गुलाम
माली कर रखा, सहाया जाड़ा-धाम।" (कुकुरमुत्ता)

इन सारी बातों के द्वारा कुकुरमुत्ता गुलाब की बुराइयों को बतलाता है। तू अमीरों और राजा-नवाबों का प्यारा है। इसी से सर्वसाधारण तुमसे दूर रहा है। कुकुरमुत्ता अपने विषय में कहता है कि मैं स्वयं उगता हूँ। मेरा न कलम लगता है, न मैं किसी का जीवन छीनता हूँ। वह अपने को भारत का छत्र और युद्ध का पैराशूट कहता है।

'तोड़ती पत्थर' शीर्षक कविता में दीन-दुःखियों और दलित-पीड़ितों की दुर्दशा से दुःखी होकर कवि का मन क्रांतिकारी रूप धारण कर लेता है और वह क्रांति का आवाहन करता है। इसका शंखनाद हमें 'बादलराग' में सुनाई पड़ता है। जहाँ वह बादल को 'विप्लव के वीर' कहकर संबोधित करता है और अट्टालिकाओं को 'आतंक भवन' का नाम देकर छोटे से कमल की प्रशस्ति संगीत गाता है, तभी तो उन्होंने कहा है-

"अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन,
धनी, वज्र गर्जन से बादल, त्रसत नमन-सुख ढाँप रहे हैं,
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर। चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार, ऐ जीवन के पारावार।"

सच बात तो यह है कि निराला ने भारतीय जनता के कष्ट को अपनी आत्मा की आँखों से देखा था। इसीलिए वे उसकी मुक्ति के लिए क्रांति का आवाह्न करने को उद्यत हुए थे। इसके लिए कवि असुरमर्दिनी श्यामा-माता काली को छोड़ा दूसरे किसकी शरण में जाता? उन्होंने उसे पुकारा और कहा-

"एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर, चाहिए कितने तुझको हार?
कर मेखला झुण्ड मालाओं से बन मन-अभिराम
एक बार बस और नाच तू श्यामा।"

निराला सर्वहारा वर्ग के प्रति अपनी करुणा और दया प्रकट करते हुए कहते हैं कि यह कैसी नियति एवं विडंबना है कि मानव से बैलों एवं घोड़ों की भाँति कार्य लिया जा रहा है। निराला की यह कविता कलकते की उस दृश्य को प्रदर्शित करती है, जहाँ मनुष्य घोड़े की भाँति एक्का को लेकर दौड़ता है। समाज में तथा देश में सर्वहारा वर्ग के प्रति इस तरह का अन्याय किया जाना, निराला के क्रांतिकारी मन बर्दाश्त

उडीसा का सब्जी बेचनेवाला अक्षय बना अधिकारी

विचार कार्यालय, भुवेनश्वर

उड़ीसा के केंद्रपाड़ा जिले के राजनगर तहसील के दखिना बेदी गांव के 32 वर्षीय युवक अक्षय राउत पर किसी शायर की निम्न पंक्तियां सचमुच खरी उतरती हैं–

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तदबीर से पहले
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है

सच मानिए अपने परिवार के दो वक्त की रोटी की जुगाड़ करने के लिए युवक राउत को झाडू तक लगाने का काम पड़ा ही बल्कि सब्जी तक बेचने पर मजबूर हुआ। फिर अपनी निष्ठा और कर्तव्य परायणता के बल पर आखिकार उड़ीसा प्रशासनिक सेवा के लिए हुई प्रतियोगिता परीक्षा में उतीर्ण होने के पश्चात प्रशासनिक अधिकारी के पद पर जा पहुंचा। राउत का कहना है कि घर की आर्थिक स्थिति दयनीय होने क वजह से सन 1996 में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उसकी पढ़ाई रोक दी गई और सात लोगों के परिवार का पेट पलाने के लिए मात्र 15 वर्ष की उम्र में ही उसने दैनिक वेतनभोग मजदूर का काम करना प्रारंभ कर दिया। भुवनेश्वर में एक भवन का काम करना प्रारंभ कर दिया। भुवनेश्वर में एक भवन निर्माण में मजदूरी का काम करने के बादएक स्कूल में झाडू लगाने का काम वह करने लगा। इसी अवधि मं बचे हुए समय में वह प्राईवेट रूप से एक सांध्य कॉलेज में भी नामांकन करा लिया और इंटर की परीक्षा पास की। बाद में पढ़ाई के साथ–साथ स्कूल में झाडू लगाने काम छोड़कर शहर के पल्ली इलाके के गांधी बाजार में ठेला पर सब्जी बेचना उसने शुरू किया। एक दिन पुलिस ने उसका ठेला भी हटवा दिया फिर भी उसने हिम्मत न हारी और मजदूरी करने के साथ साथ पढ़ाई जारी रखी जिसका परिणाम हुआ कि कुल विश्वविद्यालय से उच्च अंकों और विशेष योग्यता के साथ स्नातक की परीक्षा पास की और बाद में इतिहास विषय में स्नाकोत्तर की परीक्षा में भी उतीर्ण हुए। श्री राउत ने बताया कि उड़ीसा प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता परीक्षा में दो बार असफल होने के बाद फिर सब्जी बेचना शुरू कर दिया और तब तक सब्जी बेचते रहे जब तक इस बार के प्रशासनिक सेवा के परीक्षाफल ने उनके सपने को साकार नहीं कर दिया। श्री राउत से आज के खासकर निर्धन एवं मेधावी युवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए कि ईमानदारी से किया गया परिश्रम कभी बेकार नहीं जाता। कहा भी गया है–

Honest labour never goes usrewarded.

बलात्कारियों को सख्त सजा देनेवाला स्वयं बलात्कारी निकला

मुंबई के उपनगर गोरे गांव में पिछले दिनों आयोजित विश्व सामाजिक मंच के चौथे सम्मेलन में शिरकत करने आयी एक दक्षिण अफ्रीकी महिला प्रतिनिधि एवं दक्षिण अफ्रीका स्थित एड्स अवेयरनेस ट्रस्ट की परियोजना प्रबंधक सेलोन इसेक्स के साथ दक्षिण अफ्रीका उच्च न्यायालय में भारत मूल के एक 53 वर्षीय जज सिराजुद्दीन मोहम्मद इब्राहिम देसाई द्वारा बलात्कार किए जाने के आरोप में उन्हें सलाखों के पीछे किया गया। कहा जाता है कि यह सजा देते वक्त लच्छेदार भाषण देने के लिए मशहूर थे।

आज से दो वर्ष पहले बलात्कार और हत्या के एक मामले में उन्होंने तीन युवकों को कठोर सजाएं सुनाई थीं। तब उन्होंने अपनी टिप्पणी में कहा था कि बलात्कार सबसे अधिक जघन्य अपराध है, क्योंकि बलात्कारी महिला की न केवल इज्जत–आबरू लूटता है बल्कि उसे जीवन भर के लिए मानसिक जख्म देता है। देसाई को कानून जगत की प्रतिष्ठित हस्ती माना जाता था। जून 2003 में सिविल सोसायटी प्रिजन रिफॉर्म इनीशिएटिव नाम कारावास सुधार अभियान का उन्हें मुखिया बनाया गया था। बलात्कारियों के प्रति अति कठोर रुख रखने वाले जज देशाई खुद सलाखों के पीछे चला गया। आखिर अब किस पर विश्वास किया जाए यह सवाल पूरे समाज के सामने खड़ा है। इस घटना से विश्व सामाजिक मंच के इस सम्मेलन में भाग ले रहे प्रतिनिधि तथा आयोजक को भी सहमा दिया और उन लोगों ने इसे बेहद शर्मनाक बताते हुए दो ी व्यक्ति के साथ सख्त कार्रवाई किए जाने की वकालत की।

आखिर कौन आवाज उठाएगा ?

महेश सरिता की हत्या से उठता सवाल

विचार कार्यालय, पटना

बिहार के गया जिले के शब्दों गांव और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में एक समर्पित और सच्चे समाज सेवक के रूप में क्रांति ला रहे महेश और सरिता की हत्या इसलिए की गयी कि वे उस इलाके के भ्रष्ट दलालों एवं ठेकेदारों से लोहा ले रहे थे। राजनीतिज्ञों के इशारे पर की गयी उनकी हत्या से बिहार में ईमान शब्द सत्ताधरियों के लिए एक गाली जैसा हो गया है। एक–एक करके उन सभी आदर्श युवाओं को उसी तरह मौत के घाट उतारा जा रहा है जिस तरह कुछ साल पहले सीवान के चंद्रशेखर की सफदर हाशमी की तरह सरेआम हत्या की गयी और दोषी को आज तक कुछ नहीं हुआ। ईमानदार इंजीयिर सत्येंद्र दुबे की हत्या भी कुछ इसी प्रकार हुई। कुछ दिनों पूर्व हरियाणा में एक रहस्यमय धार्मिक अड्डे में ईमानदार पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की हत्या इसलिए कर दी गई कि वे लगातार इस सच्चे डेरे की सच्ची माफिया तस्वीर जनता के सामने रख रहे थे। कुछ वर्ष पूर्व शराब माफिया ने देहरादून में पत्रकार उमेश डोमाल को मार डाला गया था।

एक आंकड़े के अनुसार बिहार में दर्जनों ईमानदार इंजीनियर ठेकेदार–राजनीतज्ञ माफिया से पगा लेकर मौत की नींद सो चुके हैं। इसी प्रकार कोसीकलां में एम के मिश्रा के पुत्र को ट्रेन से फेंके जाने के 18 घंटे बाद तक एक आम नागरिक के रूप में एफ आई आर दर्ज कर पाने की तमाम को शिशों के बाद भी प्रथम सूचना दर्ज नहीं की गयीं और यह दर्ज तब हुई जब प्रधानमंत्री कार्यालय से फोन किया गया। श्री मिश्रा ने पत्रकारों से सवाल किया था कि अगर वे प्रधानमंत्री का रिश्तेदार नहीं होते तो मेरी कोई नहीं सुनता। उल्लेख्य है कि ट्रेन से फेंके गए शख्स प्रध ाानमंत्री के भांजे थे। ऐसी हत्याओं से आज यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि अगर हत्या के दोषियों को सजा देने के लिए इस देश के लोगा आवाज नहीं उठाएंगे तो उनके लिए आवाज कौन उठाएगा ?

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीयता पर आधारित वर्ष 2004 में दो पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना

रचनाओं के लिए विभिन्न राज्यों के सुप्रसिद्ध रचनाकार, विचारक एवं चिंतक सादर आमंत्रित

मान्यवर,

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था **राष्ट्रीय विचार मंच** की दिल्ली एवं बिहार इकाई की पहल पर मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने विगत 19 मार्च की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि वर्ष 2004 में राष्ट्रीयता पर आधारित हिंदी तथा अंग्रेजी में दो ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन किया जाए जिनमें न केवल राष्ट्रीयता का उद्घोष हो बल्कि उनके निबंधों में सांस्कृतिक नवजागरण, राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रगति और अखंड भारत निर्माण की दिशा में प्रेरणा के स्वर हों। कारण कि देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में जो संकट के काले बादल मंडरा रहे हैं और जिसकी वजह से यह राष्ट्र अपेक्षित विकास से वंचित है उसके मद्देनजर मंच ने यह महसूस किया कि देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का पिछले कई दशक से उत्तरोत्तर ह्रास होता चला जा रहा है। आखिर तभी तो कई ऐसे देश, जिसने हमसे बाद में आजादी हासिल की वह राष्ट्रीयता के बल पर आज प्रगति के उस मुकाम पर पहुँच चुका है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं। यह सच है कि राष्ट्रीयता के बिना राष्ट्र निर्माण संभव नहीं।

'विचार दृष्टि' के वैचारिक मंच ने कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर इन पुस्तकों के प्रकाशन का निर्णय लिया है। निर्णयानुसार इन दोनों पुस्तकों की अलग-अलग पृष्ठ संख्या 304 होगी जिसके लिए विभिन्न राज्यों के सुपरिचित एवं ख्याति प्राप्त रचनाकारों, चिंतकों एवं विचारकों से उनके शोधपूर्ण निबंध आमंत्रित किए जा रहे हैं। संभावित विषयों की सूची संलग्न है, चिन्हित विषयों पर निबंध लिखने की स्वीकृति विद्वान रचनाकारों से प्राप्त हो चुकी है। आप विद्वतजनों से मैं सादर अनुरोध करता हूँ, कि संलग्न सूची के विषयों में से किसी एक विषय पर अधिकतम 3000 और निम्नतम 2000 शब्दों में (डबल डिमाय के करीब 8 पृष्ठ) अपने संक्षिप्त परिचय एवं पासपोर्ट आकार की श्वेत-श्याम तथा रंगीन तस्वीर की एक-एक प्रति सहित शोधपूर्ण निबंध(संदर्भ के साथ) मेरे दिल्ली अथवा पटना के पते पर डाक, फैक्स अथवा ई-मेल पर आगामी 30 जून 2004 तक भेजने की कृपा करें। अगर अपरिहार्य कारणों की वजह से कोई विद्वान रचनाकार उक्त तिथि तक अपनी रचना भेजने में समर्थ न हों तो उनकी रचना का 31 जुलाई तक भी स्वागत होगा। प्राप्त निबंधों का संपादन और कंप्यूटर पर शब्द-संयोजन अगस्त-सितंबर 04 में होगा तथा प्रकाशन अक्टूबर में। उल्लेख्य है कि इन पुस्तकों का लोकार्पण आगामी 31 अक्टूबर 2004 को मंच के द्वारा नई दिल्ली में आयोजित लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 129वें जयंती-समारोह के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति अथवा उपराष्ट्रपति के हाथों संपन्न होगा।

निर्धारित विषयों के शब्दों में परिवर्तन के लिए रचनाकार स्वतंत्र हैं पर ध्यान रहे कि हर हाल में निबंध से राष्ट्रीयता, देश-प्रेम तथा देशभक्ति की भावना का उद्घोष हो। इस संदर्भ में मैं यह भी सूचित करना चाहूँगा कि मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) साधुशरण के साथ मैं आगामी 10 जून से 21 जून 2004 तक की अवधि में भारत के चेन्नै, बैंगलोर, तिरूवनंतपुरम तथा हैदराबाद और जुलाई के द्वितीय सप्ताह में पश्चिमी भारत के मुंबई, अहमदाबाद तथा जयपुर का दौरा करूँगा ताकि इन राज्यों में स्थित मंच की शाखाओं के कार्यों का समन्वय तथा उनके सहयोग से वांछित निबंधों का संग्रह भी हो सकेगा। चयन किए गए विषय की सूचना मंच के दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कार्यालय को 30 अप्रैल 2004 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि मंच के इस राष्ट्रीय अनुष्ठान में आप अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान कर इसे कृतार्थ करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ
सादर।

भवदीय,

(signature)

(सिद्धेश्वर)
राष्ट्रीय महासचिव
सह
संपादक, 'विचार दृष्टि'

संलग्नक: हिंदी तथा अंग्रेजी के संभावित विषयों की सूची

प्रतिष्ठा में,
देश के सुप्रसिद्ध रचनाकारों के नाम

पटना का पता:
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
दूरभाष:0612-2228519

'दृष्टि', यू0 207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-110092
दूरभाष:011-22059410,22530652
फैक्स:011-22530652
E-mail: sidheshwar@hotmail.com

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीयता पर आधारित पुस्तक के वर्ष 2004 में प्रकाशन हेतु संभावित विषय

1. राष्ट्रीयता और नागरिकों का कर्तव्य-बोध
2. राष्ट्र के निर्माण में साहित्य की सार्थकता
3. राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रभाषा
4. राष्ट्रीय एकता में दक्षिण भारतीय भाषाओं का अवदान
5. राष्ट्रीय एकता में पूर्वोत्तर भाषाओं का योगदान
6. हिंदी काव्य में राष्ट्र चेतना के स्वर
7. राष्ट्र निर्माण और शिक्षा नीति
8. राष्ट्रीयता के बाधक व साधक तत्व-
9. सूखती संवेदना और मुरझाता राष्ट्र
10. राष्ट्रीय नवजागरण की भारतीय अवधारणा
11. राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्‌भाव
12. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता
13. गाँधीवाद और राष्ट्रीयता
14. धर्म और राष्ट्रीयता
15. मीडिया और राष्ट्रीयता
16. राष्ट्रीयता और दलित साहित्य
17. राष्ट्र की समकालीन चुनौतियाँ
18. मानवीय नैतिक मूल्य और राष्ट्रीयता
19. भारतीय प्राचीन ग्रंथों में राष्ट्रीयता
20. राष्ट्रीयता एकता में भारतीय संतों एवं सुफियों का योगदान
21. राष्ट्रीयता और बाल चेतना
22. राष्ट्र निर्माण में युवाशक्ति
23. राष्ट्रीयता और नारी
24. राष्ट्रीयता और जन संख्यिकीय परिवर्तन
25. राष्ट्रीय गीत: वंदे मातरम्,जन गन मन तथा सारे जहाँ से अच्छा......
26. राष्ट्रीयता के प्रतीक
27. राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयता
28. राष्ट्रवाद: अवधारणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन
29. लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण और राष्ट्रीय चिंतन
30. भारतीय संगीत और देशभक्ति
31. पंचायती राज और सत्ता का विकेंद्रीकरण
32. भारत के जनप्रतिनिधि और राष्ट्रीयता
33. लोकतंत्र और राष्ट्रीय चेतना
34. राष्ट्रीयता और भारतीय संविधान
35. आतंकवाद: राष्ट्र के समक्ष चुनौतियाँ
36. उर्दू साहित्य और राष्ट्र चेतना
37. लोक साहित्य में राष्ट्रीयता
38. राष्ट्रीयता के विकास में भारतीय नेताओं की भूमिका
39. राष्ट्र प्रेम के अमर गायक सुब्रह्मण्य भारती
40. राष्ट्रीयता और सरदार पटेल
41. राष्ट्रीयता और संत कवि महर्षि तिरुवल्लुवर
42. भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता की परिकल्पनाएँ
43. कबीर की समन्वयवादी संकल्पनाओं में राष्ट्रीय चेतना
44. भारतीय राजनीति और लोकतांत्रिक परंपराएँ
45. भूमंडलीकरण और राष्ट्रीयता
46. राष्ट्र-चेतना और भारतीय संसद
47. राष्ट्रीय एकता और अहिंसा
48. खेल और राष्ट्रीय भावना
49. राष्ट्रीयता का वैचारिक ढाँचा
50. राष्ट्रीय अखण्डता रिपोर्ट और सरकार की अनुवर्ती कार्रवाईयाँ
51. राष्ट्रीयता के लिए न्यायपालिका की मजबूती
52. राष्ट्रीयता और भारतीय पर्व-त्योहार
53. राष्ट्रीयता और भारत का सुधारवादी आंदोलन
54. राष्ट्रीयता और किसान
55. सामाजिक परिवर्तन-बोध और राष्ट्रीयता

Possible topics for a book to be published by Rashtriya Vichar Manch in the year 2004.

1. Nationalism : Conceptual Parameter
2. Nationalism and Composite Culture in India
3. Nationalism and Communal harmony in India
4. Nationalism and Reform movement in India
5. The role of media in Nationalism.
6. Cultural ethos of Indian nationalism.
7. National Integration Reports & the Followup actions of the Govt.
8. Development of Human Resourses : Ways & means.
9. Obstacles and Promoting Factures of Integration in India.
10. Where have we erred in the past?
11. Strengthening of judiciary for one Nation.
12. Multi- Party system weakens India that is Bharat.
13. Regionlism and Federating Units - Not one concept
14. Middle Class not properly roped in the main Stream.
15. Growing Population- a menace to nationalism
16. Nationalism through Sports & Games.
17. Globlisation and Nationalism.
18. The Indian Songs & Patriotism.
19. The Indian Festivals & Nationalism.
20. Nationalism & the Indian Languages.
21. Secularism & nationalism
22. South Indian languages & nationalism.
23. Nationalism & education policy.
24. Nationalism through Inidan literature.
25. Freedom does not mean total licence.
26. Nationalism & the Youth.
27. Women and Nationalism
28. Nationalism & the child.
29. Democratic values & Nationalism
30. Religion & Nationalism
31. Citizen's values &Nationalism
32. National awareness in Hindi poems
33. Patriotism in Indian classical music.
34. Nationalism and demography
35. National awareness and Indian Parliament
36. Nationalism and non-violence
37. Indian politics and democrtic tolerance.
38. Role of Sardar Patel in National Integration
39. Nationalism and Indian politicians
40. Gandhism and Nationalism
41. Indian farmers & Nationalism
42. Nationalism through Social change.
43. De-centralisation of power through Panchayati Raj
44. People's Representatives & Nationalism
45. Nationalism and the saint Mahariishi Tiruvalluvar
46. Nationalism and Social harmony
47. Nationalism in ancient epics
48. Nationalism and Internationalism

'आदमी' की तलाश में रेणु का संपूर्ण कथा–साहित्य

रेणु की 83वीं जयंती पर संगोष्ठी

अमर कथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु की रचनाएँ संवदेनहीन व्यक्ति को भी संवेदनशील बनाने की क्षमता रखती हैं। इनकी कथाओं में ग्रामीण जीवन का खुबसूरत चित्रण है। ये विचार हैं साहित्यकार राय प्रभाकर प्रसाद के, जिसे उन्होंने रेणु की 83 वीं जयंती पर आयोजित एक संगोष्ठी में अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किए।

राष्ट्रीय विचार मंच को बिहार इकाई द्वारा पटना में आयोजित संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो. लखनलाल सिंह 'आरोही' ने कहा कि रेणु की रचनाएं सोने की अंगूठी में नगीने के समान है। इस अवसर पर मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने 'रेणु की कथाएं : पृष्ठभूमि और परिवेश' विषय पर एक सारगर्भित आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'तीसरी कसम' का हिरामन हो या 'अच्छे आदमी' का ठीकेदार रेणु उनमें मानवीयता के आकांक्षी हैं। उनका संपूर्ण कथा–साहित्य आदमी की तलाश में लगा है। रेणु हिंदी के पहले कथाकार हैं जो 'प्राणों में घुल हुए रंग' और 'मन के रंग' को, यानी मनुष्य के राग–विराग और प्रेम को दुःख और करुणा को, हास–उल्लास को आत्मा के शिल्पी के रूप में उपस्थित होते हैं।

संगोष्ठी में रामचरित्र दास 'अचल', कर्नल एस एस राय, डॉ. शाहिद जमील, बी एन विश्वकर्मा, विजय बिहारी सिन्हा, श्रीकांत व्यास तथा शिव कुमार सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन किया महासचिव मनोज कुमार ने तथा आगत अतिथियों के प्रति कोषाध्यक्ष रवीन्द्र कुमार यादव ने आभार व्यक्त किय।

–रवीन्द्र कुमार यादव, पटना से

'कामायनी' के कवि प्रसाद याद किए गए 'मानवोदय' की ओर से

साहित्य–कला–संस्कृति को समर्पित संस्था 'मानवोदय' की ओर से पिछले दिनों पटना के 'शरणनिवास' में हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कृति कामायनी के सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद की जयंती के अवसर पर संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद 'मंजुल' की अध्यक्षता में एक जीवंत संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कवि 'प्रसाद' को याद करते हुए उनकी कृति 'कामायनी' को विगत शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन बताया गया। इस अवसर पर सुपरिचित साहित्यकार प्रो. (डॉ.) दीनानाथ 'शरण' ने कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के क्षेत्रों में भी 'प्रसाद' जी के योगदान की चर्चा की तथा संतोष सावन, आलोक चोपड़ा, राजभवन सिंह, डॉ. वन्दना वीथिका, रामकिशोर विरागी तथा चुल्हन गराई आदि ने कवि 'प्रसाद' के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में संपन्न कवि गोष्ठी में ज्वाला प्रसाद, अर्चना धवन, श्वेता धवन, मोहनलाल यादव आदि ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को सराबोर किया। प्रारंभ में संस्था के महासचिव प्रभात कुमार धवन ने अतिथि कवियों व श्रोताओं का स्वागत किया तथा शैलजा सक्सेना ने आभार व्यक्त

किया।

इसी संस्था की ओर से दादाबाड़ी जैन मंदिर के आराधना भवन में आयोजित कवि सम्मेलन में अनिरुद्ध प्रसाद, प्रेम किरण, विन्देश्वरी, रासरेख सिंह, रामनिवास शर्मा, नवीन रस्तोगी, चन्द्रप्रकाश, आलोक चोपड़ा, विनोद दउन, वंशवर्द्धन, डॉ. मेहता नगेन्द्र आदि ने श्रृंगार, नारी शोषण, पर्यावरण तथा देश प्रेम पर केंद्रित कविताओं का पाठ कर लोगों को भाव विभोर किया।

प्रभात कुमार धवन, पटना से?

आस्वाद के 19वें मूर्ख सम्मेलन का रसास्वादन

विगत 6 मार्च को दिल्ली के साहित्यिक–सांस्कृतिक मंच 'आस्वाद' के तत्वावधान में होली मिलन के अवसर पर आयोजित 19वें मूर्ख सम्मेलन में हिंदी हास्य–व्यंग्य के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. प्रेम जनमेजय पूर्व मूर्खाध्यक्ष डॉ. राहुल के स्थान पर महामूर्खाध्यक्ष का आसन ग्रहण कर इस दिशा में विकास करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर महानगर के अनेक साहित्यकार, व्यंग्यकार, संस्कृतिकर्मी ने गीत–संगीत एवं हास्य–व्यंग्य कविताओं का पाठ कर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विशेष कार्यक्रम फूलझड़ियां और फुलवारी में कई महिलाओं को गुलाब, रातरानी, वेला, चमेली आदि नामों से नवाजा गया तो कुछ के हिस्से 'डेंजरजोन' मेट्रो रेल, हाई पावर तथा डिटरजेंट जैसी पदवियां आईं। इसी प्रकार पुरुषों को चेयरमैन, पेटीकोर्ट गवर्नमेंट, वैशाख नंदन जैसी उपाधियों से अलंकृत किया गया।

हास्य–व्यंग्यकार मनोहर लाल 'रत्नम' की कृति 'ईमेल–फीमेल' का डॉ. जनमेजय के हाथों लोकार्पण संपन्न हुआ। डॉ. धर्मेंद्रनाथ अमन, मनोहर लाल 'रत्नम', अलका सिन्हा, शरत श्रीवास्तव, महेन्द्र प्रसाद सिंह, सुषमा कंसल, रामअवतार कैरवां, प्रमोद कुमार तिवारी सत्यपाल सिंह 'सुश्य', डॉ. सुंदरलाल कथुरिया डॉ. राहुल तथा रामनारायण आदि ने अपनी हास्य–व्यंग्य कविताओं से लोगों को सराबोर किया। संस्था के संस्थापक डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यक्रम से न केवल लोगों का स्वास्थ्य ठीक हो जाता है बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों एवं मर्यादाओं की भी रक्षा हो जाती है।

डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव, दिल्ली से।

People's Co-Operative House Construction Society Ltd. Kankar Bagh, Patna-800020

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल 1730 सदस्य हैं जिनमें 1600 सदस्यों को लोहियानगर, कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूखंड आवंटित हैं तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित हैं। समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नौमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नौमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अत: वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नौमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव तथा संबंधित प्रयोजनों के लिए आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिए स्ट्रीट लाइट, सड़क मरम्मत, मैनहोल सफाई, पार्क निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल.पी.के.राजगृहार	सिद्धेश्वर प्रसाद	प्रो. एम.पी. सिन्हा
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव

डॉ. महेन्द्र भटनागर की कविताओं के तेलुगु–काव्यानुवाद

'दीपान्नी वेलिगिंचु' का लोकार्पण

विशाखापट्टणम की हिंदी–तेलुगु लेखिका श्रीमती पारनन्दि निर्मला द्वारा सुप्रसिद्ध कवि डॉ. महेंद्र भटनागर की चौंतीस कविताओं के तेलुगु भाषा में काव्यानुवाद–'दीपान्नी वेलिगिंचु' (दीया जलाओ) का लोकार्पण आंध्र विश्वविद्यालय की हिंदी प्रोफेसर डॉ एस शेषारत्नम ने संपन्न किया। अपने अभिभाषण में उन्होंने कहा, "डा. महेन्द्र भटनागर बहुमुखी प्रज्ञाशाली हैं। कवि, गीतकार और समीक्षक के रूप में, वे हिंदी–साहित्य में लब्ध–प्रतिष्ठ हैं। सन् 1941 में विरचित 'तारों के गीत' कृति से कवि–रूप में अवतरित हुए डॉ. महेंद्र भटनागर जी की सत्रह काव्य कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। बीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्पष्ट रूप में दिखायी देने वाली प्रायः सभी काव्य–शैलियों का प्रयोग करने पर भी वे वादों एवं विवादों से बहुत दूर रहे हैं। इनकी कविताओं में सामान्य मानव के प्रति अटल प्रेम और प्रकृति की रमणीयता के प्रति अपरिमित आकर्षण दिखायी देता है। शोषित–वर्ग पर किये जानेवाले अत्याचारों की निंदा करते हुए, सम–समाज की स्थापना के लिए, असमानताओं का नामोनिशां मिटा देने के लिए सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा

रखनेवाले इस कवि ने अपनी दार्शनिकता को मर्म–गर्भ पूर्ण अभिव्यक्ति दी हैं। प्रकृति और स्त्री के प्रति इनकी दृष्टि बड़ी ही सूक्ष्म और कवि हृदय को उदघाटित करती दृष्टिगोचर होती है। समाज में परिव्याप्त जड़ता, यांत्रिकता, स्वार्थपरता, अराजकता का तिरस्कार करते हुए मानवीय मूल्यों की रक्षा करने के लिए छटपटाते इस कवि ने अपनी कविताओं में समाज–कल्याण को अपना लक्ष्य बनाया है, जो आदर्शप्राय है। प्रणय–वीथिकाओं में रमने वाले इनके गीत भी मकदंद एवं सौरभ को फैलाकर पाठकों को तन्मय कर देते हैं। जीवन के उतार–चढ़ाव को बहुत ही मनोज्ञता से चित्रित करनेवाला यह कवि मानसिक विश्लेषण करने में सिद्धहस्त है। अनुभूति और अभिव्यक्तीकरण में इनकी कविताएं आधुनिक हिंदी कविता के वैविध्य को प्रकट करती है। इन कविताओं का तेलुगु अनुवाद कर श्रीमती पारनन्दि निर्मला ने तेलुगू–पाठकों को एक महान् राष्ट्रीय कवि से परिचित कराया है, जो हर्ष का विषय है। ये कविताएं कवि की परिशीलन शक्ति, प्रणयाराधना, प्रकृति–प्रेम, अभ्युदाय भाव और आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करती हैं। कुछ कविताओं में कवि ने सामाजिक विप्लव का शंख निनांदित कर, सामान्य मानव को चैतन्य–मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया है। अनुवाद सरल एवं हृदयग्राह्य हैं। भाव व्यक्तीकरण में स्पष्टता है।

श्रीमती पारनन्दि निर्मला, विशाखापट्टनम से

बेलगाम राजनेताओं पर अंकुश लगाए जनता

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान में आह्वान

जबतक देशवासियों का नैतिक और चारित्रिक उत्थान नहीं होगा तब तक हम राष्ट्र को न तो अखण्ड रख सकते हैं और न ही इसका अपेक्षित विकास ही संभव है। इस दृष्टिकोण से हमारा कर्तव्य बनता है कि इस चुनाव में हम अच्छी छविवाले को ही हम अपना जन प्रतिनिधि चुनें।

ये उद्गार हैं अहिंसा यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' के, जिसे उन्होंने पिछले 21 मार्च को नई दिल्ली में अणुव्रत महासमिति की ओर से आयोजित चुनाव शुद्धि अभियान 2004 की उदघाटन सभा में व्यक्त किये। डॉ. संजय पासवान ने अपने चुनाव में मतदाताओं को बजाय पतित करने के उन्हें संस्कारित करने का संकल्प लिया। साम्यवादी दल के डॉ. डी. राजा ने अपराधियों को तिरस्कार करने की बात कही मौलाना मुफ्ती मुकर्रम ने भारतीय लोकतंत्र को मौजूदा हालात के अनुकूल नहीं बताया। विधिवेत्ता डॉ. मनु अभिषेक सिगवीं ने राजनीति और वकालत को समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े बताते हुए उन्हें शुद्ध करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. कमल टाबरी एक मन के लोगों को एकत्र होकर समग्रता में चिंतन करने की आवश्यकता जतायी। मुनिश्री प्रशांत कुमार ने वैसे लोगों को चूनने की बात कही, जिनमें राष्ट्रीयता की भावना हो और सामाजिक परिवर्तन के लिए योग्य हों। महासमिति के अध्यक्ष ने प्रो. धर्मेन्द्र नाथ अमन ने स्वागत के क्रम में लोकतंत्र को शासन पद्धति के साथ–साथ जीवन दर्शन करा दिया जिसे नैतिक मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। अंत में अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया महामंत्री विजय राज सुराना ने। प्रमोद घोड़ावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से
22 भारतीय भाषाओं के लेखक सम्मानित

विचार कार्यालय, दिल्ली

वर्ष 2003 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से निम्नांकित 22 भारतीय भाषाओं के लेखकों को उनके आगे अंकित कृतियों के लिए सम्मानित किया गया-

1.	कमलेश्वर	हिंदी	'कितने पाकिस्तान'	उपन्यास
2.	मीनाक्षी मुखर्जी	अँग्रेजी	'द पेरिशेबल एंपायर: एस्सेज ऑन इंडियन राइटिंग इन इंग्लिस'	निबंध
3.	सैयद मुहम्मद अशरफ	उर्दू	'बाद-ए-सबका इंतिजार'	कहानी संग्रह
4.	भास्कराचार्य त्रिपाठी	संस्कृत	'निर्झाणी'	कविता संग्रह
5.	संतोष मायामोहन	राजस्थानी	'सिमरण'	कविता
6.	नीरजा रेणु	मैथिली	'ऋतम्भरा'	कहानी संग्रह
7.	सी. डी. सिद्धू	पंजाबी	'भगत सिंह शहीद : नाटक तिकड़ी'	नाटक
8.	बीरेश्वर बरूआ	असमिया	'अनेक मानुह अनेक ढाई आरू निर्जनता'	कविता
9.	प्रफुल्ल राय	बँगला	'क्रांतिकाल'	उपन्यास
10.	बिंदु गिरधर लाल भट्ट	गुजराती	'अखेपातर'	उपन्यास
11.	के. वी. सुब्बण्ण	कन्नड़	'कविराज मार्ग मन्तु कन्नड़ जगस्तु'	निबंध
12.	सारा जोसेफ	मलयालम	'आल्हाउडेपेन्नमाक्कुल'	उपन्यास
13.	सुधीर नाइरोइबम	मणिपुरी	'लैई खरा पुंसिखरा'	कहानीसंग्रह
14.	त्रयंबक विनायक सदेशमुख	मराठी	'डांगोरा एका नगरीचा'	उपन्यास
15.	विंद्या सुब्बा	नेपाली	'अथाह'	उपन्यास
16.	जातीन्द्र मोहन महंती	ओडिया	'सूर्यस्नान'	आलोचना
17.	हीरो ठाकुर	सिंधी	'तहकीक ऐन तनकीद'	निबंध
18.	आर वैर मुत्तु	तमिल	'कल्लिकस्तु इतिकामस'	उपन्यास
19.	उत्पल सत्यनारायणाचार्य	तेलुगु	'कृष्ण चंद्रोध्यमु'	कविता संग्रह
20.	आश्विनी मगोत्रा	डोगरी	'झुल्ला बड़ा देआ पत्तरा'	कविता संग्रह
21.	सोमनाथ जुत्शी	कश्मीरी	'भेलो फोल गाश'	कहानी
22.	शशांक सीताराम	कोंकणी	'परीध'	कहानी संग्रह

पुरस्कार के रूप में प्रत्येक सम्मानित लेखकों को 50 हजार रुपए की राशि, प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिह्न प्रदान किए गए। साहित्य अकादमी के इस सम्मारोह को संबोधित किया मुख्य अतिथि दिलीप चित्रे ने तथा इस अवसर पर दुनिया की जानी मानी नाटककार सजन लोरी, पावर्स भी उपस्थिति थे। अकादमी के इतिहास में पहली बार इसने कई सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर अपना पक्ष रखते हुए हस्तक्षेप किया है जो इसकी नैतिक जिम्मेदारी है।

-मनोज मोहन, नई दिल्ली से

सत्यदेव नारायण : कलम से साहित्यकार कैमरे से कलाकार

✍ डॉ. राष्ट्रबंधु

चालीस साल से भी ऊपर हो गए, मेरा पत्र व्यवहार श्री नारायण भक्त जी से था और मैं उनसे मिलने के लिए पटना आकाशवाणी केंद्र में अपने साथी श्री कमल भैया के साथ चला गया। भक्तजी से भेंट हुई और जब मैंने रात्रि बिताने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने श्री सत्यदेव नारायण सिन्हा के घर चले जाने की बात कही। उनकी कोई अड़चन हो सकती है, इतना ही मानकर मैं श्री सत्यदेव के साथ पटना जंक्शन से पटना सिटी स्टेशन चला गया और रिक्शे से घर पहुँच गया। सिन्हाजी की अविरल आत्मीयता ने ऐसा बांधा कि उनके घर को हमने अपने-अपने घरों से अधिक अपना लिया । करीने से यथास्थान चीजें रखी गई थीं, सफाई का पूरा ध्यान सिन्हा जी और उनके परिवारिकजन भी रखते थे। कमल भैया भी खुश थे, मैं भी खुश था। चलते समय वे मुझे ट्रेन तक छोड़ गए।

यह आत्मीयता, संध्या की छाया की तरह बढ़ती गई। सिन्हा जी मेरे आग्रह पर कानपुर कई बार आए। मेरे बड़े पुत्र भूषण के यज्ञोपनीत में आए और कुछ वर्षों बाद उसके विवाह में भी। उनका साथी कैमरा कानपुर में भी कमाल दिखा गया। मैं उन्हें लेकर बिठूर और नानाराव पार्क आदि तीर्थों में गया। सभी जगह उन्होंने फोटो खींचे और विवरण लिखे। विवाह में भूषण के सिर पर मौर की बहुत प्रशंसा की गई तब उन्होंने पटना के मौर पर लिखा। इन लेखों का प्रकाशन साप्ताहिक हिन्दुस्तान और साप्ताहिक धर्मयुग में हुआ तो मैं भी उनके कृतित्व का लोहा मान गया।

नौकरी के सिलसिले में मुझे टड़ा सागर में रहना पड़ा तो वहाँ महावीर जयंती को अच्छे अखबारों में वहाँ के मंदिर के बारे में लिखने और छपाने की जरूरत महसूस की गई। मैंने श्री शरद जोशी को टड़ा आने का आमंत्रण दिया और वे पधारे। पटना से श्री सत्यदेव नारायण सिन्हा को भी बुलाया था, वे नहीं आए। सप्ताह में ही उनका पत्र आया कि भाई मैं मुगलसराय तक आया। वहाँ किसी वंचक ने मेरी अटैची गायब कर दी। लुंगी, कमीज और टिकट शेष था। इस परिस्थिति में आना उचित नहीं था। मैंने बहुत संजीदगी से पूरा घटना पर विचार किया और सिन्हा जी के पत्र को अपने पत्र के साथ भारती जी को लिखा। भारती जी प्राय: उन्हें पत्र लिख कर बिहार या पटना से संबंधित कोई विषय देकर फोटो सहित आलेख मंगवाते थे और आवरण पृष्ठ तक उनके फोटुओं से अलंकृत करते थे। कैमरे की चोरी से उनके काम में रूकावट तो आ ही गई थी अत: उन्होंने मुंबई आने के अग्रिम किराया भेजा और

लिखा कि आकर अपनी मनपसंद का कैमरा खरीद लें। मेरे लिखने से उनको संवेदनशीलता का स्रोत स्रवित हो उठा, यह मेरी विशेषता नहीं, सिन्हा जी की लेखकीय विशिष्टता और धर्मवीर भारती की गुण ग्राहकता से ही हुआ। जब जब सिन्हा जी कानपुर आए, मेरे बच्चों, माता-पिता और पत्नी में इतने समरस हो जाते थे कि वे मेरे भाई ही थे, जैसे लिखन की जरूरत नहीं।

भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर ने उनको सम्मानित करने कानपुर बुलाया तो तदकालीन संस्थान के महामंत्री श्री तपेश्वरी प्रसाद गुप्त ने अपने प्रतिष्ठान में उन्हें आमंत्रित करके अतिरिक्त सम्मान प्रदान किया। एक कलाकार ने उन्हें चित्र भी भेंट किया था।

मैं सिन्हा जी की दो बेटियों के विवाह में कानपुर से पटना उनके घर गया। सभी कुछ अकेले संभालने की बहुव्यस्तता में भी उन्होंने मेरा पूरा ध्यान रखा। मैं उनके साथ पावापूरी भी गया। भगवान महावीर के निर्वाण स्थलों पर उन्होंने लेख लिखा जो ससम्मान प्रकाशित हुआ।

सिन्हा जी विषय पर गहरा चिन्तन प्रस्तुत करते थे और हर विवरण देते थे। कलम और कैमरे से लेखन को उत्कृष्ट बना देते थे। उनकी पांडु लिपि भी बहुत सुन्दर और आकर्षक होती थी। कहीं भी काटपीट नहीं करते थे। ऐसी सुंदर समीचीन और सामयिक रचना को प्रकाशित करना, संपादकीय गौरव का निमित बनता था।

बाल साहित्य लेखन में उन्होंने मेरा आग्रह स्वीकार करके श्रृंखलापूर्ण आलेख लिखे। सर्कस की कहानी, रोटी की कहानी, आजादी की पहरेदारी में धर्मयुग में क्रमश: कड़ियाँ प्रकाशित हुई जिनकी प्रतिक्रियाएँ बहुत अनुकूल थी और इनसे प्रेरित होकर राजपाल एण्ड संस के श्री विश्वनाथ ने बिहार की जानकारी और अन्य पुस्तकें अपने यहाँ से प्रकाशित की।

विगत वर्ष उनके पुत्र राजीव का विवाह था। इसमें आने का निमंत्रण उन्होंने मुझे फोन पर दिया और कहा कि मैं बीमार रहता हूँ और यह भी हो सकता है कि मेरी भेंट अंतिम हो।

दो दिनों का अंतराल था- मुझे चेन्नई में अग्रज श्री एस. स्वामीनाथन् की बिटिया शोभिनी के विवाह में जाना भी अपरिहार्य था और वहाँ से भागमभाग करके अनुज-पुत्र के विवाह में पटना पहुँचना था। सत्तर साल की ढलती क्षमताओं की उम्र में आत्मबल के सहारे मैं पहुँच गया। सिन्हा जी गदगद और उत्फुल्ल थे। उन्होंने कुर्ता-पायजामा मेरे लिए कुछ घंटों में तैयार करा दिया और कहा कि दोनों भाई एक जैसी पोशाक में रहेंगे। उतना आनंद हम दोनों के लिए अभूतपूर्व था।

सिन्हा जी का महाप्रस्थान और मेरे जीवन में उनका स्थान दोनों ही अविस्मरणीय हैं।

संपर्क: संपादक, बाल साहित्य समीक्षा
109/309 रामकृष्ण नगर,
कानपुर-208012

हिंदी एवं मगही नाट्य साहित्य के सशक्त नाटककार थे

बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा'

✍ सिद्धेश्वर

हिंदी एवं मगहो साहित्य की नाटक विधा में महारत हासिल करनेवाले बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा' का पिछले 3 जनवरी 2004 को पक्षाघात एवं मस्तिष्क श्रवण की बीमारी से निधन हो गया। स्व० 'लमगोड़ा' न केवल नाट्कों को पूर्णरूपेण चारितार्थ किया। गौर वर्ष तथा-भरे-पूरे शरीर के छह फुटे बाबूराम सिंह को 'लमगोड़ा' की पदवी भी उनकी लंबाई के मद्दे नजर दी गयी थी।

जहानाबाद जिले के गंगापुर गाँव में 16 अक्टूबर 1926 ई० को जन्में लमगोड़ा जी की प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा क्रमश: हुलासगंज मध्य एवं जहानाबाद उच्च विद्यालय में हुई। तत्पश्चात् उन्होंने बी. एन. कॉलेज, पटना से स्नातक की परीक्षा उतीर्ण की जहाँ उन्हें प्रो० राम बुझावन सिंह सरीखे सुलझे साहित्यकार का सन्निध्य मिला। संभवत: हिंदी साहित्य के प्रति इनकी अभिरूचि भी वहीं से जगी।

प्रारंभ में पटना से प्रकाशित 'नवराष्ट्र' हिंदी दैनिक से 'लमगोड़ा' जी जुड़े तथा अल्प समय तक ही उसमें उन्होंने अपनी सेवा अर्पित की। जीवकोपार्जन हेतु केंद्रीय सीमा शुल्क एवं उत्पाद विभाग में जून 1951 ई० में इन्हें लिपिक का पद स्वीकारना पड़ा जहाँ सन् 1953 में हीं इनकी निष्ठा के मद्दे नजर निरीक्षक के पद पर इन्हें प्रोन्नति मिल गयी। उसके बाद सीमा शुल्क अधीक्षक के पद पर इन्हें प्रोन्नति मिली, और पटना हवाई अड्डा पर इनका पदस्थापन हुआ जहाँ से वे 1984 ई० के अक्टूबर में वे सेवा निवृत हुए। वस्तुत: अवकाश ग्रहण के बाद ही इन्होंने साहित्य की दुनियाँ में कदम रखा तथा शुरू में ही 'लोरीटा' नाम से एक प्रकाशन संस्था का गठन किया जिसके द्वारा इनकी रचनाओं का प्रकाशन होता रहा। नाट्क-लेखन में इनकी लेखनी से दो दर्जन अधिक ऐतिहासिक नाटक लिखे गए। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रकाशन पूर्व भी इनके कई नाटकों का पाटलीपुत्र के रंगामंच से सफल मंचन हुआ। पटना के प्रबुद्ध रंगकर्मी तथा सुधी श्रोताओं द्वारा इन नाटकों की काफी सराहना की गई। किंतु खेद की बात यह कि बिहार सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा अधिकतर बिहार के बाहर के ही नाटककार सम्मानित किए गए। इस दृष्टि से 'लमगोड़ा' जी पर यह कहावत अक्षरश: चरितार्थ रही कि घर को जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध। अपने जीवन के अखिरी क्षण तक बिहार सरकार के लिए वे जोगड़ा ही बने रहे।

नाटक के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी तथा कविता में 'लमगोड़ा' जी की कलम चली है। इनका अद्यतन उपन्यास 'उन्तीसवाँ व्यास' इस अर्थ में चर्चित हुआ कि इसमें इसमें महाभारत की पुनर्व्याख्या की गयी है। इनके श्रेष्ठ पद्य-संग्रह में 'शव की आत्मा' तथा 1992 में मगही में बुमुल दिया के मिट्टी शीर्षक प्रकाशित इनका गद्य-नाट्क

काफी चर्चित रहा। इसी बीच इनकी 51 कविताओं का एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ। 'लमगोड़ा' जी ने निम्नांकित कृतियों से हिंदी एवं मगही साहित्य को समृद्ध किया हिंदी में 1. एतिहासिक नाटक- कोशा, प्रणयपल (वासवदत्ता), प्रतिशोध (सौगंध) अब (तिष्यरक्षिता), आत्म समर्पण (अब चौला) और सबशेष हो गया (मस्तानी) 2. सामाजिक नाटक- गाँव की ओर, बाबा की सारंगी, गुंबद गिर गया तथा एक और मुनादी 3. साहसिक नाटक- यह मौत नहीं जिंदगी है तथा मौत के मुँह में मौत से अन्य प्रकार के नाटक- (भारतीय भावात्मक एकता) महामानेवर सागरतीरे 5. राष्ट्रीयता- अपनी धरती, बपना देश 6. पौराणिक नाटक- भगवान श्री कृष्ण के अंतिम दिन (गद्य में), वह शम्बुक (पद्य में), परिजात, कच देवयानी, 7. एक विद्यार्थी-एक आचार्य, दिव्य-नृत्य, राक्षस, वह साझं-वह शव, कृतम स्मर, जब सरदार ने मिट्टी से मर्द बनाया तथा हम सुनहले कल की ओर बढ़ रहे है। 8. पद्य संग्रह- शव की आत्मा 9. उपन्यास- उन्तीसवाँ व्यास (तीन उवाचों में) 'प्रगतिशील समाज' में धारावाहिक प्रकासित 10. मगही भाषा में (क) नाटक: कोसा और गनधारी के सराप (ख) चम्पू: हम ही ऊऽ ही, जे समझऽ से बूझऽ और शूद्रे होबऽहे (ग) विवेचनात्मक साहित्य: हाथ में दे गेलन सुन्ना और (घ) उपन्यास: टुन टुन में टुन।

हिंदी एवं मगही साहित्य को समृद्ध करती इन रचनाओं से लमगोड़ा जी की गहराई का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। निश्चित रूप से सहित्य की विभिन्न विधाओं का इनकी रचनाएँ पतिनिधित्व करती हैं। इतनी कृतियों के बावजूद यह कहा जा सकता है कि 'लमगोड़ा' जी को नाट्य लेखन में सिद्धि तो मिली पर जो प्रसिद्धि मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिल पाई। इसका और चाहे जो कारण हो इनका अक्खड़ स्वभाव और आत्मस्वाभिमानी होंना भी सरकार एवं सहयोगी को अखरा। पर मेरा विश्वास है कि आनेवाले दिनों में न केवल इनकी कृतियों से भावी पिढ़ी को प्रेरणा मिलेगी बल्कि आज न कल रचनाएँ सम्मानित भी होंगी। वैसे गैर सरकारी स्तर पर कुछ वर्ष पूर्व यानि 19 अक्टूबर 1987 को इनके 62वें जन्म दिवस पर पोद्दार टाइल्स के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के द्वारा इन्हें सम्मानित किया जा चुका है, इसी प्रकार 11 अक्टूबर 1992 को पटना सिटी के 'रंगमंच' की ओर से भी कौमुदी महोत्सव के अवसर पर इन्हें सम्मानित किया गया था।

बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डॉ. लाल सिंह त्यागी ग्रामीण महाविद्यालय, औंगारी (नालंदा) के प्रो. लोक भूषण भारतीय ने प्रो. राम कृष्ण प्रसाद सिन्हा के निर्देशन में 'बाबूराम सिंह लमगोड़ा' व्यक्तित्व और कृतित्व' पर शोध कर पीएच डी. की डिग्री प्राप्त की। इसी प्रकार उसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के द्वारा लमगोड़ा जी के बौद्धकालीन नाटक एवं इनके गीत नाट्य विषय पर एम फील के लिए मोहम्मद आलम और श्रीमति शारदा ने शोध प्रबंध तैयार किया। श्रीमति शारदा ने डॉ. चक्रवर्ती के निर्देशन में इसी शोध पर पीएच. डी. की। राँची विश्वविद्यालय के डॉ. सिद्धनाथ कुमार तथा कानपुर विश्वविद्यालय के डॉ. धर्मध्वज त्रिपाठी के निर्देशन में लमगोड़ा जी की कृतियों पर शोध किया। हिंदी एवं मगही नाट्य साहित्य के ऐसे सशक्त नाटककार बाबू राम सिंह लमगोड़ा को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

कर्नाटक को ऊँचाई पर ले जानेवाले हेगड़े अब नहीं रहे

विचार कार्यालय, बंगलोर

दो बार कर्नाटक के मुख्यमंत्री तथा भारत सरकार के वाणिज्य मंत्री रहे देश के एक लोकप्रिय नेता रामकृष्ण हेगड़े का पिछले 12 जनवरी को बैंगलोर में निधन हो गया। बहुआयमी प्रतिभा के धनी तथा जीवन भर गरीबों और वंचितों के लिए काम करनेवाले हेगड़े के नेतृत्व में कर्नाटक को काफी ऊँचाइयाँ हासिल हुई और केंद्रिय मंत्री के रूप में राष्ट्रीय फलक पर उन्होंने अपनी छाप छोड़ी योजना आयोग के उपाध्यक्ष रहे हेगड़े के ही प्रयास से सन 1983 में पहली बार कर्नटक में गैर कॉंग्रेसी सरकार का गठन हुआ था। उन्होंने कॉंग्रेस विपक्ष को एकताबद्ध कर अग्रणी भूमिका निभाई तथा राजनीति में बिना दाग लगे अपनी अमिट छाप छोड़ी ।

उनके कुटनीति कौशल का उनके प्रतिद्वंद्वी भी लोहा मानते थे। राजनीति में 45 वर्ष तक सक्रिय भूमिका निभानेवाले हेगड़े के जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आये। उनके निधन से देश ने राष्ट्रीय राजनीति का एक शिखर पुरुष खो दिया है । विचार दृष्टि परिवार उनके देहावसान पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

-पी. एस. चन्द्रशेखर, बैंगलोर

समाजवादी आंदोलन के प्रणेता

बदरीविशाल पित्ती का महाप्रयाण

28 मार्च 1928 ई० को जन्में बदरीविशाल पित्ती हैदराबाद के एक प्रमुख समाज सेवी और पूर्व विधायक ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देनेवाले साहित्य-प्रेमी भी थे। सारे भारत में प्रसिद्धि पा चूकी हैदराबाद से निकलनेवाली मासिक पत्रिका 'कल्पना' के संस्थापक थे। इसके अलावा वे कई शिक्षा संस्थाओं, मंदिरों और धर्मार्थ ट्रस्टों से अंत तक जूड़े रहे 67 वर्ष की आयु में 6 दिसंबर 2003 ई० को श्री पित्ती का निधन हो गया। समाजवादी आंदोलन के ऐसे प्रखर प्रणेता को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

डॉ. चक्रवर्ती का निधन

हैदराबाद से निकलनेवाली आलोचना-प्रदान पत्रिका 'संकल्प' के प्रधान संपादक डॉ. वसंत चक्रवर्ती का निधन 10 अक्टूबर 2003 ई० को हो गया। 16 दिसंबर 1931 ई० को जन्मे डॉ. चक्रवर्ती उस्मानिया विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष रहे। उनके अब तक पांच काव्यसंग्रह, एक नाटक और एक शोधग्रंथ प्रकाशित हुए। सन् 1991 में सेवानिवृत डॉ. चक्रवर्ती को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।

- चंद्रमौलेश्वर प्रसाद, हैदराबाद से

खामोश हुई सुरैया की आवाज

विचार कार्यालय, मुंबई

'ये न थी हमारी किस्मत कि विसाल यार होता...... ' गीत को अपने दिल के साज पर छोड़कर अमर बनानेवाली मशहूर गायिका एवं हुस्न की मलिका सुरैया की दर्द भरी आवाज पिछले 31 जनवरी को हमेशा के लिए खामोश हो गयी। उन्होंने अपने नामों से हिंदुस्तान और पाकिस्तान की कई पीढ़ियों की आँखों को नम और दिलों को सम्मोहित किया। मध्य मुंबई स्थित चंदनवाड़ी कब्रिस्तान में उन्हें सुपुर्द कर खाक कर दिया गया।

'नुक्ताची है गमे दिल' और 'दिले नादां तुझे हुआ क्या है' ग़ज़लों को ग़ज़ल की आवाज देनेवाली सुरैया ने न केवल गालिब की रूह को जिंदा किया बल्कि उसे पर्दे के बाहर भी जिलाये रखा। हार्दिक श्रद्धांजलि।

वायलिन का एक और साज बंद हो गया

विचारकार्यालय,कोलकाता

प्राख्यात वायलिन वादक, संगीतकार और पद्मभूषण से सम्मानित विष्णु गोविंद जोग ने पिछले 31 जनवरी को इस संसार से विदा लेकर अपने जमाने के वायलिन का एक और साज़ बंद कर दिया। कला के क्षेत्र से जुड़ी एक महान शख्सियत जोग का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में 14 फरवरी 1922 को हुआ था। वे भारतखंडे संगीत विद्यापीठ में सन् 1938 से 1951 तक वायलिन के प्रोफेसर रहे। फिर आकाशवाणी के मुंबई, कोलकाता और दिल्ली केंद से लाखों श्रोताओं को उन्होंने अपने वादन से मंत्रमुग्ध किया।

आगामी अंक में

1. 'जोगी दादा' - श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव की मार्मिक कहानी।
2. आचार्य सत्यव्रत शर्मा 'सुजन': शब्द-शास्त्र के बृहस्पति - शस्खियत में
3. 'राष्ट्रभाषा हिंदी: दशा और दिशा' - डॉ. डी. आर. ब्रह्मचारी का तथ्यपरक लेख हिंदी दिवस के अवसर पर
4. जमुना दास की कुर्सी- डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव का चुटकीला व्यंग्य लेख
5. बिहार में भ्रष्टाचार और चापलूसों का राज कब तक? अखिलेश का लेख
6. कविता वाचक्नवी का ''मूल्य संकट और स्त्री की भूमिका'' शीर्षक लेख
7. कवि मनु सिंह, डॉ. महेंद्र पटेल तथा दिवाकर गोयल की कविताओं सहित अन्य स्थायी स्तंभों के अंतर्गत वैचारिक खुराक प्रदान करनेवाली वह सब कुछ जो आप चाहते हैं।

- मनोज कुमार, सहायक संपादक

साभार-स्वीकार

पुस्तकें :

1. दिल के घाव - *मगहीग़ज़ल*

2. खोइंछाके चाउर-*मगहीनिबंध*

3. स्वर के पंख-*काव्यसंग्रह*

4. माटी के सिंगार-*मगहीशब्दचित्र*

लेखक: घमंडी राम, पटना

6. धरम-करम -*मगहीकहानीसंग्रह*

कहानीकार: गोविन्द शर्मा, पटना

7. नदी पुकारे सागर-*काव्यसंग्रह*

कवयित्री: सरस्वती प्रसाद,पटना

8. स्वदेवी न्याय व्यवस्था

9. सत्ता का आदर्श एवं उद्देश्य -

लेखक: न्यायाधीश एम. रामा जोयस, राज्यपाल, बिहार

9. कोई वजह तो होगी-*उपन्यास*

10. अंधेरे के खिलाफ- *कहानीसंग्रह*

रचनाकार: डॉ. राकेश कुमार सिंह, आगरा

12. गल्प समुच्चय- *कहानियाँ*

13. तरंगिणी- *गद्यकाव्य*

कहानीकार: कृष्ण कुमार राय, वाराणसी

14. गणिनाथ गाथा- *काव्यरचना*

कवि: डॉ. गंगा प्रसाद आजाद 'समतलपुरी', समस्तीपुर

15. ईश्वर अल्ला तेरे नाम- *उर्दू काव्य संग्रह*

कृतिकार: गोपीनाथ अमन, दिल्ली

पत्रिकाएँ

1. हम सब साथ साथ -*मार्च 2004*
संपादक: श्रीमती शशि श्रीवास्तव,
प्रकाशन: कराला, दिल्ली-110081

2. अणुव्रत -*मार्च 2004तक*
संपादक : डॉ० महेन्द्र कर्णावट,
प्रकाशक : अणुव्रत महासमिति, दिल्ली-2

3. हरित वसुंधरा : अंक-4
संपादक: डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, पटना

4.राष्ट्रभाषा -*मार्च 2004*
संपादक: प्रा० अनंतराम त्रिपाठी
प्रकाशक: राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003

5. शब्द -*मार्च2004*
संपादक: आरसी यादव, प्रकाशक: शब्दपीठ, लखनऊ

6. सभ्यता संस्कृति-*मार्च2004*
संपादक : श्रीमती ऋचा सिंह
प्रकाशक : श्रीमती ऋचा सिंह, नई दिल्ली-29

7. सदीनामा-*मार्च2004*
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, प्रकाशन : बजबज 24 पर०

8. भारतीय रेल-*मार्च2004*
संपादक : प्रमोद कुमार यादव
प्रकाशन: रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1

9. लोक शिक्षक -*मार्च2004*
संपादक: डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी
प्रकाशक: के-14 ,अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-1

10. शोषित मुक्ति-*मार्च2004*
संपादक : श्री परमानंद दोषी
प्रकाशक: कुर्मी विकास परिषद, पटना-20

11. अम्बेडकर मिशन पत्रिका-*मार्च2004*
संपादक: बुद्धशरण हंस, अनीशाबाद, पटना-2

12. जन संसार*अंक-8 2004*
संपादक: गीतेश शर्मा
प्रकाशक: फोरम फोर नेशन एफेयर्स, 19-बी, चौरंगी रोड, कोलकाता-87

13. अलका मागधी -*मार्च2004*
संपादक : अभिमन्यु प्र० मौर्य
प्रकाशक : नंदा आर्य, रामलखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर,पटना-1

14. कालान्तर-*मार्च2004*
संपादक: डॉ० पुष्पेश पंत
प्रकाशक: बंगाली मार्केट, दिल्ली

15. संकल्प रथ -*मार्च2004*
संपादक : राम अधीर
प्रकाशन : 108/1, शिवाजी नगर, भोपाल-16

16 रैन बसेरा -*मार्च2004*
प्रधान संपादक : डॉ. जय सिंह 'व्यथित'
प्रकाशक : गुजरात हिंदी विद्यापीठ, अहमदाबाद-382415

17. मित्र संगम पत्रिका -*मार्च2004*
संपादक : प्रेम वोहरा, मित्र संगम संस्था, दिल्ली-9

18. हाइकू भारती -*संयुक्तांक21 22 23*
संपादक : डॉ. भगवत शरण अग्रवाल, अहमदाबाद

19. विवरण पत्रिका -*मार्च2004*
संपादक : धोण्डीराव जाधव, हैदराबाद

20. भाषा-भारती संवाद *अंक-3*
संपादक: नृपेन्द्रनाथ गुप्त
प्रकाशक: अ०भा०भा०साहित्य सम्मेलन,बिहार, पटना

21. जागो बहन *मार्च2004*
प्र०संपादक: डॉ. शांति ओझा, श्री कृष्णपूरी पटना-1
प्रकाशक: तामिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ, पांचाली अम्मन, ओविल स्ट्रीट, असम्बाक्कम, चेन्नई-600106

22. कूर्मि क्षत्रिय जागरण -*मार्च2004*
संपादक: पटेल जे. पी. कनौजिया
प्रकाशक : अ०भा०कू०क्ष० महासभा, पटेल धर्मशाला, 2014, विराट नगर, यशोदानगर, वाईपास चौराहा, किदवईनगर, कानपुर, 208011

23. अक्षर ख़बर-*जनवरी2004*
संपादक: सुरेश जांगिड़ उदय
प्रकाशन: डी सी निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-136027हरियाणा

24. मेरी रक्षा-*जनवरी204*
प्र०संपादक: डॉ मधु धवन, चेन्नै

25. सुनहरा संदेश- *प्रवेशांकजनवरी2004*
संपादक: श्री अभिताभ विकल, नई दिल्ली-19

26. साहित्य परिक्रमा-*मार्च2004*

27. नई धारा-*मार्च2004*
संपादक: उदय राज सिंह, प्रकाशन: शेखपुरा, पटना -14

28. बाल साहित्य समीक्षा-*मार्च2004*
संपादक: डॉ० राष्ट्र बंधू, राम कृष्णनगर, कानपुर

29. समय सुरभि-*अंक26 2004*
संपादक: नरेंद्र कुमार सिंह, बेगूसराय

30. श्रीप्रभा-*अंक51 52*
प्र०संपादक: डॉ० रमा शंकर श्रीवास्तव, नई दिल्ली

31. पटेल चेतना-*जनवरी2004*
प्र०संपादक: डॉ० अजय कुमार, जहानाबाद

32. कैशिकी -*जनवरी2004*
प्र०संपादक: कृष्णदेव चौधरी, खगड़िया-851204

त्रिमूर्ति ज्वैलर्स

बाईपास रोड़, चास (बोकारो)
दूरभाष : 65765, फैक्स : 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूरब)
बाकरगंज, पटना-800004
दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चांदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.
Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

LOCOMOTION — THE ESSENCE OF LIFE

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

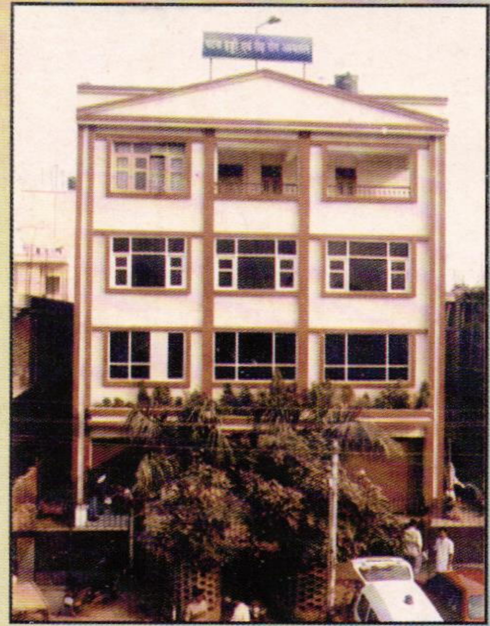

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

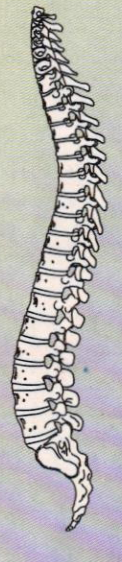

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.)-M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180
एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

वर्ष : 6 अंक : 19 अप्रैल-जून 2004 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

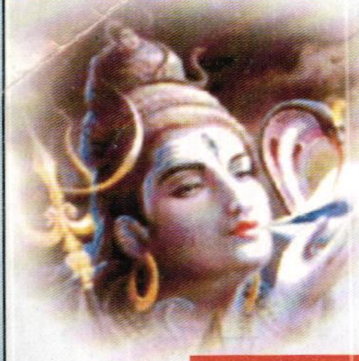

Prithviraj Jewellery

Specialist :Bangal Set, Chain & Jewellery

All Kinds of Export Manufacturing of Gold Ornaments.

Deals in Export Jewellery.

25/3870, Regharpura, Karol Bagh, New Delhi-110005

Phone : 011-25825745, 011-25713774

Mobile No. : 9811138535

Prop. : Raj Kumar Samanta
Sambhu Nath Samanta

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर